हिंदी-व्याकरण और मानक रचना-विधि

(नौवीं श्रेणी के लिए)

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਦੁਆਰਾ ਮੁਫ਼ਤ
ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਵਿਕਾਊ ਨਹੀਂ ਹੈ।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2016......... 1,62,000 प्रतियाँ

All right including those of translation, reproduction and annotation etc. are reserved by the Punjab Government

लेखक एवं संपादक : डॉ. सुनील बहल

संशोधक : डॉ. नीरू कौड़ा

संयोजक : श्रीमती मनजीत कौर

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्‌देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दसाज़ी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन, (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत ग़ैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मार्क' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित एवं मै. होलीफेथ इंटरनैशनल प्रा. लि. जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केन्द्रित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 तथा पंजाब पाठ्यचर्या की रूपरेखा (पी.सी.एफ.) 2013 सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी की माध्यमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण किया जा चुका है। इस सिलसिले में नौवीं कक्षा की हिंदी की पाठ्य-पुस्तक के साथ-साथ व्याकरण की भी नवीन पुस्तक तैयार की गयी है। एन.सी.एफ. 2005 तथा पी.सी.एफ. 2013 में नौवीं एवं दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों को व्याकरण का व्यावहारिक रूप से ज्ञान देने की बात कही गयी है। चूँकि विद्यार्थियों को पिछली कक्षाओं में पारिभाषिक व्याकरण का यथोचित ज्ञान दिया जा चुका है। इस दृष्टि को मध्यनज़र रखते हुए नौवीं श्रेणी में व्यावहारिक व्याकरण पर बल देते हुए नए पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। व्याकरण की यह पुस्तक पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप ही है।

हिंदीतर भाषियों को हिंदी के अध्ययन में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसीलिए इस पुस्तक में वर्ण, वर्तनी, लिंग, वचन, तत्सम-तद्भव, उपसर्ग-प्रत्यय जैसे शुष्क विषयों को अधिक सरल, रुचिकर एवं सुबोध रूप से प्रस्तुत किया गया है। ऐसा प्रयास किया गया है कि यह पुस्तक नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

विद्यार्थियों की मौलिक रचनात्मक व कल्पना शक्ति का विकास करने के लिए पुस्तक में अपठित गद्यांश, अनुच्छेद लेखन व पत्र लेखन का संकलन किया गया है। पंजाबी से हिंदी अनुवाद को भाषिक, साहित्यिक, व्यावसायिक व सांस्कृतिक दृष्टि से उपयोगी मानते हुए प्रस्तुत किया गया है। भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व रुचिकर बनाने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों की उपादेयता को ध्यान में रखकर उन्हें पुस्तक में शामिल किया गया है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक व्यावहारिक व्याकरण एवं रचना सम्बन्धी वाँछित ज्ञान देने में पूर्णतया सक्षम होगी। फिर भी पुस्तक को और उपयोगी बनाने के लिए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा साभार स्वीकार किए जाएंगे।

चेयरपर्सन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

"ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ"

विषय - सूची

क्र. सं.	पाठ का नाम	पृष्ठ सं.
1.	भाषा और लिपि	1
2.	वर्ण	6
3.	वर्तनी	25
4.	लिंग	39
5.	वचन	48
6.	तत्सम-तद्भव	55
7.	उपसर्ग	58
8.	प्रत्यय	71
9.	विराम चिह्न	79
10.	अपठित गद्यांश	89
11.	अनुच्छेद-लेखन	97
12.	पत्र-लेखन	108
13.	अनुवाद	122
14.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	146

पाठ – 1

भाषा और लिपि

मनुष्य के मन में अनेक विचार आते हैं। उन विचारों को अभिव्यक्त करने के लिये उसे कई तरीके प्रयोग में लाने पड़ते हैं। जैसे ट्रैफिक लाइट द्वारा दाएँ, बाएँ, रुकने या फिर चलने का संकेत मिलता है। बस का कंडक्टर बस को रोकने या चलाने के लिये अलग-अलग तरह से सीटी बजाता है। प्लेटफार्म पर गार्ड हरी झंडी दिखाकर और सीटी बजाकर रेलगाड़ी के चलने का संकेत देता है। बच्चा रोकर अपनी भूख का संकेत देता है। गूंगा अपनी अस्पष्ट ध्वनियों या संकेतों से अपनी बात कहता है। ये सभी भाषा-संकेत ही हैं फिर भी इन्हें भाषा नहीं कहा जा सकता।

'भाषा' शब्द का प्रयोग मानव कंठ से निकलने वाली व्यक्त, सार्थक ध्वनियों के लिये किया जाता है। यद्यपि मानव कंठ से 'खूँ-खूँ', 'तिक-तिक' आदि कई तरह की ध्वनियाँ निकलती हैं तथापि इन ध्वनियों का या तो कोई अर्थ नहीं होता और यदि होता भी है तो बहुत ही सीमित होता है। अत: इनको भाषा नहीं कहते। किन्तु जब मानव कंठ से निकली ध्वनियाँ अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण करती हैं और उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग किया जाता है, तब वे भाषा के अन्तर्गत आती हैं।

अत: जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने मन के भावों या विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं। इस आधार पर भाषा के दो रूप हैं – 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा।

1. **मौखिक भाषा :** जब मनुष्य मुँह से बोलकर अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। मौखिक भाषा की आधारभूत इकाई ध्वनि है। हर भाषा की अपनी ध्वनियाँ होती हैं जिनके परस्पर संयोग से शब्द बनते हैं और शब्दों के सार्थक रूप वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं।
2. **लिखित भाषा :** जब मनुष्य अपने विचारों को लिखकर दूसरों पर प्रकट करता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। लिखित भाषा की आधारभूत इकाई वर्ण है।

हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ

उपभाषा : प्रत्येक पाँच-दस किलोमीटर पर बोली थोड़ी-बहुत बदल जाती है किन्तु उसके सामान्य रूप में कोई परिवर्तन नहीं आता। इसी सामान्य रूप को उपभाषा कहते हैं। इसमें क्षेत्र-विशेष-लोग साहित्य-रचना भी करते हैं। एक उपभाषा

के क्षेत्र में कई बोलियाँ हो सकती हैं।

बोली : किसी छोटे से क्षेत्र में किसी भाषा का बोले जाने वाला रूप स्थानीय होता है, इसी रूप को बोली कहते हैं।

हिंदी की उपभाषाओं और बोलियों में कुछ में उच्चकोटि का साहित्य भी रचा गया है। पूर्वी हिंदी की अवधी बोली में तुलसीदास द्वारा 'रामचरितमानस' की रचना जगत प्रसिद्ध है। इसी प्रकार 'बिहारी हिंदी' की 'मैथिली बोली' में विद्यापति द्वारा 'पदावली' की रचना की गयी।

हिंदी की प्रमुख पाँच उपभाषाएँ हैं जिनकी भिन्न-भिन्न बोलियाँ हैं। इनका विवरण इस प्रकार हैं :

हिंदी भाषा की उपभाषाएँ, बोलियाँ और बोली-क्षेत्र

भाषा	उपभाषा	बोली	बोली-क्षेत्र
हिंदी	**1. पश्चिमी हिंदी**	खड़ी बोली या कौरवी	दिल्ली, मेरठ, देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर।
		ब्रजभाषा	मथुरा, आगरा, अलीगढ़।
		बुन्देली	उत्तर प्रदेश में जालौन, झाँसी तथा मध्य प्रदेश में भोपाल, ग्वालियर।
		कन्नौजी	कन्नौज (उत्तर प्रदेश),
		हरियाणवी (बाँगरू)	रोहतक, करनाल, नाभा, पटियाला के पूर्वी भाग, हिसार जिले के पूर्वी भाग, दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र।
	2. पूर्वी हिंदी	अवधी	उत्तर प्रदेश में लखनऊ, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, जौनपुर।
		बघेली	छत्तीसगढ़ में रीवा, दमोह,

		मण्डला, जबलपुर तथा बालाघाट।
	छत्तीसगढ़ी	मध्य प्रदेश में रायपुर, रामपुर,बिलासपुर।
3. राजस्थानी हिंदी	जयपुरी	जयपुर, अजमेर, किशनगढ़ (राजस्थान)।
	मालवी	इन्दौर, उज्जैन, भोपाल।
	मारवाड़ी	जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, मेवाड़।
	भीली	राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश का सीमावर्ती प्रदेश।
4. पहाड़ी हिंदी	पश्चिमी पहाड़ी	शिमला, मण्डी, चम्बा और सीमावर्ती प्रदेश।
	मध्यवर्ती पहाड़ी	गढ़वाल, कुमाऊँ।
5. बिहारी हिंदी	भोजपुरी	गाजीपुर, बलिया, आजमगढ़, गोरखपुर।
	मगही	पटना, गया।
	मैथिली	दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुँगेर, आदि।

लिपि

मौखिक भाषा की आधारभूत इकाई ध्वनि है। हम बातचीत करते समय जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनका कोई आकार नहीं होता, वे तो केवल ध्वनि को ही प्रकट करते हैं। प्रत्येक ध्वनि को लिखने के लिए कोई न कोई चिह्न बनाया जाता है, इन्हीं ध्वनि-चिह्नों को लिपि कहते हैं। वस्तुत: लिपि किसी भाषा-विशेष की ध्वनियों को लिखने का एक सुव्यवस्थित तरीका है।

अत: मौखिक ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए जो चिह्न प्रयोग में लाये जाते हैं, उन्हें लिपि कहते हैं।

विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं जिनको लिखने के लिए अनेक लिपियाँ हैं। कुछ भाषाओं और उनकी लिपियों के नाम इस प्रकार हैं :

भाषा	**लिपि**	**उदाहरण**
हिंदी	देवनागरी	वह स्कूल जाती है।
पंजाबी	गुरुमुखी	ਉਹ ਸਕੂਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।
संस्कृत	देवनागरी	सा विद्यालयं गच्छति।
अंग्रेज़ी	रोमन	She goes to school.

देवनागरी, गुरुमुखी व रोमन लिपियाँ बायीं ओर से दायीं ओर को लिखी जाती हैं।

अन्य कुछ भाषाएँ और उनकी लिपियाँ

भाषा	**लिपि**	**लिखने का ढंग**
फ्रेंच, जर्मन	रोमन	बायीं ओर से दायीं ओर
नेपाली, मराठी	देवनागरी	बायीं ओर से दायीं ओर
अरबी	अरबी	दायीं ओर से बायीं ओर
उर्दू, फारसी	फारसी	दायीं ओर से बायीं ओर

व्याकरण

(*i*) मोहन खाना खाती है। (*ii*) संगीता स्कूल जाता है। (*iii*) मेरे को पानी पिला दीजिए।

उपर्युक्त तीनों वाक्य अशुद्ध हैं। पहले वाक्य में पुल्लिंग (मोहन) के अनुसार क्रिया भी पुल्लिंग होनी चाहिए थी। दूसरे वाक्य में स्त्रीलिंग (संगीता) के अनुसार क्रिया भी स्त्रीलिंग होनी चाहिए थी। तीसरे वाक्य में 'मेरे को' ग़लत सर्वनाम का प्रयोग किया गया है।

इन वाक्यों का शुद्ध रूप इस प्रकार होगा :

(*i*) मोहन खाना खाता है। (*ii*) संगीता स्कूल जाती है। (*iii*) मुझे पानी पिला दीजिए।

भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान व्याकरण द्वारा होता है। व्याकरण के नियमों के ज्ञान से शुद्ध बोलना, पढ़ना व लिखना आता है। **अतएव व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम भाषा के नियमों को जानकर शुद्ध बोलना, पढ़ना व लिखना सीखते हैं।**

व्याकरण के अंग

व्याकरण के मुख्यत: निम्नलिखित तीन अंग माने जाते हैं :

1. **वर्ण-विचार :** इसमें वर्णों के आकार, उनके भेद, वर्ण-संयोग, वर्ण-विच्छेद आदि पर विचार किया जाता है।
2. **शब्द-विचार :** इसमें शब्द, उसके भेद, शब्द उत्पत्ति, रचना तथा रूपांतर आदि पर विचार किया जाता है।
3. **वाक्य-विचार :** इसमें वाक्य के भेद, विश्लेषण, संश्लेषण, वाक्य-परिवर्तन आदि पर विचार किया जाता है।

अभ्यास

1. भाषा के कितने रूप हैं ? उनके नाम लिखिए।

   ....

2. व्याकरण के मुख्यत: कितने अंग हैं ? उनके नाम लिखिए।

   ....

3. रचना की दृष्टि से भाषा की सबसे लघु इकाई का नाम लिखिए।

   ....

4. मौखिक भाषा की आधारभूत इकाई क्या है ?

   ....

5. हिंदी की लिपि कौन सी है ?

   ....

6. पंजाबी की लिपि का नाम लिखिए।

   ....

7. रोमन लिपि में लिखी जाने वाली किसी भाषा का नाम लिखिए।

   ....

8. बायीं ओर से दायीं ओर लिखी जाने वाली किसी एक भाषा और लिपि का नाम लिखिए।

   ....

9. दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाने वाली किसी एक भाषा और लिपि का नाम लिखिए।

   ....

10. नेपाली ओर मराठी भाषाओं की लिपि कौन सी है ?

    ....

पाठ – 2

वर्ण

रवि घर चल। इस वाक्य में कई शब्द हैं। सभी शब्दों में कई ध्वनियाँ हैं। जैसे–

शब्द	**ध्वनियाँ**
रवि	र् + अ + व् + इ
घर	घ् + अ + र् + अ
चल	च् + अ + ल् + अ

उपर्युक्त ध्वनियों के ऐसे अन्य खंड नहीं हो सकते जिन पर विचार किया जा सके। **अतः भाषा में प्रयोग होने वाली सबसे छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं।** जैसे– अ, इ, च्, र् आदि।

वर्णमाला

वर्णमाला शब्द वर्ण + माला से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है– वर्णों की माला अर्थात् वर्णों का समूह। **किसी भाषा के वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।**

भाषा की ध्वनियों के उच्चारण में मुँह के भिन्न-भिन्न अवयवों का प्रयोग होता है। अतः उच्चारण की दृष्टि से वर्णों के निम्नलिखित भेद होते हैं :

स्वर	:	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
अयोगवाह	:	अं अः
व्यंजन	:	क् ख् ग् घ् ङ्
		च् छ् ज् झ् ञ्
		ट् ठ् ड् ढ् ण्
		त् थ् द् ध् न्
		प् फ् ब् भ् म्
		य् र् ल् व
		श् ष् स् ह्

वर्ण-भेद

भाषा की ध्वनियों का उच्चारण भिन्न-भिन्न उच्चारण अवयवों की सहायता से होता है। इसी आधार पर किसी भी भाषा के वर्णों को दो भागों में बाँटा जाता है- **स्वर और व्यंजन।**

स्वर

वर्णमाला में अ से लेकर औ तक लिखे सभी स्वर हैं।

जिन वर्णों के उच्चारण के समय हमारे मुख से हवा बिना किसी रुकावट के बाहर निकलती है अर्थात् जिनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से बिना किसी रुकावट के होता है, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर-भेद

उच्चारण में लगने वाले समय की दृष्टि से स्वर तीन प्रकार के होते हैं :

1. **ह्रस्व स्वर :** जैसे अ, इ, उ, ऋ। **इन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगता है, इन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।**
2. **दीर्घ स्वर :** जैसे-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। **इन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।**
3. **प्लुत स्वर :** जैसे- ओ३म्, रा३म् आदि। **जब किसी स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगे तो वह प्लुत स्वर कहलाता है।** संस्कृत में इसे लिखने के लिए स्वर-विशेष के आगे '३' (तीन) का अंक लिख दिया जाता है। हिंदी भाषा में प्लुत स्वर का प्राय: प्रचलन नहीं है।

व्यंजन

वर्णमाला में 'क' से लेकर 'ह' तक सभी व्यंजन हैं।

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हमारे मुख से हवा थोड़ा रुक कर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। ये स्वतंत्र ध्वनियाँ नहीं है। क्योंकि इनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है।

व्यंजनों के तीन भेद हैं - स्पर्श, अन्त:स्थ और ऊष्म।

1. **स्पर्श :**

क् ख् ग् घ् ङ् - **कवर्ग**
च् छ् ज् झ् ञ् - **चवर्ग**
ट् ठ् ड् ढ् ण् - **टवर्ग**

त् थ् द् ध् न् - **तवर्ग**

प् फ् ब् भ् म् - **पवर्ग**

इन वर्णों के उच्चारण के समय श्वास-वायु उच्चारण-स्थान विशेष (कंठ, तालु, जिह्वा आदि) को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, इन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

2. **अन्तःस्थ :** य्, र्, ल्, व्। इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा पूरी तरह मुख के किसी भी भाग को स्पर्श नहीं करती। इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन के बीच का सा है।
3. **ऊष्म :** श्, ष्, स्, ह्। इन वर्णों के उच्चारण के समय मुख से ऊष्मा अर्थात् गर्म हवा बाहर निकलती है और हल्की सीटी जैसी आवाज़ आती है, इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

अयोगवाह

'अं' और 'अः'—ये ऐसे वर्ण हैं जो न स्वर हैं और न ही व्यंजन हैं।

हिंदी वर्णमाला में स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त दो अन्य वर्ण भी हैं - 'अं' और 'अः'। 'अं' को अनुस्वार तथा 'अः' को विसर्ग कहते हैं। वर्णमाला में इनका प्रयोग स्वरों के बाद किया जाता है। स्वतंत्र गति न होने के कारण इन्हें स्वर नहीं कहा जा सकता और स्वरों के साथ प्रयोग में आने के कारण ये व्यंजन भी नहीं कहे जा सकते। इनका योग न तो स्वरों से है और न ही व्यंजनों से। इस पर भी सच तो यह है कि ये ध्वनि वहन करते हैं। अर्थात् इनकी ध्वनि तो है ही। अतः इन्हें 'अयोगवाह' कहा जाता है।

अनुस्वार

अंक, अंत, कंस, पंकज आदि में अनुस्वार (.) का प्रयोग हुआ है। इनके उच्चारण में हवा नाक से निकलती है। अनुस्वार (·) एक नासिक्य ध्वनि है। इसका उच्चारण करते समय हवा केवल नाक से निकलती है। यह अपने से पहले आने वाले वर्ण के ऊपर बिंदु (·) रूप में लगता है।

यह सभी वर्गों के पाँचवें नासिक्य व्यंजन (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) के स्थान पर प्रयुक्त होता है। जैसे :

शब्द	**उच्चरित रूप**	**वर्ग विशेष से पूर्व**
(क) गंगा	गङ्गा	कवर्ग से पूर्व 'ङ्' रूप में उच्चरित
(ख) चंचल	चञ्चल	चवर्ग से पूर्व 'ञ्' रूप में उच्चरित

(ग) ठंड	ठण्ड	टवर्ग से पूर्व 'ण्' रूप में उच्चरित
(घ) संध्या	सन्ध्या	तवर्ग से पूर्व 'न्' रूप में उच्चरित
(ङ) संभव	सम्भव	पवर्ग से पूर्व 'म्' रूप में उच्चरित

विशेष :

(1) संस्कृत भाषा में अनुस्वार को बिंदु (·) तथा उसी वर्ग के पाँचवें व्यंजन दोनों रूपों में ही विकल्प से प्रयुक्त किया जाता है किन्तु हिंदी में सरलता व एकरूपता की दृष्टि से अनुस्वार को वर्ण के ऊपर बिंदु (·) लगाकर प्रयुक्त किया जाने लगा है।

(2) यदि 'म्' के बाद स्पर्श व्यंजनों के अतिरिक्त अंत:स्थ (य र ल व) या ऊष्म व्यंजन (श ष स ह) में से कोई व्यंजन आ जाये तो 'म्' को अनुस्वार ही होगा।
जैसे- सम् + यत् - संयत, सम् + रचना - संरचना, सम् + लग्न - संलग्न, सम् + वेदना - संवेदना, सम् + शय - संशय, सम् + सार - संसार। सम् + हार - संहार।
अपवाद : सम् + राट = सम्राट में यह नियम लागू नहीं होता।

(3) ऊष्म व्यंजन श, ष्, स् से पहले अनुस्वार अपने मूल रूप में ही रहता है। जैसे- वंश, कंस, संसद, संशय।

(4) शब्द के अंत में 'म्' संस्कृत में तो प्रयुक्त होता है किन्तु हिंदी में वह अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे- संस्कृत में अहम् (मैं) तथा स्वयम् (अपने आप) को हिंदी में अहं तथा स्वयं रूप में लिखा जाता है।

(5) जिन शब्दों में भिन्न नासिक्य व्यंजन संयुक्त रूप में आते हैं वहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता। जैसे-वाङ्मय, मन्मथ, जन्म, षण्मास।

(6) जिन शब्दों में पंचम वर्ण (न्, म्) द्वित्व रूप में आते हैं वहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता। जैसे- पन्ना, मुन्ना, सम्मान, धम्म आदि।

(7) यदि पंचम वर्ण य, व, ह से पहले प्रयुक्त होता है तो वहाँ भी अनुस्वार नहीं लगता। जैसे- गण्य, पुण्य।

अनुनासिक (ँ)

मुँह, चाँद, गाँव, आँख आदि में अनुनासिक (ँ) का प्रयोग हुआ है। इन के उच्चारण में हवा नाक व मुख दोनों से निकलती है। अत: **जिसके उच्चारण में हवा नाक और मुख दोनों से ही निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं।** यह अपने से पहले आने वाले वर्ण के ऊपर चन्द्रबिंदु (ँ) रूप में लगता है।

जब स्वरों या उनकी मात्राओं का कोई भी अंश शिरोरेखा के ऊपर चला जाता है तो वहाँ अनुनासिकता (ँ) को भी अनुस्वार (ं) रूप में लिखा जाता है। जैसे- छींक, गेंद, मैं, चौंक आदि। इनमें 'ई', 'ए', 'ऐ' तथा 'औ' की मात्राएँ शिरोरेखा के ऊपर चली गयी हैं। अत: इनके साथ यहाँ 'अनुनासिक' की अपेक्षा 'अनुस्वार' (ं) का ही प्रयोग हुआ है।

विसर्ग (:)

प्रातः, अतः, पुनः, दुःख आदि में विसर्ग (:) का प्रयोग हुआ है। विसर्ग का उच्चारण 'ह' व्यंजन के समान है। इसका प्रयोग संस्कृत में या संस्कृत भाषा के उन शब्दों में किया जाता है जो हिंदी में ज्यों के त्यों स्वीकार किये गये हैं।

हलंत (्)

निम्नलिखित शब्दों को देखिए :

मिट्टी, खड्डा। 'मिट्टी' शब्द में 'ट्' के नीचे तथा 'खड्डा' शब्द में 'ड्' के नीचे तिरछी रेखा लगाई गई है। यही तिरछी रेखा हलंत कहलाती है। अत: **जब कभी भी व्यंजन का प्रयोग स्वर के बिना किया जाता है तब उसके नीचे एक तिरछी सी रेखा लगा दी जाती है, जिसे हल् कहते हैं तथा हल्-युक्त व्यंजन या शब्द 'हलंत' कहलाता है।** जैसे- यदि 'द' बोला जाता है तो इसमें 'अ' स्वर मिला हुआ है। किन्तु यदि 'द' को बिना स्वर के लिखना हो तो इस 'द' वर्ण के नीचे एक तिरछी रेखा (्) लगाकर इस तरह लिखा जाता है- 'द्' अर्थात् इस 'द्' में अब 'अ' स्वर नहीं है, यह आधा है। उदाहरण -द्वार, द्वारा, रद्दी आदि।

विशेष : संस्कृत भाषा में महान्, भगवान्, विद्वान् आदि शब्दों में अंत में हल् चिह्न प्रयुक्त होता है। किन्तु हिंदी में आज इन शब्दों में हल् चिह्न (अंत में) लुप्त हो गया है और ये महान, भगवान तथा विद्वान रूपों में ही प्रयोग किये जाते हैं।

कुछ अन्य ध्वनियाँ

1. **आगत स्वर : उदाहरण** - कॉलेज, डॉक्टर, ऑफिस, कॉफी, ऑयल, चॉक आदि। हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी भाषा के विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनके शुद्ध उच्चारण व लेखन के लिए 'ऑ' (अर्धचंद्राकार) ध्वनि को हिंदी में शामिल किया गया है। यह हिंदी की 'आ' तथा 'ओ' ध्वनि से अलग है। यह ओष्ठों की स्थिति के अनुसार वृत्तमुखी तथा जीभ की स्थिति के अनुसार अर्द्ध विवृत स्वर है।

2. **विकसित ध्वनियाँ :** जैसे- लड़का, जड़, सड़क, पढ़ाई, चढ़ना, बढ़िया आदि। हिंदी में 'ड़' और 'ढ़' दो ऐसी विकसित ध्वनियाँ हैं जो कि टवर्ग के अन्तर्गत आती हैं। ये क्रमश: 'ड' और 'ढ' से विकसित हुई हैं।
   विशेष: 'ड़' और 'ढ़' ध्वनियाँ शब्द के शुरू में प्रयुक्त नहीं होतीं। शब्द के बीच तथा अंत में इनका प्रयोग होता है।
   शब्द के बीच में : उड़ना, ताड़ना, पढ़ना, बढ़ना।
   शब्द के अंत में : गाड़, ताड़, पढ़, बाढ़।

3. **आगत व्यंजन :** जैसे- क़ाबू, क़ीमत, ख़बर, ख़रबूजा, ग़रक़, मज़ा, फ़ौरन, फ़्यूज़, पीज़ा आदि। ये शब्द दूसरी भाषाओं के हैं अत: आगत व्यंजन हैं। अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी, अरबी आदि शब्दों के शुद्‌ध उच्चारण की दृष्टि से 'क', 'ख', 'ग', 'ज' तथा 'फ' वर्णों के नीचे नुक्ता (बिंदु) लगाकर भी लिखा जाता है। कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनमें इन ध्वनियों (क़, ख़, ग़, ज़, फ़) के कारण अर्थ बदल जाता है। जैसे-

कदर - आरा, अंकुश	**क़दर** - मान, कद्र, प्रतिष्ठा
खुदा - उत्कीर्ण	**ख़ुदा** - भगवान
गौर - उज्ज्वल	**ग़ौर** - सोच-विचार, चिंतन
राज - शासन	**राज़** - रहस्य
फन - साँप का सिर	**फ़न** - हुनर, कला

अत: शुद्‌ध विदेशी रूप में प्रयोग करने या उच्चारण-भेद स्पष्ट करते समय कई बार नुक्ता लगाना पड़ जाता है और लगाना भी चाहिए।

वास्तव में उर्दू-फ़ारसी आदि ध्वनियों से पूरी तरह परिचित न होने के कारण, बोलने व लिखने में ग़लतियाँ हो जाने के कारण इनमें से क़, ख़ तथा ग़ ध्वनियाँ तो लगभग हिंदी में मिल चुकी हैं किन्तु बहु प्रचलित 'ज़' और 'फ़' ध्वनियों का समुचित स्थान पर प्रयोग अब भी किया जा रहा है। जैसे- सज़ा, गरज़, पीज़ा, डिवीज़न, फ़र्द, अफ़सर, फ़र्नीचर आदि। (इनमें भी अंग्रेज़ी की 'फ़' ध्वनि का भी कम ही लोग प्रयोग करते हैं) फिर भी यह बात पूरी तरह मान्य है कि 'ज़' और 'फ़' ध्वनियाँ शब्दों के शुद्‌ध उच्चारण में सहायक हैं।

उर्दू से आए 'ज़' वर्ण वाले शब्द : नाज़, ज़िला, ज़्यादा, मज़ेदार, ज़मीन, बाज़, कर्ज़, फर्ज़, ज़िंदगी, बाज़ी, राज़दार, हमराज़, ज़ोर, ज़ेवर, ज़ेहन, ज़ब्त, ज़बान, ज़माना आदि।

अंग्रेज़ी से आए 'ज़' वाले शब्द : फिज़िकल, अंग्रेज़ी, रोज़, प्राइज़, रिवीज़न।

उर्दू से आए 'फ़' वर्ण वाले शब्द : गिलाफ़, फ़ाका, फ़लसफ़ा, फ़रमान, फ़रियाद, फ़रज़ी, फ़ज़ीहत, फरेब, फ़ज़ूल।

अंग्रेज़ी से आए 'फ़' वर्ण वाले शब्द : कफ़, फ़ायर, फ़ुटबॉल, फ़िल्म, फ़िज़िक्स, फ़ार्म, फ़ार्मूला, फ़ार्मेसी।

स्वरों की मात्राएँ

स्वर-वर्ण जब व्यंजन वर्ण के साथ मिलते हैं तो उनका रूप बदल जाता है। इस बदले हुए रूप को 'मात्रा' कहा जाता है। स्वरों के मात्रा रूप इस तरह हैं :

स्वर	मात्रा-चिह्न	प्रयोग (मात्रा का संयुक्त रूप)
अ	कोई मात्रा नहीं	क् + अ = क
आ	ा	क् + आ = का
इ	ि	क् + इ = कि
ई	ी	क् + ई = की
उ	ु	क् + उ = कु
ऊ	ू	क् + ऊ = कू
ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ
ए	े	क् + ए = के
ऐ	ै	क् + ऐ = कै
ओ	ो	क् + ओ = को
औ	ौ	क् + औ = कौ
अयोगवाह		
अं	ं	क् + अं = कं
अः	ः	क् + अः = कः
अनुनासिक		
अँ	ँ	क् + अँ = कँ
आगत स्वर		
ऑ	ॉ	क् + ॉ = कॉ

विशेष : 'र' व्यंजन में 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ नीचे नहीं लगतीं अपितु सामने लगती हैं। जैसे- र् + उ = रु (रुपया, गुरु), र् + ऊ = रू (रूप, बारूद)

संयुक्त व्यंजनों के लेखन की विधि

व्यंजन का व्यंजन से मेल होने पर संयुक्त ध्वनियों का निर्माण होता है। स्वर-रहित व्यंजन या तो हलन्त कर दिये जाते हैं या अपने अगले व्यंजन के साथ मिलाकर लिखे जाते हैं जिसे 'वर्णों' को संयुक्त करना कहते हैं।

व्यंजन का व्यंजन से मेल : व्यंजन का व्यंजन से मेल निम्नलिखित तरीके से किया जाता है -

(*i*) खड़ी पाई (।) पर समाप्त होने वाले व्यंजन - ख् ग् घ् च् ज् झ् ञ् ण् त् थ् ध् न् प् ब् भ् म् य् ल् व् श् ष् स्। देवनागरी लिपि के इन व्यंजनों के अंत में एक खड़ी रेखा मिलती है जिसे पाई (।) कहते हैं।

जब ये ('झ्' को छोड़कर उपर्युक्त सभी) किसी आगे वाले व्यंजन से मिलते हैं, तो इनकी पाई हटा दी जाती है। जैसे- ख् + य = ख्य (ख्याल), ग् + ल = ग्ल (ग्लानि), च् + य = च्य (पाच्य), प् + य = प्य (प्यार), न् + न = न्न (पन्ना) आदि।

अन्य उदाहरण -

च् + च = च्च (बच्चा), ज् + ज = ज्ज (हज्जाम), ञ् + च = ञ्च (चञ्चल)

ण् + ड = ण्ड (दण्ड), त् + थ = त्थ (पत्थर), थ् + य = थ्य (कथ्य)

ध् + य = ध्य (वध्य), न् + न = न्न (गन्ना), प् + य = प्य (प्यार)

ब् + ब = ब्ब (डिब्बा), भ् + य = भ्य (सभ्य), म् + म = म्म (सम्मान)

य् + य = य्य (शैय्या), ल् + ल = ल्ल (बल्ला), व् + य = व्य (व्यय)

श् + क = श्क (अश्क), ष् + ट = ष्ट (कष्ट), स् + क = स्क (स्कूल)

(*ii*) वे व्यंजन जिनके मध्य खड़ी पाई (।) होती है - 'क' और 'फ' ऐसे व्यंजन हैं जिनके बीच में खड़ी पाई प्रयुक्त होती है। इन वर्णों को जब अगले वर्ण ('र्' के अतिरिक्त) से मिलाकर लिखते हैं तो खड़ी पाई के बाद के भाग से केवल नीचे का भाग हटा दिया जाता है और बाकी बचे व्यंजन (क, फ) को अगले वर्ण से मिलाकर लिखा जाता है। जैसे- क् + य = क्य (क्यारी), फ़् + ल = फ़्ल (फ़्लू) क् + ल = क्ल (क्लेश), फ् + ल = फ्ल (फ्लैश) आदि।

(*iii*) बिना पाई वाले व्यंजन : 'छ', 'ट', 'ठ', 'ड', 'ढ', 'ढ़', 'द', 'र', 'ह' - ये बिना पाई वाले व्यंजन हैं। इनमें से छ, ट, ठ, ड, द, ह व्यंजनों को जब

अगले व्यंजनों (विशेषत: र के अलावा) से मिलाकर लिखा जाता है तो इनके नीचे हलंत (्) लगा दिया जाता है। जैसे-

छ् + व = छ्व [उच्छ्वसन (गहरी साँस)], ट् + ट = ट्ट (मिट्टी)

ठ् + य = ठ्य (पाठ्य), ड् + ढ = ड्ढ (गड्ढा)

द् + य = द्य (विद्या), ह् + य = ह्य (असह्य)

विशेष : हिंदी में कुछ संयुक्त व्यंजनों के दो-दो रूप प्रचलित हैं। कुछ विद्वान लेखन में सरलता, एकरूपता, टाइपिंग व छपाई में सुविधा के लिए एक रूप को मानक तथा दूसरे को मानकेतर मानते हैं। जैसे-

संयुक्त अक्षर	**मानक रूप**	**मानकेतर रूप**
क् + क	क्क (पक्का)	क्क (पक्का)
क् + त	क्त (वक्त)	क्त (वक्त)
त् + त	त्त (पत्ता)	त्त (पत्ता)
न् + न	न्न (गन्ना)	न्न (गन्ना)
ट् + ट	ट्ट (खट्टी)	ट्ट (खट्टी)
ट् + ठ	ट्ठ (लट्ठ)	ट्ठ (लट्ठ)
ड् + ड	ड्ड (लड्डू)	ड्ड (लड्डू)
ड् + ढ	ड्ढ (गड्ढा)	ड्ढ (गड्ढा)
ङ् + ग	ङ्ग (खड्ग)	ङ्ग (खड्ग)
द् + ध	द्ध (बुद्ध)	द्ध (बुद्ध)
द् + भ	द्भ (अद्भुत)	द्भ (अद्भुत)
द् + व	द्व (द्वार)	द्व (द्वार)
श् + च	श्च (निश्चय)	श्च (निश्चय)
श् + व	श्व (ईश्वर)	श्व (ईश्वर)
श् + न	श्न (प्रश्न)	श्न (प्रश्न)
ह् + न	ह्न (चिह्न)	ह्न (चिह्न)
ह् + म	ह्म (ब्राह्मण)	ह्म (ब्राह्मण)
ह् + य	ह्य (बाह्य)	ह्य (बाह्य)
ह् + व	ह्व (आह्वान)	ह्व (आह्वान)

द्वित्व वर्ण : एक व्यंजन जब दो बार आ जाए तो उसे द्वित्व रूप में लिखते हैं। इनमें पहला व्यंजन स्वर रहित तथा दूसरा स्वर युक्त होता है। जैसे- चक्का, लट्टू, हड्डी, गत्ता आदि।

अपवाद : 'उज्ज्वल' में दोनों 'ज' आधे अर्थात् बिना स्वर के होते हैं।

विशेष : वर्णमाला के किसी भी वर्ग के दूसरे तथा चौथे वर्णों को द्वित्व नहीं होता किन्तु जहाँ कहीं इनके द्वित्व होने का आभास होता है तो वहाँ वर्ग के पहले-दूसरे तथा तीसरे-चौथे वर्णों का मेल समझना चाहिए। जैसे -

(*i*) **पहले-दूसरे वर्णों का मेल :** 'मक्खी' शब्द में दूसरे वर्ण 'ख' के द्वित्व होने का आभास होता है किन्तु नियमानुसार यहाँ 'ख' (दूसरे वर्ण) के साथ उसी वर्ग का पहला वर्ण 'क्' लगा दिया गया है। **अन्य उदाहरण** - अक्खड़, अच्छा, पत्थर आदि।

(*ii*) **तीसरे-चौथे वर्णों का मेल :** 'बुड्ढा' शब्द में चौथे वर्ण 'ढ' के द्वित्व होने का आभास होता है किन्तु नियमानुसार यहाँ 'ढ' (चौथे वर्ण) के साथ उसी वर्ग का तीसरा वर्ण 'ड्' लगा दिया गया है।

अन्य उदाहरण- बग्घी, शुद्ध, बौद्ध आदि।

'र्' के विभिन्न रूप

1. जब 'र्' के बाद कोई भी स्वर (ऋ को छोड़कर) आ जाता है तो वह पूरा (र) लिखा जाता है। जैसे-

र् + अ = र (रस)	र् + आ = रा (राम)
र् + इ = रि (रिश्ता)	र् + ई = री (रीढ़)
र् + उ = रु (रुपया)	र् + ऊ = रू (रूठना)
र् + ए = रे (रेत)	र् + ऐ = रै (रैली)
र् + ओ = रो (रोकना)	र् + औ = रौ (रौब)

2. **स्वर रहित 'र्' :** स्वर रहित 'र्' को रेफ (̊) भी कहते हैं। स्वर रहित 'र्' अपने से अगले स्वर सहित व्यंजन के ऊपर 'रेफ' (̊) के रूप में लगता है। जैसे- र् + म = र्म (कर्म), र् + घ् + य् + अ = (अर्घ्य)

अन्य उदाहरण- चर्म, कर्क, वर्ष, पूर्वक, पर्व आदि।

3. (*i*) स्वर सहित 'र' का स्वर रहित पाई वाले व्यंजनों के साथ प्रयोग : 'र' से पहले निम्नलिखित स्वर रहित पाई वाले व्यंजनों में यह '्र' (पदेन 'र') रूप में दिखाई देता है। कुछ उदाहरण :

क् + र = क्र (क्रम), ग् + र = ग्र (ग्रसित), घ् + र = घ्र (घ्राण),
थ् + र = थ्र (थ्रो), ब् + र = ब्र (ब्रह्म), भ् + र = भ्र (भ्रम),
ध् + र =ध्रु (ध्रुव), प् + र = प्र (प्रेरणा), फ् + र = फ्र (फ्री)

(*ii*) **त्, श् तथा स्** - इन तीन स्वर रहित पाई वाले व्यंजनों में यह निम्नलिखित रूप में दिखाई देता है जैसे:

त् + र = त्र (पुत्र, सत्र)

श् + र = श्र (श्रद्धा, श्रवण)

स् + र = स्र (सहस्र, स्रोत)

(*iii*) स् + त्र = स्त्र (शस्त्र)

विशेष टिप्पणी: स् + र = स्र तथा स् + त्र = स्त्र को कई बार लोग एक समान समझ कर इसका ग़लत उच्चारण व ग़लत लेखन करते हैं। जैसे- स् + र = 'स्र' से बने शब्द 'सहस्र' (हज़ार) को लोग अज्ञानवश 'स्त्र' समझ कर इसे 'सहस्त्र' (सहस्त्र) बोलते व लिखते हैं जबकि, 'सहस्र' शब्द में 'त्' वर्ण कहीं नहीं है। इसी प्रकार 'स्रोत' (उद्गम, आधार या साधन) शब्द को भी अज्ञानतावश 'स्त्रोत' बोलते व लिखते हैं।

4. बिना पाई वाले व्यंजनों के साथ स्वर सहित 'र' का प्रयोग :

(*i*) 'र' से पहले यदि टवर्ग व्यंजनों में से 'ट्' या 'ड्' हो तो यह उनके साथ र (्र) रूप में लिखा जाता है। जैसे-

ट् + र = ट्र (राष्ट्र) ड् + र = ड्र (ड्रम)

अन्य उदाहरण : राष्ट्रीय, उष्ट्र, ट्रक, ट्रे, ट्रॉयल, ड्रिल, ड्रैस आदि।

(*ii*) 'द्' (बिना पाई वाला व्यंजन) के साथ यह '्र' (पदेन र) के रूप में प्रयुक्त होता है-

द् + र = द्र (द्रव)

अन्य उदाहरण : द्रविड़, द्रोण, द्रोह आदि।

(*iii*) 'र' से पहले यदि 'ह्' हो तो यह निम्नलिखित रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे–
ह् + र = ह्र (ह्रस्व) **अन्य उदाहरण** - ह्रास (क्षय, अभाव, कमी), ह्री(लज्जा, शर्म), ह्रासोन्मुख (घटती की ओर बढ़ता हुआ)

5. 'र' के साथ 'ऋ' या 'ऋ' की मात्रा (ृ) का प्रयोग नहीं होता।

पूरा रूप बदलने वाले व्यंजन

1. कुछ स्वर रहित व्यंजन जब किसी स्वर सहित व्यंजन से मिलाकर लिखे जाते हैं तो ऐसे संयुक्त व्यंजनों का रूप पूरी तरह से बदलकर लिखा जाता है। जैसे–

क् + ष = क्ष (क्षत्रिय, क्षमा)

त् + र = त्र (मित्र, पुत्र)

ज् + ञ = ज्ञ (ज्ञान, ज्ञानी)

श् + र = श्र (श्रम, श्रीमान)

टिप्पणी (ज्ञ के सम्बन्ध में)

1. ज् + ञ = 'ज्ञ' संस्कृत की संयुक्त ध्वनि है इसलिए संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग करने वाले कुछ विद्वान इसे 'ज्ञ' रूप में उच्चरित करते हैं जबकि हिंदी भाषी लोग इसको 'ग्य' रूप में उच्चरित करते हैं। दोनों ही रूप मानक हैं। जैसे–

संयुक्त ध्वनि	लिखित रूप	उच्चरित रूप (संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग करने वालों द्वारा)	उच्चरित रूप (हिंदी भाषियों द्वारा)
ज् + ञ	ज्ञ (विज्ञान)	ज्ञ (विज्ञान)	विग्यान

2. 'ऋ' से पूर्व यदि स्वर रहित 'श्' आ जाए तो इसका संयुक्त रूप भी पूरी तरह बदल जाता है। जैसे–

श् + ऋ = शृ (शृगाल, शृंगार)

अन्य उदाहरण : शृंखला, शृंग, शृंगी, शृंगारिक।

वर्ण-विच्छेद

एक या एक से अधिक ध्वनियों की इकाई को अक्षर कहते हैं। यहाँ यह बात भी जान लेना नितान्त आवश्यक है कि स्वतंत्र रूप से उच्चारण हो सकने के कारण सभी स्वर 'अक्षर' हो सकते हैं किंतु स्वर रहित व्यंजन (क्, ट्, प् आदि) अक्षर नहीं कहलाते। वे अक्षर तभी बनेंगे जब उनमें कोई स्वर मिल जाएगा। जैसे- क् + आ = का, ट् + उ = टु तथा प् + ई = पी आदि।

वैसे तो 'वर्ण' का विच्छेद नहीं हो सकता। उसके टुकड़े नहीं हो सकते। किंतु यहाँ वर्ण-विच्छेद से अभिप्राय किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना है।

अतः किसी शब्द के वर्णों को पृथक्-पृथक् करके लिखने को वर्ण विच्छेद कहते हैं। जैसे :-

1. **स्वर रहित व्यंजनों में हलंत का प्रयोग :** स्वर रहित व्यंजन हलंत (्) रूप में लिखा जाता है। जैसे-

   कलम : क् + अ + ल् + अ + म् + अ

   शलगम : श् + अ + ल् + अ + ग् + अ + म् + अ

2. **स्वरों का (मूल रूप में) विच्छेद नहीं होता :** स्वरों के नीचे हलंत नहीं लगता। यदि स्वर मूल रूप में किसी शब्द में आता है तो उसका विच्छेद नहीं होता। जैसे-

   उदय - उ + द् + अ + य् + अ

   ऐनक - ऐ + न् + अ + क् + अ

3. **मात्राओं वाले शब्दों का वर्ण-विच्छेद**

   सभी स्वरों की मात्राओं का ज्ञान नितांत ज़रूरी है।

काला	क् + आ + ल् + आ
क़िला	क़् + इ + ल् + आ
कील	क् + ई + ल् + अ
कुल	क् + उ + ल् + अ
कूल	क् + ऊ + ल् + अ
कृपा	क् + ऋ + प् + आ
केरल	क् + ए + र् + अ + ल् + अ

कैसा	क् + ऐ + स् + आ
कोप	क् + ओ + प् + अ
कौरव	क् + औ + र् + अ + व् + अ

टिप्पणी : 'ह्' वर्ण के साथ 'ऋ' की मात्रा लगने पर 'हृ' रूप बनता है। जैसे- ह् + ऋ = हृ (हृदय)

वर्ण विच्छेद : हृदय— ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ

4. (*i*) अनुस्वार (स्पर्श व्यंजनों के साथ) वाले शब्दों का वर्ण विच्छेद

कंजूस	क् + अं + ज् + ऊ + स् + अ
चंचल	च् + अं + च् + अ + ल् + अ
दंड	द् + अं + ड् + अ
तंदूर	त् + अं + द् + ऊ + र् + अ
पतंग	प् + अ + त् + अं + ग् + अ

विशेष : जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि आजकल सरलता, एकरूपता एवं टंकण आदि की सुविधा के लिए किसी भी वर्ग के पंचम अक्षर (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का ही प्रयोग होता है किन्तु वर्ण-विच्छेद में कुछ विद्वानों का मत है कि पंचम अक्षर का ही प्रयोग करना चाहिए। जैसे-

कंजूस - क् + अ + ङ् + ज् + ऊ + स् + अ

(*ii*) **'सम्' उपसर्ग के बाद अंत:स्थ या ऊष्म व्यंजन आने पर शब्दों का वर्ण विच्छेद :** जब अनुस्वार लगे वर्ण का आगे वाला वर्ण अंत:स्थ (य र ल व) या ऊष्म (श स ह) व्यंजनों में से कोई हो तो वर्ण-विच्छेद के समय अनुस्वार (ं) लगाना चाहिए। जैसे-

संयत	स् + अं + य् + अ + त् + अ
संवाद	स् + अं + व् + आ + द् + अ
संशय	स् + अं + श् + अ + य् + अ
संसार	स् + अं + स् + आ + र् + अ

5. पूरा रूप बदलने वाले संयुक्त व्यंजनों वाले शब्दों का वर्ण-विच्छेद :

कक्षा	क् + अ + क् + ष् + आ
पवित्र	प् + अ + व् + इ + त् + र् + अ

ज्ञानवान	ज् + ञ् + आ + न् + अ + व् + आ + न् + अ
श्रमिक	श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ

6. अन्य संयुक्त अक्षरों का वर्ण-विच्छेद

(*i*) खड़ी पाई वाले व्यंजनों का व्यंजनों से संयोग

ख्याति	ख् + य् + आ + त् + इ
ग्वालिन	ग् + व् + आ + ल् + इ + न् + अ
ज्वर	ज् + व् + अ + र् + अ

(*ii*) मध्य पाई वाले व्यंजनों का व्यंजनों से संयोग

क्लांति	क् + ल् + आं + त् + इ
क्लेश	क् + ल् + ए + श् + अ
फ्लैश	फ् + ल् + ऐ + श् + अ

(*iii*) बिना पाई वाले व्यंजनों का व्यंजनों से संयोग

मिट्टी	म् + इ + ट् + ट् + ई
पाठ्य	प् + आ + ठ् + य् + अ
गड्ढा	ग् + अ + ड् + ढ् + आ
दृश्य	द् + ऋ + श् + य् + अ
बाह्य	ब् + आ + ह् + य् + अ

7. द्वित्व व्यंजन वाले शब्दों का वर्ण-विच्छेद

पक्का	प् + अ + क् + क् + आ
कच्ची	क् + अ + च् + च् + ई
मच्छर	म् + अ + च् + छ् + अ + र् + अ
खट्टी	ख् + अ + ट् + ट् + ई
पत्थर	प् + अ + त् + थ् + अ + र् + अ
शैय्या	श् + ऐ + य् + य् + आ

8. 'र्' के विभिन्न रूपों वाले शब्दों का वर्ण-विच्छेद

(*i*) पूर्ण 'र' (बिना संयुक्त अक्षर के) वाले शब्दों का वर्ण-विच्छेद :

राजेश	र् + आ + ज् + ए + श् + अ
रात	र् + आ + त् + अ

(*ii*) **संयुक्त अक्षर के रूप में र के विभिन्न रूप**

(क) स्वर रहित 'र्' वाले शब्दों का वर्ण विच्छेद

मर्म	म् + अ + र् + म् + अ
कार्मिक	क् + आ + र् + म् + इ + क् + अ

(ख) स्वर सहित 'र' वाले शब्दों का वर्णविच्छेद

क्रम	क् + र् + अ + म् + अ
शीघ्र	श् + ई + घ् + र् + अ
ट्रेन	ट् + र् + ए + न् + अ
ड्रामा	ड् + र् + आ + म् + आ
द्रविड़	द् + र् + अ + व् + इ + ड़् + अ
पुत्र	प् + उ + त् + र् + अ
मित्रता	म् + इ + त् + र् + अ + त् + आ
सहस्त्र	स् + अ + ह् + अ + स् + र् + अ
श्रावण	श् + र् + आ + व् + अ + ण् + अ
अस्त्र	अ + स् + त् + र् + अ
ह्रस्व	ह् + र् + अ + स् + व् + अ
ह्रास	ह् + र् + आ + स् + अ

अभ्यास

(क) निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए :

अंकुर : .... + ... + ... + ... + ...।

अनुभव : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

आराम : .... + ... + ... + ... + ...।

इच्छा : .... + ... + ... + ... + ।

ईश्वर : .... + ... + ... + ... + ... + ...।

उपाधि : .... + ... + ... + ... + ...।

ऊर्जा : .... + ... + ... + ... ।

ऋतु : .... + ... + ... + ।

एकांत	: .... + ... + ... + ... + ...।
ऐतिहासिक	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
ओजस्वी	: .... + ... + ... + ... + ... + ...।
औपचारिक	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
क्रमानुसार	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... +........।
खिन्न	: .... + ... + ... + ... + ...।
गर्दन	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
घमासान	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
चतुर्भुज	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
छियानवे	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
जिह्वा	: .... + ... + ... + ... + ...।
ज्ञानवर्द्धक	: ...... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
झंझट	: .... + ... + ... + ... + ... + ...।
ट्रैफिक	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
ठंडक	: .... + ... + ... + ... + ... + ...।
ड्राइवर	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।
ढूंढना	: .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

त्याग : .... + ... + ... + ... + ...।

थिरकना : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

दुग्ध : .... + ... + ... + ... + ...।

धोखेबाज़ : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

न्यून : .... + ... + ... + ... + ...।

पर्वत : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

फरीदकोट : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...+ .... + ...+ ......।

बर्मा : .... + ... + ... + ... + ...।

भ्रष्टाचार : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...+ .... + ...+ ......।

मनोव्यथा : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...+ .... + ...।

योद्धा : .... + ... + ... + ... + ...।

रहस्य : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

लिखवाना : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

विज्ञान : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

व्यवहार : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

श्रृंगार : .... + ... + ... + ... + ... + ...।

श्रीमती : .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...।

सूक्ष्म : .... + ... + ... + ... + ... + ... ।

हृदय : .... + ... + ... + ... + ... + ... ।

(ख) निम्नलिखित वर्णों को जोड़कर शब्द बनाइए :

1. उ + प् + आ + य् + अ =
2. ऊ + ष् + म् + आ =
3. औ + ष् + अ + ध् + इ =
4. क् + अं + च् + अ + न् + अ =
5. ग् + य् + आ + र् + अ + ह् + अ =
6. न् + इ + श् + च् + इ + त् + अ =
7. प् + र् + अ + द् + अ + र् + श् + अ + न् + अ =
8. प् + र् + अ + स् + अ + न् + न् + अ + त् + आ =
9. स् + व् + अ + र् + ग् + ई + य् + अ =
10. स् + अ + र् + व् + ओ + च् + च् + अ =
11. प् + अ + र् + इ + श् + र् + अ + म् + अ =
12. प् + अ + त् + र् + इ + क् + आ =
13. व् + अ + र् + त् + अ + म् + आ + न् + अ =
14. ग् + अ + र् + इ + म् + आ =
15. च् + इ + क् + इ + त् + स् + आ + ल् + अ + य् + अ =
16. ठ् + अ + क् + उ + र् + आ + इ + न् + अ =
17. त् + ई + व् + र् + अ =
18. थ् + आ + न् + ए + द् + आ + र् + अ =
19. द् + उ + र् + भ् + आ + ग् + य् + अ =
20. आ + श् + च् + अ + र् + य् + अ =

पाठ –3

वर्तनी

ई मा न दा र : इस उदाहरण में पहले स्थान पर 'ई', दूसरे स्थान पर 'मा' तीसरे स्थान पर 'न' चौथे स्थान पर 'दा' तथा पाँचवें स्थान पर 'र' बोलने से इसे इसी क्रम में लिखने से शब्द 'ईमानदार' बना।

अत: लेखन में प्रयोग किये जाने वाले लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहा जाता है। 'वर्तनी' शब्द का अर्थ है–वर्तन अर्थात् अनुकरण करना। वर्तनी भाषा के मौखिक रूप का अनुकरण करती है। हिंदी भाषा की यह विशेषता है कि यह जिस प्रकार बोली जाती है, वैसे ही लिखी जाती है। उच्चारण करते समय जिस ध्वनि का उच्चारण जिस क्रम में होता है, उसे उसी क्रम में लिखा जाता है।

वर्तनी के प्रयोग की शुद्धता शब्द तथा वाक्य स्तर पर अति ज़रूरी है और इसके लिए वर्ण स्तरीय समुचित ज्ञान भी नितांत आवश्यक है। पिछले अध्याय में हम स्वर–व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, अयोगवाह, विसर्ग, हलंत, आगत ध्वनियों (आगत स्वर व आगत व्यंजन), विकसित ध्वनियों, स्वरों की मात्राओं और व्यंजनों के साथ उनका प्रयोग, संयुक्त व्यंजनों की लेखन विधि, द्वित्व वर्ण तथा वर्ण–विच्छेद आदि का अभीष्ट ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

किंतु यदि वर्ण के सम्बन्ध में उपर्युक्त ज्ञान न हो एवं व्याकरणिक नियमों की जानकारी न हो तो आमतौर पर लिखने में अनेक त्रुटियाँ हो जाती हैं। इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन व अभ्यास करने से इन त्रुटियों से बचा जा सकता है।

वर्तनी की कुछ सामान्य अशुद्धियाँ

1. **स्वरों की मात्राओं की अशुद्धियाँ :** कई बार ह्रस्व की जगह दीर्घ तथा कई बार दीर्घ की जगह ह्रस्व स्वर के प्रयोग से अशुद्धियाँ हो जाती हैं। जैसे–

   (*i*) 'अ' की जगह 'आ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आधीन	अधीन	अत्याधिक	अत्यधिक
आंडा	अंडा	आपराजिता	अपराजिता
आकाल	अकाल	आलौकिक	अलौकिक

दावात	दवात	अनाधिकार	अनधिकार
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	आसाधारण	असाधारण

(*ii*) 'आ' की जगह 'अ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अगामी	आगामी	अहार	आहार
नराज़गी	नाराज़गी	बज़ार	बाज़ार
अपात	आपात	अपूर्ति	आपूर्ति

(*iii*) 'इ' की जगह 'ई' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
नीती	नीति	रीती	रीति
अतिथी	अतिथि	उत्पत्ती	उत्पत्ति
प्राप्ती	प्राप्ति	कीरति	कीर्ति
ईनाम	इनाम	मुनी	मुनि
रवी	रवि	कवी	कवि
हानी	हानि	कालीदास	कालिदास
क्योंकी	क्योंकि	उन्नती	उन्नति

(*iv*) 'ई' की जगह 'इ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
निरोग	नीरोग	बिमारी	बीमारी
श्रीमति	श्रीमती	परिक्षा	परीक्षा
दिवार	दीवार	मिनार	मीनार
जिवन	जीवन	शितल	शीतल

(*v*) 'उ' की जगह 'ऊ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
आयू	आयु	तरू	तरु
गुरू	गुरु	रूपया	रुपया
धूलाई	धुलाई	कूली	कुली
पशू	पशु	साधू	साधु

(*vi*) 'ऊ' की जगह 'उ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कुदना	कूदना	खुनी	खूनी
गुँगा	गूँगा	पुर्ण	पूर्ण
जुता	जूता	शुरु	शुरू
पुज्य	पूज्य	शुन्य	शून्य
सुर्य	सूर्य	वधु	वधू

(*vii*) 'ए' की जगह 'ऐ' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
ऐकता	एकता	ऐकांत	एकांत
ऐड़ी	एड़ी	ऐजेंसी	एजेंसी
ऐंबुलेंस	एंबुलेंस	ऐशियाई	एशियाई

(*viii*) ऐ की जगह 'ए' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
एब	ऐब	एयाशी	ऐयाशी
एक्य	ऐक्य	एच्छिक	ऐच्छिक

(*ix*) 'ओ' की जगह 'औ' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

औट	ओट	औछा	ओछा

(*x*) 'औ' की जगह 'ओ' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
ओसत	औसत	ओरत	औरत

(*xi*) 'ऋ' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

रिण	ऋण	रिषि	ऋषि
रितु	ऋतु	रिगवेद	ऋग्वेद
क्रपा	कृपा	क्रित	कृत
करिति	कृति	क्रष्ण	कृष्ण
ग्रहस्थ	गृहस्थ	ग्रहिणी	गृहिणी
ग्रहीत	गृहीत	तरिष्णा	तृष्णा

नरिप	नृप	म्रिग	मृग
श्रृंगार	शृंगार	स्रष्टी	सृष्टि
ह्रदय	हृदय	प्रथक	पृथक

2. **नासिक्य व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ :** (ऋ, र या ष के बाद 'न' के आने पर उसे 'ण्' हो जाता है तथा 'न' के बीच में कोई स्वर या कवर्ग, पवर्ग या अन्त:स्थ आने पर भी 'ण' हो जाता है)।

ऋन	ऋण	किरन	किरण
भूषन	भूषण	भरन	भरण
गुन	गुण	चरन	चरण
स्मरन	स्मरण	निरीक्षन	निरीक्षण
रामायन	रामायण	प्रान	प्राण

नोट : यदि इनमें ऊपर बताए वर्णों से कोई भिन्न वर्ण आये तो 'न' को ण् नहीं होगा। जैसे- रचना, प्रार्थना, गर्जना आदि।

3. **अनुस्वार एवं अनुनासिक सम्बन्धी अशुद्धियाँ :** (अधिक जानकारी के लिए देखें : 'वर्ण अध्याय' में अनुस्वार एवं अनुनासिक)

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
आंख	आँख	कँचन	कंचन
चांद	चाँद	गँगा	गंगा
ऊंट	ऊँट	पँगु	पंगु
ऊंचा	ऊँचा	पँच	पंच
कांच	काँच	कँगाल	कंगाल
दांत	दाँत	पँडित	पंडित
मांद	माँद	गँदा	गंदा
मांजना	माँजना	चँचल	चंचल
बांध	बाँध	चँदा	चंदा
बांटना	बाँटना	कँधा	कंधा
बांसुरी	बाँसुरी	चुँबक	चुंबक

4. अल्पप्राण और महाप्राण सम्बन्धी अशुद्धियाँ : (जिनके उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में बाहर आती है, वे व्यंजन अल्पप्राण हैं। वर्गों के पहले, तीसरे, पाँचवें वर्ण तथा य् र् ल् व् अल्पप्राण हैं। जिनके उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में बाहर आती है, वे व्यंजन महाप्राण हैं। वर्गों के दूसरे, चौथे तथा श, ष, स, ह – महाप्राण हैं। इनके ग़लत उच्चारण के कारण लोग लिखने में भी ग़लतियाँ करते हैं। जैसे:

(*i*) महाप्राण की जगह अल्पप्राण के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अमिताब	अमिताभ	साबार	साभार
गोड़ा	घोड़ा	भूक	भूख
झूट	झूठ	गड्डा	गड्ढा
निष्टा	निष्ठा	घनिष्ट	घनिष्ठ
धनाड्य	धनाढ्य	दनवान	धनवान

(*ii*) अल्पप्राण की जगह महाप्राण के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
संतुष्ठ	संतुष्ट	हिंदुस्थान	हिंदुस्तान
मेघनाथ	मेघनाद	सीधा–साधा	सीधा–सादा
अभीष्ठ	अभीष्ट	धब्भा	धब्बा
संघठन	संगठन	चिढ़चिढ़ा	चिड़चिड़ा

5. अक्षर लोप सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अध्यन	अध्ययन	उचारण	उच्चारण
आछादन	आच्छादन	उज्वल	उज्ज्वल
सजन	सज्जन	जगनाथ	जगन्नाथ

6. व और ब सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'व' के उच्चारण में निचला होंठ ऊपर वाले दाँतों के अगले हिस्से के पास जाता है और दोनों होंठ गोल हो जाते हैं जबकि 'ब' के उच्चारण में दोनों होंठ जुड़ जाते हैं।

'व' और 'ब' सम्बन्धी अशुद्धियाँ अशुद्ध उच्चारण के कारण अधिक होती हैं। शुद्ध उच्चारण के आधार पर इस त्रुटि को दूर किया जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बिचार	विचार	पूर्ब	पूर्व
बंदना	वंदना	ब्यर्थ	व्यर्थ
बर्षा	वर्षा	ब्यापक	व्यापक
ब्रत	व्रत	नबाब	नवाब
बिलास	विलास	बनस्पति	वनस्पति

विशेष : संस्कृत में 'व' के शब्द अधिक हैं। जबकि हिंदी में 'ब' वाले शब्द अधिक हैं।

संस्कृत के कई 'व' वाले शब्द हिंदी में 'ब' रूप धारण कर लेते हैं। जैसे- वसंत, विना आदि हिंदी में बसंत, बिना रूप में प्रयुक्त होते हैं।

7. **'श', 'ष', 'स' सम्बन्धी अशुद्धियाँ :** उच्चारण दोष व व्याकरणिक नियमों की जानकारी के अभाव में इनमें वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ होती हैं।

ध्यान रखें कि :

(क) टवर्ग से पहले 'ष' का प्रयोग होता है।

(ख) ऋ के बाद प्राय: 'ष' का प्रयोग होता है।

(ग) विसर्ग से पूर्व 'इ', 'उ', स्वर हों तथा बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई हो तो विसर्ग को 'ष्' हो जाता है। जैसे- नि: + कलंक = निष्कलंक, धनु: + टंकार = धनुष्टंकार

(घ) जहाँ 'श' और 'ष' एक साथ आ जायें तो वहाँ 'श' के बाद 'ष' आता है। जैसे- शेष, शीर्ष आदि।

(*i*) 'ष' के स्थान पर 'श' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शोडश	षोडष	कश्ट	कष्ट
नश्ट	नष्ट	शिश्ट	शिष्ट
कृशि	कृषि	वृश्टि	वृष्टि
निश्कपट	निष्कपट	निश्फल	निष्फल
दुश्कर	दुष्कर	विशेश	विशेष

(*ii*) 'श' के स्थान पर 'स' के प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

(क) जहाँ 'श' और 'स' एक साथ आयें वहाँ अधिकतर 'श' पहले आता है। जैसे- शस्य

(ख) 'च', 'छ' से पहले 'श्' आता है।

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
साशन	शासन	साशक	शासक
प्रसंशा	प्रशंसा	नृसंश	नृशंस
निस्चल	निश्चल	निस्चय	निश्चय
हरिस्चंद्र	हरिश्चंद्र	निस्छल	निश्छल

(*iii*) 'स' के स्थान पर 'श्' के प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
नमश्ते	नमस्ते	नमश्कार	नमस्कार
दुश्शाहस	दुस्साहस	निश्तेज	निस्तेज
प्रशाद	प्रसाद	विकाश	विकास

8. 'ऑ' के स्थान पर 'आ', 'ओ' के प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :
अंग्रेज़ी से आगत स्वर 'ऑ' के स्थान पर कई बार 'आ' या 'ओ' के प्रयोग से भी अशुद्धियाँ हो जाती है। जैसे :-

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कोलेज	कॉलेज	कोफी	कॉफी
आफ़िस	ऑफिस	डाक्टर	डॉक्टर
हास्पिटल	हॉस्पिटल	आयल	ऑयल

9. (*i*) **अनावश्यक स्वर जोड़ने की अशुद्धियाँ :** कई बार उच्चारण और लेखन में अनावश्यक स्वर को जोड़ देने से भी शब्द अशुद्ध हो जाता है। जैसे :-

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
इस्कूल	स्कूल	इस्नान	स्नान
इस्मारक	स्मारक	इस्लेट	स्लेट
इस्याही	स्याही	इस्थिर	स्थिर
उस्तुति	स्तुति	उस्थूल	स्थूल

***(ii)* अनावश्यक व्यंजन जोड़ने की अशुद्धियाँ :** कई बार अज्ञानवश या विद्वता दिखाने के चक्कर में अनावश्यक व्यंजन जोड़ने से शब्द अशुद्ध हो जाता है। जैसे :-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सौन्दर्यता	सौन्दर्य	स्राप	शाप
सहस्त्र	सहस्र	ऐश्वर्यता	ऐश्वर्य
स्वास्थ्यता	स्वास्थ्य	गिरावटता	गिरावट

10. अक्षरों के स्थान-परिवर्तन सम्बन्धी अशुद्धियाँ : कई बार लापरवाही या जल्दबाज़ी के कारण अक्षरों को उचित स्थान पर न लिखकर आगे-पीछे लिख दिया जाता है। जैसे-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ग्याहर	ग्यारह	बाहरवीं	बारहवीं
अठाहरवीं	अठारहवीं	सोहलवीं	सोलहवीं
चिन्ह	चिह्न	पड़कवाना	पकड़वाना

11. 'छ' और 'क्ष' के सम्बन्ध में अशुद्धियाँ - 'छ' एक स्वतंत्र व्यंजन किन्तु 'क्ष' (क् + ष) संयुक्त व्यंजन है। संस्कृत में 'क्ष' से सम्बन्धित शब्द प्रयुक्त होते हैं। इसी कारण बहुत से शब्द हिंदी में भी तत्सम रूप में स्वीकार किये गये हैं। किंतु कुछ लोग 'क्ष' की अपेक्षा 'छ' उच्चारण ('क्ष' की अपेक्षा छ बोलना अधिक सरल होने के कारण) ग़लत करते व लिखते हैं। जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
छत्रिय	क्षत्रिय	आकांछा	आकांक्षा
नछत्र	नक्षत्र	छमा	क्षमा
लच्छन	लक्षण	लछमण	लक्ष्मण

12. ग्य और 'ज्ञ' के सम्बन्ध में अशुद्धियाँ : 'ज्ञ' (ज् + ञ) एक संयुक्त व्यंजन है। जैसा कि पिछले अध्याय में भी स्पष्ट किया गया है कि 'ज्ञ' का कुछ लोग उच्चारण 'ज्ञ' तथा कुछ 'ग्य' करते हैं। दोनों ही उच्चारण सही हैं किन्तु हिंदी भाषी लोगों में 'ग्य' प्रचलित है किन्तु लेखन में 'ज्ञ' को मानक माना गया है। जैसे-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विग्यान	विज्ञान	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
विशेषग्य	विशेषज्ञ	ग्याता	ज्ञाता
ग्यानवान	ज्ञानवान	ग्यानदेवी	ज्ञानदेवी
प्रग्या	प्रज्ञा	अग्यान	अज्ञान

13. प्रत्यय सम्बन्धी अशुद्धियाँ : कई बार प्रत्यय युक्त शब्दों में भी ग़लतियाँ हो जाती हैं। ध्यान रखें :-

(*i*) 'इक' प्रत्यय लगाते समय आदि स्वर में वृद्धि होती है।

(*ii*) कई बार संज्ञा बनाने वाले प्रत्ययों के प्रयोग में फालतू शब्दों का प्रयोग अशुद्धि का कारण बनता है।

(*iii*) अज्ञान के कारण भी प्रत्यय प्रयोग में ग़लतियाँ होती हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
समाजिक	सामाजिक	अलंकारिक	आलंकारिक
इतिहासिक	ऐतिहासिक	उद्योगिक	औद्योगिक
कौशलता	कुशलता, कौशल	चातुर्यता	चातुर्य, चतुरता
धैर्यता	धैर्य, धीरता	पांडित्यता	पांडित्य
अक्षरश	अक्षरशः	अंतत	अंततः

14. संधि सम्बन्धी अशुद्धियाँ : व्याकरण में संधि के अनेक नियम हैं और यथास्थान इनके बारे में बताया गया है। वैसे अगली कक्षाओं में इनके बारे में पढ़ा जाएगा किंतु फिर भी कुछेक महत्वपूर्ण नियमों की जानकारी संक्षेप में दी जा रही है ताकि इनके ज्ञानाभाव के कारण होने वाली अशुद्धियों से बचा जा सके। जैसे-

(*i*) जब दो एक समान वर्ण पास आते हैं तो दोनों मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ रूप बनते हैं। जैसे- अ + अ = आ, आ + अ = आ, इ + इ = ई, इ + ई = ई, उ + ऊ = ऊ आदि।

(*ii*) अ या आ + इ या ई = ए

(*iii*) अ या आ + उ या ऊ = ओ

(*iv*) अ या आ + ऋ = अर्

(*v*) इ या ई + कोई भी असमान स्वर = य् + असमान स्वर की मात्रा

(*vi*) उ या ऊ + कोई भी असमान स्वर = व् + असमान स्वर की मात्रा

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
योगभ्यास	योगाभ्यास	परिक्षा	परीक्षा
गुरुपदेश	गुरूपदेश	अनुदित	अनूदित
नरिंद्र	नरेंद्र	परउपकार	परोपकार
महार्षि	महर्षि	वर्षातु	वर्षर्तु
अतियाचार	अत्याचार	सुआगत	स्वागत

15. द्‌वित्व व्यंजन सम्बन्धी अशुद्‌धियाँ : कई बार द्‌वित्व व्यंजन से सम्बन्धित ग़लतियाँ भी देखने को मिलती हैं। द्‌वित्व व्यंजनों की जानकारी पिछले अध्याय **(वर्ण)** में दी जा चुकी है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बघ्घी	बग्घी	अछा/अछ्छा	अच्छा
मछर/मछ्छर	मच्छर	संधिछेद	संधिच्छेद
पथ्थर	पत्थर	गठ्ठर	गट्ठर
गड्डा	गड्ढा	वृध्धा	वृद्‌धा

16. विसर्ग (:) सम्बन्धी अशुद्‌धियाँ : संस्कृत के बहुत से शब्द हिंदी में तत्सम रूप में स्वीकार किये गये हैं जिनमें विसर्ग सम्बन्धी शब्द भी हैं किंतु इनके प्रयोग में भी अशुद्‌धियाँ पायी जाती हैं। विसर्ग का उच्चारण 'ह' ध्वनि के समान है, इसलिए कुछ लोग विसर्ग को ग़लती से 'ह' रूप में लिख देते हैं या विसर्ग डालते ही नहीं। यह भी देखा गया है कि कुछ विसर्ग के प्रभाव के कारण अनावश्यक रूप से अनुस्वार भी जोड़ देते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
प्रात	प्रात:	अंतहकरण	अत:करण
अंत/अंत:	अत:	प्रायह	प्राय:
विशेषत	विशेषत:	साधारणतय:	साधारणतया

17. रेफ (ि) अर्थात् स्वर रहित 'र्' सम्बन्धी अशुद्‌धियाँ : स्वर रहित 'र्' का उचित स्थान पर प्रयोग न होने के कारण भी अशुद्‌धियाँ होती हैं। ध्यान रहे कि स्वर रहित 'र्' अपने से अगले स्वर सहित व्यंजन पर रेफ (ि) के रूप में लगता है। जैसे : र् + म = र्म (कर्म) यदि किसी अक्षर के साथ मात्रा लगी हो तो 'र्' (ि) मात्रा के बाद लगता है। जैसे : र् + मी = र्मी (कर्मी)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अपर्ण	अर्पण	र्नमदा	नर्मदा
आर्शीवाद	आशीर्वाद	प्रर्दशनी	प्रदर्शनी
र्दशनीय	दर्शनीय	सार्मथ्य	सामर्थ्य
र्धामिक	धार्मिक	ध्यानर्पूवक	ध्यानपूर्वक

18. पदेन 'र' (्र) सम्बन्धी अशुद्धियाँ : 'र' से पहले यदि कोई हलंत व्यंजन (आधा वर्ण) हो तो यह उसके पैरों में अर्थात नीचे तिरछा होकर **(्र)** लगता है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
तीर्वता	तीव्रता	परणाम	प्रणाम
परधान	प्रधान	विकरय	विक्रय
शीघर	शीघ्र	निदरा	निद्रा

विशेष कथन : अधिक जानकारी के लिए **'वर्ण' अध्याय-2** में 'र्' के विभिन्न रूप देखिए।

19. व्यंजन गुच्छों की अशुद्धियाँ : व्यंजन से व्यंजन के संयोग से संयुक्त ध्वनियाँ बनती हैं जिनकी जानकारी पिछले अध्याय में दी गयी है। संयुक्त व्यंजनों के प्रयोग में भी प्राय: अशुद्धियाँ होती हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उदे्श्य	उद्देश्य	कुता	कुत्ता
शुदता	शुद्धता	ब्राम्हण	ब्राह्मण
चिन्ह	चिह्न	ह्रस्व	ह्रस्व
मध्यान्ह	मध्याह्न	परसिद्ध	प्रसिद्ध
स्वास्थ	स्वास्थ्य	कियारी	क्यारी
विधालय	विद्यालय	विधार्थी	विद्यार्थी

20. विकसित ध्वनियों की अशुद्धियाँ : हिंदी में 'ड़' और 'ढ़' दो विकसित ध्वनियाँ हैं जो क्रमश: 'ड' और 'ढ' से विकसित हुई हैं और इनसे सर्वथा भिन्न हैं। इनके प्रयोग में भी सावधानी बरतनी चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गाडना	गाड़ना	सडा	सड़ा
धडाधड	धड़ाधड़	चीड	चीड़

घडा	घड़ा	कडक	कड़क
चढाई	चढ़ाई	पढाई	पढ़ाई
ढ़ाबा	ढाबा	ढ़क्कन	ढक्कन

21. 'य' और 'ज' सम्बन्धी अशुद्धियाँ : 'ज' के उच्चारण में वायु पहले मुख अवयव से स्पर्श करती है फिर कुछ संघर्ष (रगड़) करते हुए बाहर निकलती है, इसीलिए इसे स्पर्ष संघर्षी कहते हैं जबकि 'य' के उच्चारण में श्वास वायु को रोकने के लिये उच्चारण अवयव प्रयत्न तो करते हैं लेकिन वह प्रयत्न न के बराबर होता है। अत: 'य' ध्वनि अवरोध रहित बाहर निकलती है। इसलिए दोनों के उच्चारण की ग़लती के कारण लिखने में भी ग़लतियाँ होती हैं :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
जजमान	यजमान	जोग	योग
जुक्ति	युक्ति	जमराज	यमराज
जोग्य	योग्य	जह	यह
जुद्ध	युद्ध	जाताजात	यातायात
जात्रा	यात्रा	जदपि	यद्यपि
जकीन	यक़ीन	जंत्र	यंत्र

22. 'ज' और 'ज़' सम्बन्धी अशुद्धियाँ : अंग्रेज़ी, उर्दू-फ़ारसी भाषाओं में 'ज़' ध्वनि का बहुधा प्रयोग होता है और 'ज़' ध्वनि युक्त इन भाषाओं के शब्द हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं। 'ज़' ध्वनि 'ज' ध्वनि से भिन्न है। इसके प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए अन्यथा कई बार तो अनुचित प्रयोग के कारण शब्दों के अर्थ भी बदल सकते हैं। जैसे-

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
जरा	ज़रा	जंजीर	ज़ंजीर
जलील	ज़लील	जायज	जायज़
जायका	ज़ायका	राजदार	राज़दार
फ्यूज	फ्यूज़	जेबरा	ज़ेबरा

निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :-

	अशुद्ध	शुद्ध		अशुद्ध	शुद्ध
1.	हस्ताक्षेप	....	2.	अनाधिकार	....
3.	व्यवहारिक	....	4.	वर्दीयां	....
5.	आर्शिवाद	....	6.	पत्नि	....
7.	देहिक	....	8.	अलंकारिक	....
9.	हिंदु	....	10.	दुसरा	....
11.	स्थिती	....	12.	आंख	....
13.	गुंगा	....	14.	चांद	....
15.	मुंह	....	16.	हंसना	....
17.	मासांहारी	....	18.	द्वदंव	....
19.	किरन	....	20.	हिन्सा	....
21.	बुड़ापा	....	22.	ह्रदय	....
23.	श्रेष्ट	....	24.	अधियापक	....
25.	नबाब	....	26.	बनस्पति	....
27.	अमावश्या	....	28.	नछत्र	....
29.	आग्या	....	30.	उदेश्य	....
31.	तदोपरांत	....	32.	उपरोक्त	....
33.	सुरिंद्र	....	34.	हिंदुस्थान	....
35.	मेघनाथ	....	36.	उत्कर्षता	....
37.	श्रृंखला	....	38.	फवारा	....
39.	त्यौहार	....	40.	ठाकुराइन	....
41.	विधार्थी	....	42.	गठ्ठर	....
43.	पथ्थर	....	44.	कार्यकर्म	....
45.	प्रमात्मा	....	46.	टेड़ा	....
47.	सन्यासी	....	48.	गुरुपदेश	....
49.	कढ़ाही	....	50.	धब्भा	....

51.	चिन्ह	....	52.	जिव्हा	....
53.	ज्योतसना	....	54.	पराप्त	....
55.	समुदर	....	56.	अतैव	....
57.	निसंकोच	....	58.	निरोग	....
59.	साधारणतय:	....	60.	जरुरत	....
61.	कर्ज	....	62.	डाक्टर	....
63.	परायवाची	....	64.	उपलक्ष	....
65.	स्वास्थ	....	66.	रितु	....
67.	घ्रिणा	....	68.	रूपया	....
69.	उज्जवल	....	70.	ग्रहस्थ	....

पाठ – 4

लिंग

(क)	(ख)
1. **लड़का** पढ़ता है।	1. **लड़की** पढ़ती है।
2. **कवि** कविता सुनाता है।	2. **कवयित्री** कविता सुनाती है।

उपर्युक्त 'क' भाग के वाक्यों में 'लड़का' तथा 'कवि' शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं तथा 'ख' भाग के वाक्यों में 'लड़की' तथा 'कवयित्री' शब्द स्त्रीलिंग जाति का बोध कराते हैं अत: 'क' भाग के शब्द पुल्लिग तथा 'ख' भाग के शब्द स्त्रीलिंग हैं।

अत: शब्द के जिस रूप द्वारा यह पता चले कि जिसके विषय में बात की जा रही है, वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहा जाता है।

हिंदी में दो लिंग हैं : **1. पुल्लिंग** **2. स्त्रीलिंग**

1. पुल्लिंग : पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द 'पुल्लिंग' कहलाते हैं। जैसे–

(*i*) बालक पाठ पढ़ता है।

(*ii*) शेर दहाड़ रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बालक' तथा 'शेर' शब्द पुल्लिग हैं क्योंकि ये दोनों शब्द पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं।

2. स्त्रीलिंग : स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द 'स्त्रीलिंग' कहलाते हैं। जैसे–

(*i*) मम्मी कहानी सुनाती है।

(*ii*) लड़की गा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मम्मी' तथा 'लड़की' शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं क्योंकि ये दोनों शब्द स्त्री जाति का बोध करा रहे हैं।

लिंग पहचान के कुछ नियम : हिंदी में लिंग दो प्रकार के होते हैं– पुल्लिग और स्त्रीलिंग। प्रत्येक संज्ञा शब्द या तो पुल्लिग होगा या स्त्रीलिंग। प्राणिवाचक शब्दों में लिंग की पहचान सरलता से हो जाती है। नर-वाचक शब्द पुल्लिग और मादा-वाचक शब्द स्त्रीलिंग के अन्तर्गत आते हैं। जैसे– सुनार, घोड़ा, बकरा, चूहा,

लड़का, अध्यापक आदि शब्द पुल्लिंग हैं तथा सुनारिन, घोड़ी, बकरी, चुहिया, लड़की तथा अध्यापिका शब्द स्त्रीलिंग हैं।

निर्जीव वस्तुओं जैसे – मेज़, कुर्सी, किताब, पानी, दूध आदि के लिंग निर्णय के सम्बन्ध में समस्या आती है क्योंकि इनका भौतिक धरातल पर कोई लिंग नहीं होता। जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, वे लिंग की पहचान में अनेक बार ग़लती कर देते हैं। जैसे- यह मेरा कार है, यह मेरी कम्प्यूटर है आदि।

इस विषय में कुछ सामान्य नियम दिये जा रहे हैं :

(क) पुल्लिंग की पहचान

1. अकारान्त तत्सम शब्द प्राय: पुल्लिंग माने जाते हैं। जैसे-धन, नगर, कर्म, जल, नर।
2. आकारान्त शब्द प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे- कपड़ा, राजा, रास्ता, लोटा, हीरा, आटा, लोहा, पिता, दादा आदि।

   अपवाद – शोभा, लता, चिड़िया, माला, चुहिया, मैना आदि।
3. पर्वतों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-हिमालय, सतपुड़ा, विंध्याचल।
4. धातुओं के नाम प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे-सोना, पीतल, तांबा, लोहा आदि।

   अपवाद – चाँदी।
5. देशों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे- भारत, चीन, श्रीलंका, नेपाल, जापान, पाकिस्तान, अमेरिका आदि।
6. महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे- जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, चैत्र, आषाढ़, ज्येष्ठ, बैसाख, माघ आदि।
7. दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-सोमवार, मंगलवार, बुधवार आदि।
8. द्रव पदार्थ प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे- पानी, तेल, घी, शरबत, दूध आदि।

   अपवाद- चाय, कॉफी, लस्सी, शराब, आदि।
9. ग्रहों और तारों के नाम प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे-राहु, केतु, मंगल, बुध, सूर्य, चंद्र, शुक्र, शनि आदि।

   अपवाद – पृथ्वी।
10. वृक्षों के नाम प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे-कीकर, नींबू, संतरा, पीपल, आम, जामुन, वट, चीड़, अनार, आदि।

अपवाद – लीची, खजूर, नीम, इमली।

11. जिन शब्दों के अंत में 'त्र' वर्ण आता है, वे प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे- मित्र, वस्त्र, चित्र, चरित्र, शास्त्र आदि।
12. सागरों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे- प्रशांत महासागर, अंध महासागर।
13. रत्नों के नाम प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे- हीरा, पन्ना, मोती, पुखराज, मूंगा।

    अपवाद – मणि।
14. अनाजों के नाम प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे- गेहूँ, चना, मटर, बाजरा, चावल आदि।

    अपवाद – ज्वार, मक्की, अरहर आदि।
15. 'पन', 'आप', 'पा', 'आर', 'आव', प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिंग होते हैं। जैसे- बचपन, मिलाप, बुढ़ापा, सुनार, बहाव आदि।

(ख) स्त्रीलिंग की पहचान

1. इकारान्त तत्सम शब्द प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- रात्रि, अग्नि, विधि, राशि, छवि, आदि।
2. हिंदी की ईकारान्त संज्ञाएँ प्राय: स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- रोटी, नानी, दीदी, दादी, बीमारी, सवारी, चीनी, चोटी, नदी, लड़की, रानी, बकरी आदि।

   अपवाद – हाथी, धोबी, मोची, मोती, पानी, घी आदि।
3. भाषाओं और लिपियों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-हिंदी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, फ़ारसी, रोमन, देवनागरी, गुरुमुखी आदि।
4. नदियों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- सतलुज, रावी, गंगा, कृष्णा, यमुना, कावेरी आदि।

   अपवाद – ब्रह्मपुत्र।
5. जिन शब्दों के अंत में 'ता', 'ई', 'आई', 'इका', 'इया', 'आवट', 'आस', 'आहट' आदि प्रत्यय लगते हैं, वे प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- कायरता, मित्रता, विदेशी, लेखिका, अध्यापिका, चिड़िया, बिटिया, लिखावट, गिरावट, मुस्कराहट, मिठास, खटास, घबराहट आदि।

6. 'उ' अंत वाली तत्सम संज्ञाएँ प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-आयु, धातु, वस्तु, मृत्यु, ऋतु आदि।
7. तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- प्रतिपदा, प्रथमा, द्‌वितीया, पूर्णिमा, दशमी, द्‌वादशी, अमावस्या आदि।
8. नक्षत्रों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- अश्विनी, कृतिका, रोहिणी, भरणी।
9. जिन संज्ञा शब्दों के अंत में 'ख' वर्ण आता है, वे प्राय: स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- ईख, लाख, भूख, कोख आदि।
10. लघु आकार वाचक आकारान्त संज्ञाएँ प्राय: स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- डिबिया, खटिया, लुटिया, पुड़िया, चिड़िया आदि।

लिंग-परिवर्तन

पुल्लिग शब्द से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के प्रमुख नियम

1. कुछ अकारान्त शब्दों को आकारान्त कर दिया जाता है। जैसे-

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
सुत	सुता	बाल	बाला
आचार्य	आचार्या	छात्र	छात्रा
महोदय	महोदया	प्रियतम	प्रियतमा
वृद्‌ध	वृद्‌धा	अध्यक्ष	अध्यक्षा

2. कुछ अकारान्त या आकारान्त पुल्लिग शब्दों के अंतिम 'अ' या 'आ' के स्थान पर 'ई' कर दिया जाता है। जैसे-

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
देव	देवी	काका	काकी
तरुण	तरुणी	मामा	मामी
कुमार	कुमारी	घड़ा	घड़ी
गोप	गोपी	बच्चा	बच्ची
पोता	पोती	चाचा	चाची

3. कुछ अकारांत पुल्लिग शब्दों के अंत में 'नी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग शब्दों की रचना की जाती है। जैसे–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
भील	भीलनी	शेर	शेरनी
मोर	मोरनी	ऊँट	ऊँटनी
सिंह	सिंहनी	हंस	हंसनी

4. कुछ अकारांत पुल्लिग शब्दों में 'आनी' प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग शब्दों की रचना की जाती है। जैसे–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
देवर	देवरानी	जेठ	जेठानी
मेहतर	मेहतरानी	नौकर	नौकरानी

विशेष : किंतु कुछ शब्दों में 'आनी' के स्थान पर 'आणी' लगता है। जैसे– इन्द्राणी, रुद्राणी, खत्राणी आदि।

5. जाति, उपनाम और पदवी वाची शब्दों के अंतिम स्वर के स्थान पर 'आइन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग शब्दों की रचना की जाती है।

विशेष : 'आइन' प्रत्यय लगाने के साथ-साथ शब्द के पहले स्वर को भी प्राय: ह्रस्व कर दिया जाता है अर्थात् 'आ' को 'अ', 'ई' को 'इ' तथा 'ऊ' को 'उ' कर दिया जाता है। जैसे–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
ठाकुर	ठकुराइन	लाला	ललाइन
चौधरी	चौधराइन	पंडा	पंडाइन
दूबे	दुबाइन	चौबे	चौबाइन

विशेष *(i)* : गुरु – गुरुआइन तथा बाबू – बबुआइन शब्दों (स्त्रीलिंग) में अंतिम स्वर के स्थान पर नहीं अपितु अंतिम स्वर के बाद 'आइन' लगा कर स्त्रीलिंग शब्द बनाया गया है।

(ii) 'नाई' से 'नाइन' स्त्रीलिंग बनाते समय आदि स्वर 'आ' को ह्रस्व नहीं किया जाता।

6. कुछ अकारांत या आकारांत पुल्लिग शब्दों के अंतिम 'आ' के स्थान पर स्त्रीलिंग में 'इया' प्रत्यय लगा दिया जाता है।

विशेष : यहाँ दो बातें ध्यान में रखने योग्य हैं :

(*i*) यदि मूल शब्द में द्वित्व व्यंजन हो तो एक व्यंजन का लोप हो जाता है। जैसे
'डिब्बा' में 'ब' को द्वित्व होने पर स्त्रीलिंग में एक 'ब्' का लोप हो जाता है। (डिबिया)

(*ii*) यदि शब्द का पहला स्वर 'ऊ' हो तो उसे 'उ', यदि 'ए' हो तो उसे 'इ' तथा यदि 'ओ' हो तो उसे 'उ' हो जाता है। जैसे– क्रमशः चूहा–चुहिया, बेटा–बिटिया, लोटा–लुटिया।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
बंदर	बंदरिया	डिब्बा	डिबिया
मुन्ना	मुनिया	चिड़ा	चिड़िया
बूढ़ा	बुढ़िया	बेटा	बिटिया

7. व्यवसाय सूचक (कार्यसूचक) व कुछ अन्य पुल्लिंग शब्दों के अंतिम स्वर के स्थान पर 'इन' लगाकर स्त्रीलिंग शब्द बन जाता है। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पुजारी	पुजारिन	ग्वाला	ग्वालिन
धोबी	धोबिन	नाई	नाइन
तेली	तेलिन	दर्जी	दर्जिन
साँप	साँपिन	पापी	पापिन

8. संस्कृत की कुछ संज्ञाओं में प्रयुक्त अंतिम 'अक' के स्थान पर 'इका' लगाने से स्त्रीलिंग शब्दों की रचना होती है। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बालक	बालिका	सेवक	सेविका
मूषक	मूषिका	शिक्षक	शिक्षिका
याचक	याचिका	पाठक	पाठिका
निर्देशक	निर्देशिका	प्रेक्षक	प्रेक्षिका

9. कुछ संज्ञा शब्दों में अंतिम 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगा देने से स्त्रीलिंग शब्द की रचना होती है। जैसे–

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**
नेता	नेत्री	अभिनेता	अभिनेत्री
धाता	धात्री	दाता	दात्री
कर्त्ता	कर्त्री	भर्ता	भर्त्री

10. कुछ ईकारांत (पुल्लिग) संज्ञा शब्दों के अंतिम स्वर 'ई' के स्थान पर 'इनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग शब्दों की रचना होती है। जैसे :

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**
तेजस्वी	तेजस्विनी	स्वामी	स्वामिनी
अभिमानी	अभिमानिनी	स्वाभिमानी	स्वाभिमानिनी
तपस्वी	तपस्विनी	यशस्वी	यशस्विनी

विशेष : परोपकारिणी, ब्रह्मचारिणी, हितकारिणी आदि में 'इनी' की जगह 'इणी' का प्रयोग होगा। **(अधिक जानकारी के लिए देखें 'वर्तनी' अध्याय-3, बिंदु-2)**

11. 'आन' अंत वाले कुछ पुल्लिग संज्ञा शब्दों के अंत में 'अती' लगाकर स्त्रीलिंग शब्द बनाया जाता है। जैसे–

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**
श्रीमान	श्रीमती	शक्तिमान	शक्तिमती
भगवान	भगवती	ज्ञानवान	ज्ञानवती
बुद्धिमान	बुद्धिमती	गुणवान	गुणवती

12. सर्वथा भिन्न रूप में बनने वाले स्त्रीलिंग शब्द : कुछ पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग में विशिष्ट रूप बनते हैं। जैसे–

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**
पिता	माता	विद्वान	विदुषी
युवक	युवती	वीर	वीरांगना
मर्द	औरत	सम्राट	सम्राज्ञी
राजा	रानी	पुरुष	स्त्री
पति	पत्नी	वर	वधू

कवि	कवयित्री	ससुर	सास
बिलाव	बिल्ली	विधुर	विधवा
बाप	माँ	मियाँ	बीवी

विशेष (*i*) नित्य पुल्लिग : हिंदी में जिन शब्दों का प्रयोग हमेशा पुल्लिग रूप में ही होता है, वे नित्य पुल्लिंग कहलाते हैं। जैसे- खटमल, पक्षी, खरगोश आदि।

(*ii*) **नित्य स्त्रीलिंग : हिंदी में जिन शब्दों का प्रयोग हमेशा स्त्रीलिंग में ही होता है, वे नित्य स्त्रीलिंग कहलाते हैं।** जैसे- कोयल, मछली, मक्खी आदि।

(*iii*) **'मादा मच्छर' डेंगू की बीमारी फैलाता है :** यद्यपि 'मच्छर' शब्द सदैव नित्य पुल्लिंग रूप में आता है तथापि उपर्युक्त वाक्य को देखा जाये तो पता चलता है कि आवश्यकतानुसार नित्य पुल्लिंग में 'मादा' शब्द जोड़कर लिंग दर्शाया जा सकता है। उदाहरण :

नित्य पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**	**नित्य पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**
पशु	मादा पशु	कौआ	मादा कौआ
खरगोश	मादा खरगोश	मच्छर	मादा मच्छर
भेड़िया	मादा भेड़िया	उल्लू	मादा उल्लू
चीता	मादा चीता	बाज	मादा बाज
खटमल	मादा खटमल	बिच्छू	मादा बिच्छू

नित्य पुल्लिंग की तरह नित्य स्त्रीलिंग शब्दों के आगे 'नर' शब्द जोड़कर लिंग दर्शाया जा सकता है। उदाहरण :

नित्य स्त्रीलिंग	**पुल्लिग**	**नित्य स्त्रीलिंग**	**पुल्लिग**
कोयल	नर कोयल	गिलहरी	नर गिलहरी
मैना	नर मैना	मकड़ी	नर मकड़ी
मक्खी	नर मक्खी	बुलबुल	नर बुलबुल
जूँ	नर जूँ	लोमड़ी	नर लोमड़ी
जोंक	नर जोंक	चील	नर चील

अभ्यास

लिंग परिवर्तन कीजिए :

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
शिष्य	....	अनुज	....
सुशील	....	वृद्‌ध	....
ब्राह्मण	....	मौसा	....
लोटा	....	चूहा	....
पंडित	....	बनिया	....
उपदेशक	....	अध्यापक	....
नायक	....	पत्र	....
आयुष्मान	....	रूपवान	....
सेठ	....	पठान	....
कुम्हार	....	माली	....
पड़ोसी	....	भक्त	....
संन्यासी	....	हितकारी	....
मनस्वी	....	परोपकारी	....
प्रबंधकर्त्ता	....	रचयिता	....
मज़दूर	....	रीछ	....
आदमी	....	साधु	....
विद्‌वान	....	भैंसा	....
नर	....	भाई	....

पाठ – 5

वचन

भाग – क	भाग – ख
(*i*) **बच्चा खा रहा है।**	(*ii*) **बच्चे खा रहे हैं।**
(*ii*) **मैं घूमने जा रहा हूँ।**	(*ii*) **हम घूमने जा रहे हैं।**

उपर्युक्त 'क' भाग के वाक्यों में 'बच्चा' तथा 'मैं' शब्दों से एक की संख्या का पता चल रहा है तथा 'ख' भाग के वाक्यों में 'बच्चे' तथा 'हम' शब्दों से एक से अधिक संख्या का पता चलता है। वचन का सम्बन्ध गिनती से है।

अतः शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा एक से अधिक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं।

वचन के प्रकार

हिंदी में वचन दो प्रकार के होते हैं :

(*i*) **एकवचन** (*ii*) **बहुवचन**

(*i*) **एकवचन : शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं।** जैसे– घोड़ा, किताब, लड़की, चाबी आदि।

(*ii*) **बहुवचन : शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे बहुवचन कहते हैं।** जैसे– घोड़े, किताबें, लड़कियाँ, चाबियाँ आदि।

वचन की पहचान

वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया से होती है। जैसे–

(*i*) **संज्ञा से** – कुत्ता भौंक रहा है। (एकवचन)
– कुत्ते भौंक रहे हैं। (बहुवचन)

उपर्युक्त वाक्यों में 'कुत्ता' तथा 'कुत्ते' संज्ञा (जातिवाचक) शब्द हैं जिनसे क्रमशः एकवचन तथा बहुवचन का पता चलता है।

(*ii*) **सर्वनाम से** – मैं पढ़ रहा हूँ। (एकवचन)
– हम पढ़ रहे हैं। (बहुवचन)

उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं' तथा 'हम' सर्वनाम [पुरुषवाचक (उत्तम पुरुष)] शब्द हैं जिनसे क्रमशः एकवचन तथा बहुवचन का पता चलता है।

(*iii*) **क्रिया से** – बालक खेल रहा है। (एकवचन)

– बालक खेल रहे हैं। (बहुवचन)

उपर्युक्त वाक्यों में 'खेल रहा है' तथा 'खेल रहे हैं' क्रियाओं से क्रमशः एकवचन तथा बहुवचन का पता चलता है।

एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग

हिंदी में कई बार एकवचन वाले शब्दों का बहुवचन के रूप में प्रयोग होता है। जैसे –

(*i*) आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे– सभापति पधार चुके हैं।

(*ii*) कुछ लोग कई बार स्वयं को बड़ा या महान प्रकट के लिए अपने लिए 'मैं' की जगह 'हम' सर्वनाम का प्रयोग करते हैं। जैसे– मंत्री जी ने मुझे कहा, ''हम आपका काम करवा देंगे।''

(*iii*) कई बार अभिमान/स्वाभिमान प्रकट करने के लिए भी एकवचन की जगह बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे– ''तुम्हें हम से बेहतर कोई नहीं मिलेगा।''

(*iv*) कई बार अधिकार प्रकट करने के लिए भी एकवचन की जगह बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे – 'श्रीमान जी! हमारी बात भी सुनिये।''

(*v*) प्राण, लोग, दर्शन, होश, हस्ताक्षर, आँसू, आदि का प्रयोग प्रायः बहुवचन में होता है। जैसे–

प्राण : डर के मारे उसके प्राण निकले जा रहे हैं।

लोग : आप लोग कब पधारे ?

दर्शन : उसके तो दर्शन बड़े दुर्लभ होते हैं।

होश : साँप देखते ही उसके होश उड़ गये।

हस्ताक्षर : मैंने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दिये।

आँसू : तुम्हारे आँसू क्यों निकल रहे हैं।

बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग

(*i*) पानी, वर्षा, जनता आदि अधिकता का बोध कराने वाले शब्दों का प्रायः एकवचन में प्रयोग होता है। जैसे–

पानी : वहाँ बहुत सारा पानी इकट्ठा हो गया है।

वर्षा : दो दिन से लगातार वर्षा हो रही है।

जनता : नेता जी का भाषण सुनने के लिए जनता उमड़ पड़ी।

(*ii*) धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएं एकवचन रूप में प्रयुक्त होती हैं जैसे-

सोना : सोना बहुत महंगा हो गया है।

चाँदी : चाँदी सोने से सस्ती है।

लोहा : सारा लोहा ट्रक से उतरवा लिया गया है।

विभक्ति चिह्न रहित शब्दों के बहुवचन

विभक्ति चिह्न रहित शब्दों के बहुवचन रूप निम्नलिखित नियमों के आधार पर बनते हैं।

1. अकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'अ' को 'एँ' (ें)करके

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें	पुस्तक	पुस्तकें
बहन	बहनें	छत	छतें
गाय	गायें	रात	रातें
सड़क	सड़कें	लहर	लहरें
फौज	फौजें	चादर	चादरें

2. 'आकारांत पुल्लिंग' शब्दों के अंत में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाकर

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के	चीता	चीते
ठेला	ठेले	मेला	मेले
बेटा	बेटे	रुपया	रुपये
घोड़ा	घोड़े	बच्चा	बच्चे

अपवाद (*i*) संस्कृत की कुछ आकारांत संज्ञाएँ एकवचन तथा बहुवचन में एक जैसी रहती हैं। जैसे पिता, नेता, भ्राता, योद्धा, कर्त्ता आदि।

(*ii*) आकारान्त संबंधसूचक शब्द जैसे- चाचा, मामा, नाना, दादा आदि के रूप बहुवचन में परिवर्तित नहीं होते अर्थात् इनके दोनों वचन एक जैसे ही रहते हैं।

3. 'आकारांत स्त्रीलिंग' शब्दों के अंत में 'एँ' लगाकर

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाएँ	माला	मालाएँ
शाखा	शाखाएँ	घटना	घटनाएँ
सूचना	सूचनाएँ	योजना	योजनाएँ
कला	कलाएँ	गाथा	गाथाएँ
रचना	रचनाएँ	कविता	कविताएँ

4. 'उकारांत', 'ऊकारांत' एवं 'औकारांत' स्त्रीलिंग शब्दों में 'एँ' लगाकर

विशेष : यदि एकवचन में किसी शब्द का अंतिम स्वर 'ऊ' होता है तो 'एँ' लगाकर बहुवचन बनाते समय 'दीर्घ' स्वर 'ऊ' को ह्रस्व 'उ' में बदल दिया जाता है। जैसे- बहू-बहुएँ आदि।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ऋतु	ऋतुएँ	वस्तु	वस्तुएँ
धातु	धातुएँ	धेनु	धेनुएँ
वधू	वधुएँ	गौ	गौएँ

5. इकारांत (इ) या ईकारांत (ई) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' लगाकर :

विशेष : ईकारान्त शब्दों में अंतिम दीर्घ 'ई' को बहुवचन बनाते समय ह्रस्व 'इ' में बदल दिया जाता है जैसे-नदी-नदियाँ, नारी-नारियाँ आदि।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
रश्मि	रश्मियाँ	रीति	रीतियाँ
गति	गतियाँ	नीति	नीतियाँ
जाति	जातियाँ	समिति	समितियाँ
नारी	नारियाँ	नदी	नदियाँ
कॉपी	कॉपियाँ	मक्खी	मक्खियाँ

6. 'इया' अंत वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'या' के स्थान पर 'याँ' लगाकर :

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
खटिया	खटियाँ	डिबिया	डिबियाँ

बिटिया	बिटियाँ	चुहिया	चुहियाँ
लुटिया	लुटियाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ

7. कुछ शब्दों के अंत में गण, वृंद, जन, वर्ग, दल, आदि लगाकर बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
छात्र	छात्रगण	शिक्षक	शिक्षकवृंद
गुरु	गुरुजन	टिड्डी	टिड्डी दल

विशेष : (*i*) हिंदी में कुछ 'अकारांत', 'आकारांत' या 'इकारांत' आदि शब्द ऐसे हैं जिनका शब्द (विभक्ति चिह्न रहित) स्तर पर एकवचन तथा बहुवचन में एक ही रूप रहता है जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
फल	फल	घर	घर
साधु	साधु	मुनि	मुनि
व्यक्ति	व्यक्ति	हाथी	हाथी

किंतु ऐसे शब्दों का विभक्ति चिह्न सहित अर्थात् वाक्य स्तर पर वचन परिवर्तन अवश्य होगा। इनके रूप वाक्य स्तर पर इस प्रकार बनेंगे–

एकवचन / बहुवचन रूप (शब्द स्तर पर)		**बहुवचन रूप (वाक्य स्तर पर)**
फल	:	सभी फलों को उठा लो।
घर	:	सभी लोग घरों में सो रहे हैं।
साधु	:	साधुओं को भोजन करा दो।
मुनि	:	मुनियों ने यज्ञ सम्पूर्ण किया।
व्यक्ति	:	सभी व्यक्तियों को एक स्थान पर इकट्ठा करो।
हाथी	:	मतवाले हाथियों को देखकर सभी डर गये।

नोट : यदि परीक्षा में उपर्युक्त फल, घर, आदि शब्दों का शब्द स्तर पर बहुवचन रूप बनाने को आये तो कभी विभक्ति चिह्न लगाकर उत्तर नहीं देना चाहिए।

जैसे 'फल' का बहुवचन 'फल' तथा 'घर' का बहुवचन 'घर' ही लिखना चाहिए न कि 'फलों' तथा 'घरों'।

(*ii*) 'अ' और 'आ' अंत वाले एकवचन शब्दों के अंतिम स्वर को संबोधन के समय बहुवचन रूप में प्रयुक्त करते समय 'ओ' हो जाता है। जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बालक	बालको	माता	माताओ

उदाहरण–

बालको ! इधर शोर मत करो।

माताओ ! तुम्हें शत् शत् नमस्कार।

(*ii*) अनेक ऐसे भी शब्द हैं जिनका विभक्ति-चिह्नों से रहित तथा विभक्ति चिह्नों सहित दोनों तरह बहुवचन बनता है। जैसे–

शब्द (एकवचन)	**विभक्ति चिह्न रहित (बहुवचन)**	**विभक्ति चिह्न सहित (बहुवचन)**
लड़का	लड़के	लड़कों ने, से आदि
छात्रा	छात्राएँ	छात्राओं ने, से आदि
माता	माताएँ	माताओं से, का आदि
गुड़िया	गुड़ियाँ	गुड़ियों ने, का आदि
नारी	नारियाँ	नारियों ने, से आदि

अभ्यास

वचन परिवर्तन कीजिए।

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बोतल	....	कलम	....
दीवार	....	बात	....
कुत्ता	....	रास्ता	....
भेड़िया	....	कौआ	....
गुड़िया	....	बुढ़िया	....
शक्ति	....	निधि	....

तिथि	....	विधि	....
स्त्री	....	दवाई	....
गाड़ी	....	मिठाई	....
मछली	....	पत्नी	....
बहू	....	लू	....
कन्या	....	माता	....
अध्यापिका	....	आत्मा	....
वार्ता	....	कथा	....

पाठ - 6

तत्सम-तद्भव

भाग - क	भाग - ख
1. हमें सदैव अच्छे **कर्म** करने चाहिए।	1. हमें सदैव अच्छे **काम** करने चाहिए।
2. **सर्प** बिल के अंदर है।	2. **साँप** बिल के अंदर है।

उपर्युक्त 'भाग-क' के वाक्यों में रेखांकित किए गए 'कर्म' तथा 'सर्प' शब्द संस्कृत भाषा के हैं जबकि 'भाग-ख' के वाक्यों में इनके लिए क्रमशः 'काम' तथा 'साँप' शब्दों का प्रयोग किया गया है जो कि हिंदी भाषा के हैं।

हिंदी में संस्कृत के शब्दों का अधिकता के साथ प्रयोग किया जाता है। संस्कृत के कुछ शब्दों को तो हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किया जाता है। जैसे- कर्म, साँप। ऐसे शब्दों को 'तत्सम' कहा जाता है। किंतु संस्कृत के कुछ शब्द हिंदी में थोड़ा रूप बदलकर प्रयुक्त होते हैं। जैसे- काम, साँप। ऐसे शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं।

तत्सम : तत् + सम अर्थात् इसके समान। 'इसके समान' अर्थात् स्रोत भाषा (संस्कृत) के समान। **अतः जो शब्द संस्कृत से हिंदी में अपने मूल रूप में (ज्यों के त्यों) प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।** जैसे-कर्ण, ग्राम, मस्तक, सूर्य, पक्षी, उच्च, चन्द्र, कीट आदि।

तद्भव : तत् + भव अर्थात् 'उससे होने वाले'। 'उससे होने वाले' से भाव है- स्रोत भाषा अर्थात् संस्कृत भाषा से विकसित होने वाले।

अतः संस्कृत भाषा से विकसित होने वाले वे शब्द जो हिंदी में थोड़ा रूप बदल कर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे- कान, गाँव, माथा, सूरज, पंछी, ऊँचा, चाँद, कीड़ा आदि।

कुछ तत्सम और तद्भव शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं :

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंगुलि	उंगली	अंध	अंधा
अँधकार	अंधेरा	अग्नि	आग
अग्र	आगे	अर्ध	आधा
अश्रु	आँसू	अक्षि	आँख

आम्र	आम	आश्रय	आसरा
आश्चर्य	अचरज	उच्च	ऊँचा
उष्ट्र	ऊँट	उज्ज्वल	उजाला
ओष्ठ	होंठ	कर्म	काम
कीट	कीड़ा	कर्ण	कान
काष्ठ	काठ	कुम्भकार	कुम्हार
कुपुत्र	कुपूत	कूप	कुआँ
ग्राम	गाँव	गर्दभ	गधा
ग्राहक	गाहक	ग्रीष्म	गर्मी
गौ	गाय	गृह	घर
गणना	गिनना	घृत	घी
चर्म	चाम	चन्द्र	चाँद
चामर	चँवर	चत्वार	चार
चूर्ण	चूरा	चौरी, चौर्य	चोरी
चौर	चोर	छत्र, छत्रक	छतरी, छाता
छिद्र	छेद	जिह्वा	जीभ
झंकार	झनकार	नख	नाखून
नव	नया	निम्ब	नीम
निद्रा	नींद	नृत्य	नाच
पंच	पाँच	पर्यंक	पलंग
पक्व	पक्का	पादप	पौधा
पाद	पाँव	पत्र	पत्ता
भक्त	भगत	भिक्षा	भीख
भ्रमर	भौंरा	मयूर	मोर
मस्तक	माथा	महिषी	भैंस
मित्र	मीत	मिष्ठ	मीठा
मुख	मुँह	मक्षिका	मक्खी
मुष्टि	मुट्ठी		

लक्ष	लाख	लज्जा	लाज
वधू	बहू	वाष्प	भाप
शिर	सिर	श्वास	साँस
श्वेत	सफेद	शर्करा	शक्कर
शरद्	सर्दी	शाक	साग
सर्प	साँप	सूर्य	सूरज
स्वप्न	सपना	सूत्र	सूत
हस्त	हाथ	हस्ति	हाथी
हास	हँसी	हृदय	हिय

अभ्यास

तद्भव	**तत्सम**	**तद्भव**	**तत्सम**
कबूतर	....	कौआ	....
घी	....	माता	....
जेठ	....	घड़ा	....
ताँबा	....	तेल	....
धीरज	....	नीम	....
प्यास	....	पत्थर	....
बहरा	....	मौत	....

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
कोकिल	....	कच्छप	....
कण्टक	....	काष्ठ	....
कपाट	....	छिद्र	....
प्रहेलिका	....	अष्ट	....
पीत	....	फाल्गुन	....
बाहु	....	हीरक	....

पाठ – 7

उपसर्ग

शब्दांश	**+ मूल शब्द**	**(अर्थ)**	**नवीन शब्द**	**(अर्थ)**
अ	+ न्याय	(इंसाफ)	अन्याय	(इंसाफ के विरुद्ध कार्य)
निर्	+ मूल	(जड़)	निर्मूलह्न	(बिना जड़ का, बर्बाद)

उपर्युक्त मूल शब्द (न्याय) में 'अ' शब्दांश लगाने से 'अन्याय' तथा 'मूल' में 'निर्' शब्दांश लगाने से 'निर्मूल' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है। ये 'अ' तथा 'निर्' उपसर्ग हैं।

अतएव जो शब्दांश किसी शब्द के शुरू में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता ला देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

हिंदी में निम्नलिखित चार प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

I संस्कृत के उपसर्ग

II उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत अव्यय

III हिंदी के उपसर्ग

IV विदेशी भाषाओं के हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले उपसर्ग

I. संस्कृत के उपसर्ग

1. अति (बहुत अधिक)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
अति	+ रिक्त	= अतिरिक्त	अति	+ क्रमण	= अतिक्रमण
अति	+ शय	= अतिशय	अति	+ सार	= अतिसार

विशेष : इ, ई, से परे कोई भिन्न स्वर हो तो दोनों को मिलाकर य् + भिन्न स्वर की मात्रा हो जाती है। जैसे–

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**विशेष कथन**
अति	+ अंत	= अत्यंत	(इ + अं = यं)
अति	+ आचार	= अत्याचार	(इ + आ = या)
अति	+ उत्तम	= अत्युत्तम	(इ + उ = यु)

2. अधि (ऊँचा, श्रेष्ठ)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अधि	+ कार	= अधिकार	अधि	+ नायक	= अधिनायक
अधि	+ भार	= अधिभार	अधि	+ कृत	= अधिकृत

विशेष (*i*)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
अधि	+ अयन	= अध्ययन	(इ + अ = य)
अधि	+ आदेश	= अध्यादेश	(इ + आ = या)

विशेष (*ii*) जब दो समान स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) आपस में मिलते हैं तो वे दीर्घ स्वर बन जाते हैं। जैसे-

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
अधि	+ ईश	= अधीश	(इ + ई = ई)

3. अनु (पीछे, समान)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अनु	+ शासन	= अनुशासन	अनु	+ रोध	= अनुरोध
अनु	+ ग्रह	= अनुग्रह	अनु	+ सार	= अनुसार

4. अप (अनुचित, बुरा, हीन, विपरीत)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अप	+ यश	= अपयश	अप	+ शब्द	= अपशब्द
अप	+ कीर्ति	= अपकीर्ति	अप	+ वाद	= अपवाद

5. अभि (समीप, निकट, ओर)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अभि	+ नेता	= अभिनेता	अभि	+ शाप	= अभिशाप
अभि	+ यान	= अभियान	अभि	+ मान	= अभिमान

विशेष :

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
अभि	+ आगत	= अभ्यागत	(इ + आ = या)
अभि	+ इष्ट	= अभीष्ट	(इ + इ = ई)

6. अव (बुरा, हीन, नीचे या उप आदि)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अव	+ गुण	= अवगुण	अव	+ हेलना	= अवहेलना
अव	+ शेष	= अवशेष	अव	+ नति	= अवनति

7. आ (तक, समेत)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
आ	+ दान	= आदान	आ	+ मरण	= आमरण
आ	+ जीवन	= आजीवन	आ	+ रोहण	= आरोहण

8. उत् (ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर आदि)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
उत्	+ कंठा	= उत्कंठा	उत्	+ पाद	= उत्पाद
उत्	+ थान	= उत्थान	उत्	+ खनन	= उत्खनन

विशेष :

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
उत्	+ गम	= उद्‌गम	'त्' के बाद कवर्ग का तीसरा वर्ण 'ग' होने से त् को 'द्' हो जाता है।
उत्	+ हार	= उद्‌धार	'त' के बाद 'ह' हो तो 'त्' को 'द्' तथा 'ह' को 'ध' हो जाता है।
उत्	+ चारण	= उच्चारण	'त्' के बाद 'च' हो तो 'त्' को 'च्' हो जाता है।
उत्	+ लेख	= उल्लेख	'त्' के बाद 'ल' हो तो 'त' को 'ल्' हो जाता है।

9. उप (निकट, समान, गौण आदि)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
उप	+ कार	= उपकार	उप	+ चार	= उपचार
उप	+ ग्रह	= उपग्रह	उप	+ वन	= उपवन

10. दुर् , दुस् (बुरा, कठिन)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
दुर्	+ आचार	= दुराचार	र् + आ = रा

दुर्	+ नीति	= दुर्नीति	र् + नी = र्नी
दुर्	+ घटना	= दुर्घटना	र् + घ = र्घ
दुस्	+ साहस	= दुस्साहस	स् + स = स्स
दुस्	+ साध्य	= दुस्साध्य	स् + स = स्स
दुस्	+ चरित्र	= दुश्चरित्र	(स् से पूर्व स्वर तथा परे 'च', 'छ' या 'श' हो तो 'स्' को 'श्' हो जाता है)
दुस्	+ शासन	= दुश्शासन	(वही)

11. निर्/निस् (रहित, निषेध, बिना आदि)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
निर्	+ अपराध	= निरपराध	(र् + अ = र)
निर्	+ आदर	= निरादर	(र् + आ = रा)
निर्	+ गुण	= निर्गुण	(र् + गु = र्गु)
निर्	+ विघ्न	= निर्विघ्न	(र् + वि = र्वि)
निस्	+ सहाय	= निस्सहाय	(स् + स = स्स)
निस्	+ सार	= निस्सार	(स् + स = स्स)
निस्	+ चय	= निश्चय	('स्' से पूर्व स्वर तथा परे 'च', 'छ' या 'श' हो तो 'स्' को 'श्' हो जाता है)
निस्	+ छल	= निश्छल	('स्' से पूर्व स्वर तथा परे 'च', 'छ' या 'श' हो तो 'स्' को 'श्' हो जाता है)
निस्	+ फल	= निष्फल	('स्' से पूर्व 'इ' या 'उ' हो और परे 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई हो तो 'स्' को 'ष्' हो जाता है)

12. नि (नीचे, भीतर, निपुणता आदि)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
नि	+ बंध	= निबंध	नि	+ युक्ति	= नियुक्ति
नि	+ वास	= निवास	नि	+ यम	= नियम

13. परा (अधिक, विपरीत)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
परा	+ जय	= पराजय	परा	+ मर्श	= परामर्श
परा	+ क्रम	= पराक्रम	परा	+ शक्ति	= पराशक्ति

14. परि (अधिक, चारों ओर)

उपसर्ग +	मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग +	मूल शब्द	= शब्द रूप
परि	+ श्रम	= परिश्रम	परि	+ भाषा	= परिभाषा
परि	+ सर	= परिसर	परि	+ धान	= परिधान

विशेष :

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
परि	+ ईक्षा	= परीक्षा	(इ + ई = ई)
परि	+ आवरण	= पर्यावरण	(इ + आ = या)

15. प्र (अधिक, आगे)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग +	मूल शब्द	= शब्द रूप
प्र	+ योग	= प्रयोग	प्र	+ क्रिया	= प्रक्रिया
प्र	+ दूषण	= प्रदूषण	प्र	+ चार	= प्रचार

16. प्रति (हरेक, सामने, विरोध)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग +	मूल शब्द	= शब्द रूप
प्रति	+ कार	= प्रतिकार	प्रति	+ क्षण	= प्रतिक्षण
प्रति	+ वर्ष	= प्रतिवर्ष	प्रति	+ शत	= प्रतिशत

विशेष :

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
प्रति	+ एक	= प्रत्येक	इ + ए = ये
प्रति	+ अक्ष	= प्रत्यक्ष	इ + अ = य

17. वि (विशेषता, विरोध, अभाव, भिन्नता आदि)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग +	मूल शब्द	= शब्द रूप
वि	+ भाग	= विभाग	वि	+ चित्र	= विचित्र
वि	+ फल	= विफल	वि	+ पक्ष	= विपक्ष

18. सम् (अच्छा, संयोग, सहित)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
सम्	+ कल्प	= संकल्प	(म् को अनुस्वार)
सम्	+ चय	= संचय	(म् को अनुस्वार)
सम्	+ तोष	= संतोष	(म् को अनुस्वार)
सम्	+ पूर्ण	= संपूर्ण	(म् को अनुस्वार)
सम्	+ मति	= सम्मति	(म से पूर्व म् को द्‌वित्व हो जाता है)

II. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत अव्यय

संस्कृत के कुछ अव्यय भी उपसर्गों की भांति प्रयुक्त होते हैं।

टिप्पणी (अव्यय के सम्बन्ध में)

अविकारी पदों को अव्यय कहते हैं। इनमें लिंग, वचन, कारक, आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-आज, कल, यहाँ, और, के ऊपर, की ओर, अहा ! आदि।

अव्यय पाँच तरह के होते हैं - क्रिया विशेषण, समुच्चयबोधक, सम्बन्धबोधक विस्मयादिबोधक व निपात।

उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होने वाले अव्यय इस प्रकार हैं -

1. अंतर् (भीतर)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
अंतर्	+ मन	= अन्तर्मन	(र् + म = र्म)
अंतर्	+ आत्मा	= अन्तरात्मा	(र् + आ = रा)
अंतर्	+ देशीय	= अन्तर्देशीय	(र् + दे = र्दे)
अंतर्	+ मुखी	= अन्तर्मुखी	(र् + मु = र्मु)

2. अ (अभाव, निषेध, विपरीत, हीन)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अ	+ हिंसा	= अहिंसा	अ	+ ज्ञानी	= अज्ञानी
अ	+ पठित	= अपठित	अ	+ न्याय	= अन्याय

3. अध: (नीचे)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
अध:	+ गति	= अधोगति	(यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो और परे भी 'अ', किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या पाँचवां वर्ण या 'य', 'र', 'ल' ,'व' हो तो विसर्ग को ओ हो जाता है)
अध:	+ मुखी	= अधोमुखी	(- वही -)
अध:	+ पतन	= अधोपतन	(- वही -)
अध:	+ लिखित	= अधोलिखित	(- वही -)

4. अन् (अभाव)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**विशेष कथन**
अन्	+ अर्थ	= अनर्थ	(न् + अ = न)
अन्	+ आचार	= अनाचार	(न् + आ = ना)
अन्	+ इष्ट	= अनिष्ट	(न् + इ = नि)
अन्	+ उचित	= अनुचित	(न् + उ = नु)

5. अलम् (बहुत)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**विशेष कथन**
अलम्	+ कार	= अलंकार	('म्' से परे 'क' - 'भ', 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' हो तो 'म्' को अनुस्वार होता है)
अलम्	+ कृत	= अलंकृत	(- वही -)
अलम्	+ करण	= अलंकरण	(- वही -)

6. कु (बुरा)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
कु	+ पुत्र	= कुपुत्र	कु	+ विचार	= कुविचार
कु	+ प्रथा	= कुप्रथा	कु	+ कर्म	= कुकर्म

7. चिर (बहुत देर)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**			
चिर	+ काल	= चिरकाल	चिर	+ स्थाई	= चिरस्थायी
चिर	+ परिचित	= चिरपरिचित	चिर	+ स्मरणीय	= चिरस्मरणीय

8. तिरस्/तिरः

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**विशेष कथन**
तिरस्	+ कार	= तिरस्कार	(स् + क = स्क)
तिरस्	+ कृत	= तिरस्कृत	(स् + कृ = स्कृ)
तिरः	+ भाव	= तिरोभाव	(विसर्ग को ओ)
			(देखें अधः + गति = अधोगति (क्रम-3)

9. पुनर् (फिर)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
पुनर्	+ जन्म	= पुनर्जन्म	(र् + ज = र्ज)
पुनर्	+ जागरण	= पुनर्जागरण	(र् + जा = र्जा)

10. पुरस् (सामने)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
पुरस्	+ कार	= पुरस्कार	(स् + क = स्क)
पुरस्	+ कृत	= पुरस्कृत	(स् + कृ = स्कृ)

11. पुरा (पहले)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
पुरा	+ तन	= पुरातन	पुरा	+ कालीन	= पुराकालीन
पुरा	+ तत्व	= पुरातत्व	पुरा	+ कथा	= पुराकथा

12. प्राक् (पहले)

प्राक्	+ कथन	= प्राक्कथन	(क् + क = क्क)

विशेष : यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'प्' से परे किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण या कोई स्वर हो तो उन्हें अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे-

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
प्राक्	+ ऐतिहासिक	= प्रागैतिहासिक	('क्' को 'ग्' हो गया तत्पश्चात ग् + ऐ = गै हो गया)
प्राक्	+ वैदिक	= प्राग्वैदिक	(क् को ग् हो गया)

13. प्रादुर् (प्रकट होना)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
प्रादुर्	+ भाव	= प्रादुर्भाव	(र् + भा = र्भा)
प्रादुर्	+ भूत	= प्रादुर्भूत	(र् + भू = र्भू)

14. बहिस्/बहिर्

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
बहिस्	+ कार	= बहिष्कार	(स् को ष)
बहिस्	+ कृत	= बहिष्कृत	(- वही -)
बहिर्	+ गमन	= बहिर्गमन	(र् + ग = र्ग)

बहिर् + मुख = बहिर्मुख (र् + मु = र्मु)

15. सत् (सच्चा)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप		
सत्	+ कर्म	= सत्कर्म	सत्+ पुरुष	= सत्पुरुष

विशेष : (*i*)

'त्' के बाद कवर्ग, तवर्ग, पवर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण अर्थात् 'ग', 'घ', 'द', 'ध', 'ब', 'भ', 'य', 'र', 'ल', 'व' या कोई स्वर हो तो 'त्' को 'द्' हो जाता है।

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
सत्	+ गति	= सद्गति	('त्' को 'द्')
सत्	+ आचार	= सदाचार	('त्' से परे 'आ' स्वर होने के कारण 'त्' को 'द्' हुआ फिर द् + आ = दा हुआ)

विशेष (*ii*) : 'त्' के बाद 'ज' हो तो 'त्' को 'ज्' हो जाता है। जैसे–

सत् + जन = सज्जन (त् को ज्)

विशेष (*iii*) : 'त्' के बाद 'च' होने से 'त्' को 'च्' हो जाता है। जैसे -

सत् + चरित्र = सच्चरित्र = (त् को च्)

16. सह (साथ)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप		
सह	+ चर	= सहचर	सह+ पाठी	= सहपाठी
सह	+ गान	= सहगान	सह+ यात्री	= सहयात्री

17. स्व (अपना)

स्व	+ राज्य	= स्वराज्य	स्व + देश	= स्वदेश
स्व	+ तंत्र	= स्वतंत्र	स्व + जन	= स्वजन

18. स्वयं (अपना)

स्वयं	+ सेवक	= स्वयंसेवक	स्वयं + सिद्ध	= स्वयंसिद्ध
स्वयं	+ वर	= स्वयंवर		

III. हिंदी – उपसर्ग

1. अ (अभाव, निषेध)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अ	+ जर	= अजर	अ	+ टल	= अटल

अन्य शब्द रूप : अशांत, अमर, अथाह आदि।

2. अध (आधा)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अध	+ खिला	= अधखिला	अध	+ मरा	= अधमरा

अन्य शब्द रूप - अधखाया, अधपका, अधजल आदि।

3. अन (निषेध, अभाव)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
अन	+ जाना	= अनजाना	अन	+ मोल	= अनमोल

अन्य शब्द रूप - अनहोनी, अनदेखा, अनपढ़ आदि।

4. उन (एक कम)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
उन	+ तीस	= उनतीस			

विशेष

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	विशेष कथन
उन	+ पचास	= उनचास	(मूल शब्द को उपसर्ग से मिलाते समय 'प' का लोप)
उन	+ साठ	= उनसठ	(मूल शब्द को उपसर्ग से मिलाते समय 'सा' के 'आ' का लोप)
उन	+ अस्सी	= उनासी	(मूल शब्द को उपसर्ग से मिलाते समय 'उन' के अंतिम 'अ' और 'अस्सी' के 'अ' को समान स्वर होने के कारण 'आ' हो गया और साथ ही 'स्' का लोप हो गया।

5. औ/अव (हीन)

उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप	उपसर्ग	+ मूल शब्द	= शब्द रूप
औ	+ गुण	= औगुण	अव	+ गुण	= अवगुण

अन्य शब्द रूप - औघट, औसर आदि।

6. कु/क (बुरा, हीनता)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
कु	+ मार्ग	= कुमार्ग	क	+ पूत	= कपूत

अन्य शब्द रूप - कुढंग, कुचक्र, कुचाल आदि।

(**विशेष** : 'क' उपसर्ग संस्कृत के 'कु' उपसर्ग से विकसित हुआ है।

7. दु (बुरा, हीन, दो)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
दु	+ रंगा	= दुरंगा	दु	+ बला	= दुबला

अन्य शब्द रूप - दुसाध, दुनीति आदि।

8. चौ (चार)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
चौ	+ पाई	= चौपाई	चौ	+ खट	= चौखट

अन्य शब्द रूप - चौगुना, चौराहा, चौमंज़िला आदि।

9. नि (रहित, नहीं)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
नि	+ डर	= निडर	नि	+ पूता	= निपूता

अन्य शब्द रूप - निहत्था, निकम्मा आदि।

10. बिन (अभाव, निषेध)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
बिन	+ खाया	= बिनखाया	बिन	+ देखा	= बिनदेखा

अन्य शब्द रूप - बिन पानी, बिनखिला, बिनमाँगे आदि।

11. भर (पूरा)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
भर	+ पेट	= भरपेट	भर	+ पाई	= भरपाई

अन्य शब्द रूप - भरमार, भरपूर आदि।

12. सु / स (अच्छा)

उपसर्ग	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**	**उपसर्ग**	**+ मूल शब्द**	**= शब्द रूप**
सु	+ पात्र	= सुपात्र	स	+ पूत	= सपूत

अन्य शब्द रूप - सुगंध, सुफल, सरूप आदि।

IV उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
अल	निश्चित	अलबत्ता, अलग़रज, अलबेला
कम	थोड़ा	कमज़ोर, कमसिन, कमबख़्त, कमउम्र
खुश	अच्छा	खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशहाली, खुशनसीब, खुशबू
ग़ैर	बिना, भिन्न	ग़ैरज़रूरी, ग़ैरज़िम्मेदार, ग़ैररस्मी, ग़ैरहाज़िर
दर	में	दरअसल, दरहक़ीकत
ना	अभाव	नालायक, नाकाम, नाकाफी, नाकाबिल, नाचीज़
ब	अनुसार, के साथ	बदौलत, बनाम, बख़ैरियत, बखूबी
बद	बुरा	बदइंतज़ामी, बदकिस्मत, बददुआ, बदतमीज़
बा	साथ अनुसार	बाअसर, बाक़ायदा, बाज़ब्ता, बाअदब, बाइज्ज़त
बे	बिना, बगैर	बेअदब, बेआसरा, बेक़दर, बेग़रज, बेऐब
बिला	बिना, बगैर	बिलाकसूर, बिलालिहाज़, बिलावजह
ला	बिना, नहीं	लाजवाब, लावारिस, लाइलाज, लापरवाह
सर	मुख्य	सरदार, सरकार, सरफ़रोश, सरताज, सरगना
हम	साथ, समान	हमवतन, हमराही, हमजोली, हमसाया, हमशक्ल
हर	प्रत्येक	हररोज़, हरवक्त, हरसाल, हरहाल, हरदम, हरउम्र

एक से अधिक उपसर्गों का एक साथ प्रयोग

कई बार कुछ शब्दों में एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग भी होता है। जैसे–

उपसर्ग	+ उपसर्ग	+ मूल शब्द	= नया शब्द	विशेष कथन
अ	+ प्रति	+ आशित	= अप्रत्याशित	(इ + आ = या)
वि	+ आ	+ करण	= व्याकरण	(इ + आ = या)
अ	+ प्रति	+ अक्ष	= अप्रत्यक्ष	(इ + अ = य)
स्व	+ अभि	+ मान	= स्वाभिमान	(अ + अ = आ)

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द व उपसर्ग अलग-अलग करके लिखिए।

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अतिकोमल	....	....	अत्यधिक	....	....
अध्यक्ष	....	....	अनुसूची	....	....
आजीवन	....	....	दुर्दशा	....	....
दुष्कर	....	....	प्रयत्न	....	....
पराधीन	....	....	विचित्र	....	....
प्रत्यारोप	....	....	विक्रय	....	....
अलौकिक	....	....	कुप्रबंध	....	....
बिनदेखा	....	....	सत्पुरुष	....	....
अनास्था	....	....	स्वचालित	....	....
अधपका	....	....	उनहत्तर	....	....
दुगुना	....	....	कुपोषण	....	....
अधीर	....	....	अटूट	....	....
भरमार	....	....	सजग	....	....
अन्तर्राष्ट्रीय	....	....	अनागत	....	....
चिरायु	....	....	सुपुत्र	....	....
हमराज़	....	....	लापता	....	....
ग़ैरमुनासिब	....	....	बददिमाग़	....	....
बेक़सूर	....	....	सरपंच	....	....

पाठ – 8

प्रत्यय

मूल शब्द	**(अर्थ)**	**+ शब्दांश**	**= नवीन शब्द**	**(अर्थ)**
सन्न	(स्तब्ध)	+ **आटा**	= सन्नाटा	(स्तब्धता, चुप्पी)
कायर	(डरपोक)	+ **ता**	= कायरता	(डरपोकपन)

उपर्युक्त मूल शब्द 'सन्न' में 'आटा' शब्दांश लगाने से 'सन्नाटा' तथा 'कायर' मूल शब्द में 'ता' शब्दांश लगाने से 'कायरता' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आया है। ये 'आटा' तथा 'ता' प्रत्यय हैं।

अतः जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के भेद

I कृत् प्रत्यय

निम्नलिखित दो शब्दों को ध्यान से देखिये –

मिलाप, लड़ाका

इन शब्दों का निर्माण इस प्रकार हुआ है –

मिल	+ आप	= मिलाप,	लड़	+ आका	= लड़ाका
(धातु) +	**(प्रत्यय) =**	**(शब्द रूप)**	**(धातु) +**	**(प्रत्यय)**	**= (शब्द रूप)**

यहाँ 'मिल' धातु में 'आप' प्रत्यय लगाने से 'मिलाप' तथा 'लड़्' धातु में 'आका' प्रत्यय लगाने से 'लड़ाका शब्द बने हैं।' **अतः जो प्रत्यय क्रिया के धातु रूप में जुड़कर विभिन्न शब्दों की रचना करते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।**

नोट *(i)* (क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे- खाना, पीना, मिलना, लड़ना आदि क्रियाओं में खा, पी, मिल तथा लड़ धातुएँ हैं।)

***(ii)* वाक्यों में प्रयोग के समय क्रिया के मूल रूप में परिवर्तन भी हो सकता है।** जैसे 'खा' मूल क्रिया में भी प्रयुक्त हो सकती है। (जैसे-सुरेश, अब खा) तथा परिवर्तित रूप में भी (सुरेश खाता है।) इसी तरह हँस, पढ़, लिख आदि धातुएँ।

यह ध्यान रखें कि प्रत्यय जुड़ने से धातु में कभी-कभी कुछ परिवर्तन आ जाता है। जैसे-

'बूझ' + 'अक्कड़' से 'बुझक्कड़' बना। (अर्थात् 'बूझ' का 'ऊ' अक्कड़ प्रत्यय जुड़ने से 'उ' हो गया।

कृत् प्रत्यय के निम्नलिखित भेद हैं :

1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय : जिन कृत् प्रत्ययों से कर्त्ता का बोध होता है, उन्हें कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

धातु	**+**	**प्रत्यय**	**शब्द रूप**	**विशेष कथन**
बूझ, भूल, घूम	+	अक्कड़	बुझक्कड़, भुलक्कड़, घुमक्कड़	आदि स्वर 'ऊ' को 'उ' तथा अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'अक्कड़'
धम, लड़	+	आका	धमाका, लड़ाका	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आका'।
तैर	+	आक	तैराक	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आक'।
लड़ , पढ़	+	आकू	लड़ाकू, पढ़ाकू	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आकू'।
खेल, अन	+	आड़ी	खिलाड़ी, अनाड़ी	(खेल का 'ए' (े) 'इ' (ि) में परिवर्तित व अंतिम स्वर 'अ' की जगह आड़ी।)
अड़, मर	+	इयल	अड़ियल, मरियल	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'इयल'।
खा, कमा	+	ऊ	खाऊ, कमाऊ	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'ऊ'।
दा	+	ता	दाता	–

2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय : जिन प्रत्ययों से कर्मवाचक शब्दों की रचना होती है, उन्हें कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

धातु	**+**	**प्रत्यय**	**शब्द रूप**	**विशेष कथन**
बिछ, खेल	+	औना	बिछौना, खिलौना	'खेल' का 'ए' (े) इ (ि) में परिवर्तित तथा अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'औना'
ओढ़, सूँघ	+	नी	ओढ़नी, सूँघनी	–

3. करणवाचक कृत् प्रत्यय : जिन कृत् प्रत्ययों से क्रिया के कारण अर्थात् साधन का बोध होता है, उन्हें करणवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

धातु	**+**	**प्रत्यय**	**शब्द रूप**	**विशेष कथन**
बेल, झाड़	+	अन	बेलन, झाड़न	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'अन'
झाड़	+	ऊ	झाड़ू	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'ऊ'
रेत, खेत	+	ई	रेती, खेती	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'ई'

4. **भाववाचक कृत् प्रत्यय :** जिन कृत् प्रत्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं, उन्हें भाववाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

धातु	**+ प्रत्यय**	**शब्द रूप**	**विशेष कथन**
रट, भिड़,	+ अंत	रटंत, भिड़ंत,	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'अंत'
मिल, जल	+ अन	मिलन, जलन	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'अन'
लग, उड़,	+ आन	लगान, उड़ान,	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आन'
मिल	+ आप	मिलाप	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आप'
फैल, बह	+ आव	फैलाव, बहाव	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आव'
लिख, मिल,	+ आवट	लिखावट, मिलावट	अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'आवट'
चिल्ला, घबरा	+ आहट	चिल्लाहट, घबराहट	अंतिम स्वर 'आ' की जगह 'आहट'

क्रियावाचक कृत् प्रत्यय : जिन कृत् प्रत्ययों से क्रिया शब्द वाले विशेषण अथवा किसी विशेष अर्थ वाली क्रियाओं का निर्माण हो, उन्हें क्रियावाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

धातु	**+ प्रत्यय**		**शब्द रूप**
चल, बह, चढ़, गिर	+ ता	=	चलता, बहता, चढ़ता, गिरता
खा, जा, पढ़, रो	+ ता हुआ	=	खाता हुआ, जाता हुआ, पढ़ता हुआ, रोता हुआ
बैठ, उठ, खा	+ ते ही	=	बैठते ही, उठते ही, खाते ही
हँस, गा, चल, खा	+ ते-ते	=	हँसते-हँसते, गाते-गाते, चलते-चलते, खाते-खाते

II तद्धित प्रत्यय

निम्नलिखित दो शब्दों को ध्यान से पढ़िये–

धार्मिक, मधुरता

इन शब्दों का निर्माण इस प्रकार हुआ है :

धर्म + इक = धार्मिक,

(भाववाचक संज्ञा) + (प्रत्यय)　=　(विशेषण शब्द)

मधुर　+ ता　=　मधुरता

(विशेषण शब्द)　+ (प्रत्यय)　=　(भाववाचक संज्ञा)

यहाँ, 'धर्म' शब्द में इक प्रत्यय लगाने से 'धार्मिक' तथा 'मधुर' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाने से 'मधुरता' नए शब्दों का निर्माण हुआ है।

अतः जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों के अंत में लगकर नये शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

तद्धित प्रत्यय के निम्नलिखित भेद हैं :

1. कर्तृवाचक तद्धित : जिस प्रत्यय से किसी कार्य के करने वाले का बोध हो, उसे कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

मूल शब्द	+ प्रत्यय	= शब्द रूप	विशेष कथन
लोहा, सोना	+ आर	= लुहार, सुनार	प्रत्यय जुड़ने से आदि स्वर 'ओ' को 'उ' हो गया)
मुख, रसोई	+ इया	= मुखिया, रसोइया	(अंतिम स्वर के स्थान पर इया)
तेल, शास्त्र	+ ई	= तेली, शास्त्री	(अंतिम स्वर के स्थान पर ई)
बाज़ी, जादू	+ गर	= बाज़ीगर, जादूगर	(-)
पाठ, लेख	+ क	= पाठक, लेखक	(-)
पत्र, साहित्य	+ कार	= पत्रकार, साहित्यकार	(-)
सब्ज़ी, ताँगा	+ वाला	= सब्ज़ी वाला, ताँगे वाला	(ताँगे का 'आ', 'ए', में बदल गया है)
गाड़ी, रथ	+ वान	= गाड़ीवान, रथवान	(-)

2. भाववाचक तद्धित : जिन प्रत्ययों के जुड़ने से शब्द भाववाचक संज्ञाएँ बन जाते हैं उन्हें भाववाचक तद्धित कहते हैं। जैसे-

मूल शब्द	+ प्रत्यय	= शब्द रूप	विशेष कथन
बुरा, भला	+ आई	= बुराई, भलाई	(आ + आ = आ)
मीठा, खट्टा	+ आस	= मिठास, खटास	('ई' को 'इ' हो गया है)
मोटा, बूढ़ा	+ आपा	= मोटापा, बुढ़ापा	('बूढ़ा' के 'ऊ' को 'उ' हो गया है)
चिकना, कड़वा	+ आहट	= चिकनाहट, कड़वाहट	(आ + आ + आ)
बच्चा, लड़का	+ पन	= बचपन, लड़कपन	('बच्चा' के च् का लोप, 'आ' के स्थान पर 'अ')

विशेष : (किंतु पीला, बाल आदि शब्दों में बिना किसी बदलाव के क्रमशः 'पीलापन' तथा 'बालपन' शब्द रूप बनेंगे।

मूल शब्द	+ प्रत्यय = शब्द रूप	विशेष कथन
लेख	+ आवट = लिखावट	('ए' को 'इ' हो गया है)
लाल, काला	+ इमा = लालिमा, कालिमा	(अंतिम स्वर 'अ', 'आ' का लोप)

नोट : किंतु 'गुरु' में 'इमा' प्रत्यय लगाते समय अंतिम स्वर के लोप होने के साथ–साथ आदि स्वर 'उ' का भी लोप होता है और 'गरिमा' शब्द बनता है।)

(**3**) **सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्ययः जो प्रत्यय किसी शब्द के साथ जुड़कर किसी सम्बन्ध का बोध कराते हैं, वे सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।** जैसे–

मूल शब्द	+ प्रत्यय = शब्द रूप	(विशेष कथन)
ससुर	+ आल = ससुराल	(अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'आल')
नानी	+ हाल = ननिहाल	(आदि स्वर 'आ' को 'अ' तथा अंतिम स्वर 'ई' को 'इ')
चाचा, मामा	+ एरा = चचेरा, ममेरा	(आदि व अंतिम स्वर 'आ' को 'अ')

(**4**) **लघुतावाचक तद्धित प्रत्ययः जिन प्रत्ययों से न्यूनता (छोटापन) का बोध हो, वे लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे–**

मूल शब्द	+ प्रत्यय = शब्द रूप	विशेष कथन
झंडा, प्याला, थाल	+ ई = झंडी, प्याली, थाली	(अंतिम स्वर 'आ', 'अ' की जगह 'ई')
ढोल	+ क = ढोलक	–
ढोल	+ की = ढोलकी	–
कोठा	+ री = कोठरी	('कोठा' के अतिंम स्वर 'आ' को 'अ')
छाता	+ री = छतरी	('छाता' के आदि व अंतिम स्वर 'आ' को 'अ').

(**5**) **विशेषणवाचक तद्धित प्रत्ययः जिन प्रत्ययों के जुड़ने से शब्द विशेषण बन जाते हैं, वे विशेषणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –**

मूल शब्द	+ प्रत्यय = शब्द रूप	(विशेष कथन
कल्पना	+ इक = काल्पनिक	(आदि स्वर 'अ' को 'आ' अर्थात् 'क' को 'का' तथा अंतिम स्वर 'आ' के स्थान पर 'इक' प्रत्यय)

दिन	+ इक	= दैनिक		(आदि स्वर 'इ' को 'ऐ' अर्थात् 'दि' के स्थान पर 'दै' तथा अंत में अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'इक' प्रत्यय)
भूगोल	+ इक	= भौगोलिक		(आदि स्वर 'ऊ' को 'औ' अर्थात 'भू' को 'भौ' तथा अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'इक' प्रत्यय)
योग	+ इक	= यौगिक		(आदि स्वर 'ओ' के स्थान पर 'औ' तथा अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'इक' प्रत्यय)
फल	+ इत	= फलित		(अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'इत' प्रत्यय)
अपेक्षा	+ इत	= अपेक्षित		(अंतिम स्वर 'आ' के स्थान पर 'इत' प्रत्यय)
पराजय	+ इत	= पराजित		(अंतिम अक्षर 'य' के स्थान पर 'इत' प्रत्यय)
मानव, स्थान	+ ईय	= मानवीय, स्थानीय		(अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'ईय'):
सभा, क्षमा	+ य	= सभ्य, क्षम्य		(अंतिम स्वर का लोप होने से शेष बचे अंतिम वर्ण को हलंत)
धन, लोभ	+ ई	= धनी, लोभी		(अंतिम स्वर 'अ' की जगह 'ई')
श्री, बुद्धि	+ मान	= श्रीमान, बुद्धिमान		(–)
श्री, बुद्धि	+ मती	= श्रीमती, बुद्धिमती		(–)
ज्ञान, गुण	+ वती	= ज्ञानवती, गुणवती		(–)
दया, कृपा	+ आलु	= दयालु, कृपालु		(अंतिम स्वर के स्थान पर 'आलु' प्रत्यय)
प्यार, मैल	+ आ	= प्यारा, मैला		(अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'आ')
कंकर, चमक	+ ईला	= कंकरीला, चमकीला		(अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'ईला' प्रत्यय)
बल, प्रतिभा	+ शाली	= बलशाली, प्रतिभाशाली		(–)
कर्म, सत्य	+ निष्ठ	= कर्मनिष्ठ, सत्यनिष्ठ		(–)

स्त्रीलिंग बनाने वाले तद्धित प्रत्यय : कुछ प्रत्ययों से स्त्रीलिंग शब्दों का निर्माण होता है। स्त्रीलिंग बनाने वाले प्रमुख तद्धित प्रत्यय इस प्रकार हैं-

मूल शब्द	+ प्रत्यय	= शब्द रूप	विशेष कथन
बेटा, लड़का	+ ई	= बेटी, लड़की	(अंतिम स्वर 'आ' की जगह 'ई')
सुनार, माली, ग्वाला	+ इन	= सुनारिन, मालिन, ग्वालिन	(अंतिम स्वर के स्थान पर 'इन' प्रत्यय)
शिष्य, छात्र	+ आ	= शिष्या, छात्रा	(अंतिम स्वर 'अ' को 'आ')
पंडित, चौधरी	+ आइन	= पंडिताइन, चौधराइन	(अंतिम स्वर के स्थान पर 'आइन')
देवर, नौकर	+ आनी	= देवरानी, नौकरानी	(अंतिम स्वर के स्थान पर 'आनी')
मोर, शेर	+ नी	= मोरनी, शेरनी	(-)

बहुवचन बनाने वाले प्रमुख तद्धित प्रत्यय : कुछ प्रत्ययों से बहुवचन शब्दों का निर्माण होता है। बहुवचन बनाने वाले प्रमुख तद्धित प्रत्यय इस प्रकार हैं -

मूल शब्द	+ प्रत्यय	= शब्द रूप	विशेष कथन
बेटा, लड़का	+ ए	= बेटे, लड़के	(अंतिम स्वर 'आ' को 'ए')
पुस्तक, बहन	+ एँ	= पुस्तकें, बहनें	(अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर एँ')
लता, धातु	+ एँ	= लताएँ, वस्तुएँ	(अंतिम स्वर 'आ' तथा 'उ' वाले शब्दों के साथ 'एँ' प्रत्यय)
बहू, वधू	+ एँ	= बहुएँ, वधुएँ	(ऊ को उ)
नदी, टोपी	+ याँ	= नदियाँ, टोपियाँ	(ई को इ)

उर्दू के प्रमुख तद्धित प्रत्यय

मूल शब्द	+ प्रत्यय	= शब्द रूप	विशेष कथन
साल, रोज़	+ आना	= सालाना, रोज़ाना	(-)
नेक, खून	+ ई	= नेकी, ख़ूनी	(-)
खज़ाना	+ ची	= खज़ानची	('आ' को 'अ' अर्थात् 'ना' को 'न')
दवा, दौलत	+ खाना	= दवाख़ाना, दौलतखाना	(-)
घड़ी, जिल्द	+ साज़	= घड़ीसाज़, जिल्दसाज़	(-)
सफर, ज़फर	+ नामा	= सफरनामा, ज़फरनामा	(-)

मेहर, दर	+ बान	= मेहरबान, दरबान	(-)
ख़रीद, मदद	+ गार	= ख़रीददार, मददगार	(-)
फूल, कदर	+ दान	= फूलदान, कदरदान	(-)
सुरमा, चूहा	+ दानी	= सुरमेदानी, चूहेदानी	('आ' को 'ए' अर्थात् 'मा' को 'मे' तथा 'हा' को 'हे')
रिश्वत, सूद	+ ख़ोर	= रिश्वतख़ोर, सूदखोर	(-)
चमचा, दादा	+ गीरी	= चमचागीरी, दादागीरी	(-)
मुकद्दमा, धोखा	+ बाज़	= मुकद्दमेबाज़, धोखेबाज़	('आ' को ए अर्थात् 'मा' को 'मे' तथा 'खा' को 'खे')
दर्द, शर्म	+ नाक	= दर्दनाक, शर्मनाक।	(-)

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द व प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए।

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
चाँदनी	....	....	चढ़ावा	....	....
चलान	....	....	दिखावट	....	....
चालक	....	....	कड़वाहट	....	....
पीलापन	....	....	बड़प्पन	....	....
खिलाड़ी	....	....	मधुरता	....	....
मूर्खता	....	....	उड़ान	....	....
सांसारिक	....	....	ऐतिहासिक	....	....
ढोलकिया	....	....	अच्छाई	....	....
फुफेरा	....	....	असली	....	....
अपमानित	....	....	उपेक्षित	....	....
पूज्य	....	....	क्षेत्रीय	....	....
गौरवशाली	....	....	पथरीला	....	....
ईर्ष्यालु	....	....	धर्मनिष्ठ	....	....
पुत्रवती	....	....	शक्तिमान	....	....
ठकुराइन	....	....	जादूगर	....	....

पाठ -9

विराम चिह्न

1. रोको, मत जाने दो।
2. रोको मत, जाने दो।
3. कौन? सुरेश!
4. कौन सुरेश?

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'रोको' शब्द के बाद ' , ' चिह्न प्रयुक्त हुआ है जिसके कारण वाक्य का अर्थ है- जाने वाले को रोक लो, उसे जाने मत दो। दूसरे वाक्य में 'रोको मत' के बाद ',' चिह्न प्रयुक्त हुआ है जिसके कारण वाक्य का अर्थ है-जाने वाले को रोको मत अपितु उसे जाने दो। तीसरे वाक्य में 'कौन' शब्द के बाद? चिह्न लगाकर फिर 'सुरेश' शब्द के बाद '!' चिहन प्रयुक्त हुआ है अर्थात् कहने वाले ने पहले पूछा कि (वहाँ) कौन है, फिर पहचान लिया कि सुरेश है या संभावना प्रकट की कि सुरेश है। चौथे वाक्य में 'सुरेश' शब्द के बाद ' ?' चिह्न से प्रकट होता है कि वह सुरेश को जानता ही नहीं है अथवा वह समझ ही नहीं पाया कि कि सुरेश के बारे में बात हो रही है।

इन सभी वाक्यों में यदि ये चिह्न न लगें हों तो इन वाक्यों का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा। ये चिह्न वाक्यों के अर्थ को केवल स्पष्टता व सार्थकता ही प्रदान नहीं करते अपितु इन चारों वाक्यों के अर्थ में परिवर्तन भी इन्हीं चिह्नों के कारण हुआ है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए हमें बोलने की गति में परिवर्तन करना पड़ता है। इसी गति के कारण हम बोलते समय आवश्यकता के अनुसार रुकते हैं। **अत: वाक्य में भावों की स्पष्टता के लिये रुकना ही 'विराम' कहलाता है और विराम को प्रकट करने के लिये जो चिह्न प्रयोग में आते हैं, वे विराम-चिह्न कहलाते हैं।**

प्रमुख विराम चिह्न

हिंदी में प्राय: सभी विराम-चिह्न अंग्रेज़ी से आए हैं और अब स्थिति यह है कि वे अब हिंदी के अभिन्न अंग बन गये हैं। प्रमुख विराम चिह्न इस प्रकार हैं -

क्र.सं.	नाम	चिह्न	क्र.सं.	नाम	चिह्न
1.	पूर्ण विराम	।	2.	अल्पविराम	,
3.	अद्‌र्ध विराम	;	4.	प्रश्नवाचक	?
5.	विस्मयादिबोधक चिह्न	!	6.	अपूर्ण विराम	:
7.	योजक	—	8.	निर्देशक	—

9. उद्धरण चिह्न	‘‘ ’’	10. विवरण चिह्न	:—
11. कोष्ठक	( )	12. लाघव चिह्न	०
13. त्रुटिबोधक	⋏	14. तुल्यतासूचक चिह्न	=
15. पुनरुक्तिबोधक	’’ ’’ ’’	16. समाप्ति बोधक चिह्न –×–, –0–	

1. पूर्ण विराम (।) - इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है-

(क) प्रश्नवाचक और विस्मयादिवाचक वाक्यों को छोड़कर सभी वाक्यों में समाप्त होने पर पूर्ण विराम (।) लगाया जाता है। जैसे-

(*i*) वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है।

(*ii*) वीना सुबह मंदिर जाती है।

(ख) अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में भी पूर्ण विराम लगाया जाता है। जैसे :

(*i*) उसने मुझसे पूछा कि तुम्हारा जन्म दिन कब आता है।

(*ii*) राही ने मुझसे पूछा कि यह सड़क किधर जाती है।

2. अल्पविराम (,)- जहाँ पढ़ते समय अल्प अर्थात् थोड़े समय के लिये रुकना हो, वहाँ लिखते समय अल्पविराम चिह्न (,) का प्रयोग होता है। अल्पविराम चिह्न (,) का निम्नलिखित स्थानों पर प्रयोग होता है :

(क) एक स्थान पर प्रयुक्त हुए समान महत्त्व वाले पदों, क्रियाओं अथवा वाक्यांशों के मध्य :

(*i*) **समान महत्त्व वाले पदों में -** नरेश, गौतम और सुरेश खेल रहे हैं।

(*ii*) **समान महत्त्व वाली क्रियाएँ -** खेलो, कूदो और मौज करो।

(*iii*) **समान महत्त्व वाले वाक्यांश -** मैं सवेरे उठता हूँ, स्नान करता हूँ, तैयार होता हूँ और दफ़्तर चला जाता हूँ।

(ख) जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति हो या उन पर बल दिया जाए, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे-

(*i*) हाँ, हाँ, मैं वहाँ ज़रूर जाऊँगा।

(*ii*) नहीं, नहीं, वह ऐसा काम नहीं कर सकता।

(ग) पर, परन्तु, किन्तु, अतः, इसीलिए आदि से शुरू होने वाले उपवाक्यों से पहले अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे-

(*i*) मुकेश तो अच्छा लड़का है, पर बुरी संगत में पड़ गया है।

(*ii*) मैंने उसे बहुत समझाया, परन्तु उसे कुछ समझ नहीं आया।

(*iii*) वह गरीब है, किंतु लालची नहीं है।

(घ) हाँ, नहीं, तो, बस, सचमुच, अच्छा आदि से प्रारंभ होने वाले वाक्यों में इन शब्दों के बाद अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे–

(*i*) हाँ, तुम कल आ जाना।

(*ii*) नहीं, यह काम बहुत मुश्किल है।

(*iii*) तो, अब मेरी बारी है।

(*iv*) बस, थोड़ा समय और दे दीजिए।

(ङ) विशेषण उपवाक्य का प्रयोग वाक्य के बीच हो तब अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे–

(*i*) वह बच्चा, जो रो रहा था, कहाँ गया ?

(*ii*) वह लड़का, जिसे कल इनाम मिला था, किधर है ?

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'जो रो रहा था' और दूसरे वाक्य में 'जिसे कल इनाम मिला था' – इन विशेषण उपवाक्यों का वाक्य के बीच में प्रयोग होने से इनके शुरू तथा अंत में अल्पविराम का प्रयोग हुआ है।

(च) वाक्य में आए शब्द-युग्मों को अलग करने के लिये अल्पविराम का प्रयोग होता है–

सच और झूठ, पाप और पुण्य, अच्छे और बुरे का फैसला आज होकर ही रहेगा।

(छ) तारीख और सन् को अलग-अलग दिखाने के लिए अल्पविराम का प्रयोग होता है–

15 अगस्त, सन् 1947

26 जनवरी, सन् 1950

(ज) संख्या के अंकों के बाद भी अल्पविराम का प्रयोग होता है–

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 आदि।

(ञ) पत्र एवं प्रार्थना पत्र में निम्नलिखित स्थानों पर अल्पविराम का प्रयोग होता है–

(*i*) **अभिवादन में** – प्रिय मित्र, पूज्य माता जी, सेवा में, आदि में।

(*ii*) **समापन में** – आपका आज्ञाकारी, भवदीय, आपका, आदि में।

(*iii*) **पता लिखते समय** – अमिताभ बच्चन, 10 वाँ रास्ता, प्रतीक्षा भवन, मुम्बई।

(ट) जो संज्ञा संबोधन कारक में आती है, उसके बाद अल्पविराम प्रयुक्त होता है-

(i) बच्चो, इधर मत खेलो।

(ii) रणबीर, मेरी बात सुनो।

(ठ) उद्धरण चिह्न के पूर्व भी अल्पविराम का प्रयोग होता है-

(i) लोकमान्य तिलक ने कहा, ''स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।''

(ii) महात्मा बुद्ध ने कहा, ''शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि यह पाप तथा अनाचार की जननी है।''

विशेष : 'कि' के बाद अल्पविराम का प्रयोग अनुचित है। जैसे-

(i) अध्यापक ने पूछा कि, तुमने पाठ याद क्यों नहीं किया।

(ii) मैंने उससे कहा कि, वह कल आएगा।

उपर्युक्त वाक्यों में 'कि' के बाद अल्पविराम का किया गया प्रयोग अनुचित है।

3. **अद्र्ध विराम (;)** - जहाँ अल्प विराम से अधिक किंतु पूर्ण विराम से कम रुकना हो, वहाँ अद्र्ध विराम का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है-

(क) संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों में जहाँ परस्पर सम्बन्ध न हो, वहाँ अद्र्धविराम चिह्न प्रयुक्त होता है। जैसे-

कपड़े प्रैस करने हैं ; दूध गर्म करना है ; सब्ज़ी लानी है ; आधे घंटे में यह सब कुछ नहीं हो सकता।

(ख) विरोधपूर्ण कथनों को अलग करने के लिये अद्र्ध विराम का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) चन्द्रशेखर आज़ाद नहीं रहे ; वे अमर हो गये।

(ii) सुरेश बहुत बहादुर है ; मगर वह डरता भी है।

4. **प्रश्नवाचक (?)** - जिस विराम चिह्न का प्रयोग प्रश्नबोधक वाक्यों के अंत में होता है, वह 'प्रश्नवाचक' कहलाता है। जैसे-

(i) आपका क्या नाम है ? (ii) तुम्हारा घर कहाँ है ?

विशेष : (क) जब एक ही प्रकार के प्रश्नसूचक वाक्य साथ-साथ प्रयुक्त

हों तो बीच में अल्पविराम तथा अंत में प्रश्न चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे- तुम कौन हो, कहाँ से आये हो और क्या चाहते हो ?

(ख) अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न की बजाय पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे :

मैं नहीं जानता कि वह कहाँ रहता है। किंतु यदि प्रधान वाक्य से भी प्रश्न का बोध हो तो अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होगा। जैसे-

(*i*) क्या आप जानते हैं कि वह कहाँ रहता है ?

(*ii*) क्या आपको पता है कि वह आज आएगा ?

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'क्या आप जानते हैं' तथा 'क्या आपको पता है' - प्रधान वाक्य हैं तथा इनसे भी प्रश्न का बोध हो रहा है अतएव अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में प्रश्न वाचक चिह्न ' ?' प्रयुक्त हुआ है।

5. **विस्मयादिबोधक (!) - जिस विराम चिह्न का प्रयोग विस्मय, हर्ष, शोक, भय, घृणा आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्द के बाद किया जाता है, वह विस्मयादिबोधक चिह्न कहलाता है।** इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है- जैसे-

विस्मय	हैं ! मनिंदर सिंह कक्षा में प्रथम आया है।
हर्ष	अहा! कितना सुन्दर दृश्य है।
शोक	हाय ! उसकी माँ का देहांत हो गया।
भय	उफ ! कितना दर्दनाक दृश्य है।
घृणा	धिक् ! महापुरुषों की निंदा करते हो।
स्वीकार	जी हाँ ! आप कल आ जाइए।
चेतावनी	सावधान! आगे खतरा है।
आशीर्वाद	दीर्घायु हो! मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

6. **अपूर्ण विराम (:) - अद्‌र्ध विराम से अधिक किंतु पूर्ण विराम से कम समय के विराम के लिए अपूर्ण विराम चिह्न प्रयुक्त होता है। किसी कथन को अलग बताते समय इसका प्रयोग किया जाता है। इसे उपविराम भी कहते हैं। जैसे-**

(*i*) नीचे लिखे शब्दों के वाक्य बनाइए : बेरोज़गारी, समानता, वार्तालाप।

(*ii*) अंतरिक्ष परी : कल्पना चावला

7. योजक (-) - इसका प्रयोग समान स्तर के दो शब्दों को जोड़ने के लिए और तुलना करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है -

(क) जहाँ दोनों खंड समान रूप से प्रधान हों परन्तु 'और' शब्द लुप्त रहे, वहाँ योजक चिह्न प्रयुक्त होता है।

जैसे-माता-पिता, राम-श्याम, नर-नारी आदि।

(ख) शब्दों की पुनरुक्ति में —

द्वार-द्वार, गाँव-गाँव, आदि।

(ग) विपरीतार्थक शब्दों के बीच :

अधिक-कम, निरक्षर-साक्षर, अपेक्षा-उपेक्षा आदि।

(ङ) जहाँ एक अर्थ वाले दो शब्दों का इकट्ठा प्रयोग होता है :

खेल-कूद, देख-भाल, छान-बीन, चलना-फिरना, आदि।

(च) यदि शब्दों के बीच 'का', 'के', 'की' लुप्त रहे, तो उनके बीच योजक चिह्न प्रयुक्त होता है। जैसे -

(*i*) हमें लोक-कल्याण के लिये काम करना चाहिए।

(*ii*) भगत सिंह सच्चे देश-भक्त थे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'लोक-कल्याण' तथा 'देश-भक्त' का अर्थ क्रमश: 'लोक का कल्याण' तथा 'देश का भक्त' है। वाक्यों में आए शब्दों में 'का' लुप्त है और उसकी जगह योजक (-) प्रयुक्त हुआ है।

(छ) संज्ञा, विशेषण तथा 'सा', 'सी' के बीच योजक चिह्न लगता है। जैसे -

(*i*) रवीश कमज़ोर - सा लड़का है।

(*ii*) वह गरीब-सी लड़की लग रही थी।

(*iii*) सभा में बहुत-से लोग मौजूद थे।

8. निर्देशक (—) योजक चिह्न (-) से इसका आकार थोड़ा बड़ा होता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है-

(क) संवादों (वार्तालापों) में वक्तासूचक शब्दों के बाद : जैसे-

सिद्धेश्वर — कैसी तबीयत है राय साहब की?

सरोजिनी — बिल्कुल गुम-सुम हो गए हैं। सवेरे डॉक्टर को बुलाने कृपा को भेजा था। पर वह उस समय मिला नहीं।

सिद्धेश्वर — तो दुबारा भेजना चाहिए था। यह क्या, कृपा नाथ को क्या हो गया ?

सरोजिनी — ऐसे ही तबीयत खराब हो गई, सो गया है।

(ख) उद्धरण के अंत में लेखक के नाम के पूर्व इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-

न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है।
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है। — मैथिलीशरण गुप्त

(ग) निक्षेपित वाक्यों के आगे और पीछे निर्देशक चिह्न लगता है।

(*i*) मेरा मित्र जॉन — जब भी दिल्ली आता है — मुझे मिलकर जाता है।

(*ii*) हमारे अधिकारी श्री बोधनप्रसाद — जो पालमपुर गये हुए थे —आज वापिस आ रहे हैं।

विशेष : निक्षेपित का अर्थ है — जमा किया हुआ, जोड़ा हुआ। अत: वाक्य के बीच में कहीं जोड़े गए स्वतंत्र वाक्य को निक्षेपित वाक्य कहते हैं। जैसे उपर्युक्त पहले वाक्य में 'जब भी दिल्ली आता है' तथा दूसरे वाक्य में, 'जो पालमपुर गये हुए थे।' स्वतंत्र वाक्य हैं और उनके पहले और बाद में निर्देशक चिह्न (—) लगाया गया है।

कई बार वाक्य के बीच में निक्षेपित पदों के आगे और पीछे भी निर्देशक चिह्न प्रयुक्त हो जाता है। जैसे—

(*i*) मर्दों की तरह अंग्रेज़ो से लड़ने वाली — रानी लक्ष्मीबाई — को कौन नहीं जानता।

(*ii*) निर्गुण संत कवियों में अग्रगण्य—कबीर—सभी धर्मों में आदरणीय हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'रानी लक्ष्मीबाई' तथा 'कबीर' निक्षेपित पद हैं, इसलिए इनके पूर्व व बाद में निर्देशक चिह्न प्रयुक्त हुआ है।

(घ) किसी वाक्य में वाक्यांश को स्पष्ट करने के लिए —

(*i*) हिंदी में वचन दो प्रकार के होते हैं — एक वचन तथा बहुवचन।

(*ii*) हिंदी में लिंग दो प्रकार के होते हैं — पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग।

(ङ) जैसे, उदाहरण आदि शब्दों के बाद —

(*i*) पुरुषजाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं। जैसे—

लड़का, शेर, माली आदि।

(*ii*) क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए काल का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं। उदाहरण— मुकेश ने पाठ पढ़ा।

(च) 'निम्नलिखित हैं', 'नीचे देखिए' आदि के बाद निर्देशक चिह्न लगता है।

जैसे— नित्य पुल्लिग के उदाहरण निम्नलिखित हैं —

खटमल, कौआ, भेड़िया, तोता आदि।

(छ) विषय-विभाग सम्बन्धी हरेक शीर्षक के आगे —

(*i*) भाषा — (*ii*) लिपि — (*iii*) वर्ण — आदि।

9. उद्धरण चिह्न (' ' तथा " ") — इसके दो रूप हैं - इकहरा (' ') और दुहरा (" ")

(क) इकहरा उद्धरण चिह्न (' ')

(*i*) **किसी व्यक्ति का नाम या उपनाम या किसी पुस्तक का नाम इकहरे उद्धरण चिह्न (' ') द्वारा लिखा जाता है। जैसे—**

जयशंकर प्रसाद जी के प्रमुख नाटक हैं — 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'।

(*ii*) **किसी वर्ण, शब्द, वाक्य या वाक्यांश को स्पष्ट करने के लिए इकहरा उद्धरण चिह्न लगता है। उदाहरण —**

जब 'र्' के साथ 'इ' या 'ई' की मात्रा आ जाए, तो इसे मात्रा के बाद लिखा जाता है। जैसे — बर्फी, कुर्सी आदि।

'पुस्तक' शब्द जातिवाचक संज्ञा है।

(ख) दुहरा उद्धरण चिह्न (" ") - किसी के द्वारा कहे गये कथन या किसी पुस्तक की पंक्ति या अनुच्छेद को ज्यों के त्यों उद्धृत करने में दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे -

(*i*) रामधारी सिंह दिनकर जी ने कहा है, "अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है"।

(*ii*) नेपोलियन ने कहा है, "असंभव एक शब्द है जो मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है।"

10. विवरण चिह्न (:-) — जब वाक्यांशों के विषय में कुछ सूचना या निर्देश आदि देना हो तो विवरण चिह्न प्रयोग में लाया जाता है। अपूर्ण

के साथ निर्देशक का चिह्न लगाकर 'विवरण चिह्न' (:-) बनता है। जैसे-

(*i*) पाठ का सार इस प्रकार है :-

(*ii*) एकांकी के नायक का चरित्र चित्रण इस प्रकार है :-

11. **कोष्ठक ( ) —** कोष्ठक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है-

(*i*) **किसी पद या पदबंध का अर्थ देना हो या कोई सूचना देनी हो तो उसे कोष्ठक के भीतर लिखते हैं। जैसे-**

- चाचा जी (जवाहर लाल नेहरू) बच्चों से बहुत प्यार करते थे।
- रामस्वरूप — (शंकर से) चाय और लीजिए।

(*ii*) **क्रमवाचक अंकों या अक्षरों के साथ —**

(1), (2), (3), (क) (ख) (ग) आदि।

12. **लाघव चिह्न (०) : किसी बड़े अंश का संक्षिप्त रूप लिखने के लिये लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसे संक्षेपसूचक चिह्न भी कहते हैं। जैसे-**

पं० (पंडित), कृ० प० उ० (कृप्या पन्ना उलटिये), डॉ० (डॉक्टर), बी० ए० (बैचलर ऑफ आर्टस) ई० (ईस्वी)

13. **त्रुटिबोधक (⋏) : जब लिखते समय कोई शब्द या अंश त्रुटि से लिखना रह जाता है तो इस चिह्न का प्रयोग कर उस शब्द को ऊपर लिख दिया जाता है। जैसे-**

(*i*) भगत सिंह ने देश ⋏ (की) खातिर अपना बलिदान दिया।

(*ii*) हमें हमेशा अहिंसा के ⋏ (मार्ग) पर चलना चाहिए।

14. **तुल्यतासूचक चिह्न (=) — इस चिह्न का प्रयोग समानता अथवा अर्थ प्रकट करने के लिये किया जाता है। जैसे-**

$4 \times 4 = 16$

हिम + आलय = हिमालय

15. **पुनरुक्तिबोधक चिह्न ('' '' '') - जब ऊपर लिखी हुई बात को या वाक्यांश को फिर से नीचे लिखना होता है तो नीचे ठीक उन्हीं शब्दों के नीचे पुनरुक्तिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-**

(*i*) विशेषण की उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।
क्रिया '' '' '' '' ''

(*ii*) गणित के प्रश्न हल करते समय इसका काफी प्रयोग होता है। जैसे–

(क) सोहनलाल एक काम को 10 दिन में करता है।

(ख) मोहनलाल '' '' '' 20 '' '' '' '' आदि।

16. समाप्तिबोधक चिह्न (– × –, – 0 –) : समाप्तिबोधक चिह्न का प्रयोग किसी निबंध, लेख अथवा ग्रंथ आदि की समाप्ति पर किया जाता है। जैसे– अंत में कहा जा सकता है कि समय का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। कबीर ने ठीक ही कहा है —

काल्ह करै सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब।

– 0 –

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों में सही विराम-चिह्न लगाइए :

1. भारत वेस्टइंडीज़ के बीच कल एक दिवसीय मैच खेला गया
2. नहीं मैंने ऐसा वायदा कभी नहीं किया
3. अहा मेरे भाई को परीक्षा में प्रथम आने पर छात्रवृत्ति मिली
4. साथियो बिना संघर्ष किए हमें कभी सफलता नहीं मिलेगी
5. राजा दशरथ के चार पुत्र थे राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न
6. लाला लाजपतराय पंजाब केसरी को कौन नहीं जानता
7. माँ प्यार से बेटा चल खाना खा ले
8. सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
9. मेरी बहन मास्टर ऑफ़ साइंस एम एस सी की परीक्षा देने दिल्ली गयी है
10. निरंतर कार्य साधना में लगे रहना ही जीवन है आलस्य तो रोग है
11. क्या कहा वह हमारे साथ घूमने नहीं जाएगा
12. मैंने तो उसे आमंत्रित किया था वह आया ही नहीं
13. अध्यापक ने कहा कल समय पर स्कूल आ जाना
14. मेरा क्या नाम है मेरे पिता जी क्या करते हैं मैं कहाँ रहता हूँ मैं आपको यह सब क्यों बताऊँ
15. हाय राम कैसा अनर्थ हो रहा है

पाठ-10

अपठित गद्यांश

ऐसे गद्यांश को अपठित गद्यांश कहते हैं जो कि पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक से सम्बद्ध नहीं होता। प्रश्न-पत्र निर्माता प्रश्न-पत्र में किसी पत्रिका, समाचार पत्र या अन्य किसी भी पुस्तक (पाठ्यक्रम के अतिरिक्त) से कोई गद्यांश दे सकता है। इसलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक रचनाओं को नियमित रूप से पढ़ने की आदत को विकसित करें। विद्यार्थी जितना पढ़ने की आदत डालेंगे उतना ही वे अपठित गद्यांशो को पढ़कर समझने लगेंगे। इससे अपठित गद्यांशों के अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना उनके लिए सरल होगा।

अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएंगे :

1. पहले तीन प्रश्न गद्यांश की विषय-सामग्री से सम्बन्धित होंगे।
2. चौथा प्रश्न गद्यांश में से दो कठिन शब्दों के अर्थ लिखने से संबंधित होगा।
3. पाँचवाँ प्रश्न गद्यांश का शीर्षक/केंद्रीय भाव लिखने से संबंधित होगा।

'अपठित गद्यांश' के अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :

(i) गद्यांश को कम से कम दो बार पढ़ लेना चाहिए। यदि फिर भी उसका मूल भाव स्पष्ट न हो तो उसे एक बार फिर पढ़ लेना चाहिए। जब गद्यांश का मूल भाव समझ आ जाए तो उसके उत्तर देना आसान हो जाएगा।

(ii) गद्यांश की विषय सामग्री से संबंधित प्रश्नों के उत्तर उसमें ही होते हैं। अत: अपनी ओर से उनके उत्तर नहीं देने चाहिए।

(iii) पूछे गए कठिन शब्दों के अर्थ भली-भाँति सोच विचार कर लिखने चाहिए। इसमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

(iv) जब गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट हो जाए तो उस का संक्षिप्त शीर्षक सोच-विचार कर लिखना चाहिए।

उदाहरण

I. सभ्य आचरण और व्यवहार ही शिष्टाचार कहलाता है। जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्त्व है। बातचीत करते समय सभी को एक दूसरे से शिष्टाचार से बात करनी चाहिए। छोटों को बड़ों से और बड़ों को छोटों से बात करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। शिष्टाचार का पालन करने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं होती। शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई ग़लती हो जाती है तो वे खेद प्रकट करते हैं और सहज ही अपनी ग़लती स्वीकार करते हैं। विद्यार्थी-जीवन में तो शिष्टाचार का और भी अधिक महत्त्व होता है क्योंकि यही शिक्षा जीवन का आधार बनती है। स्कूल की प्रार्थना-सभा में पंक्ति में आना-जाना, कक्षा में शोर न करना, अध्यापकों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना, सच बोलना, सहपाठियों से मिलजुल कर रहना, स्कूल को साफ सुथरा रखना, स्कूल की संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना व छुट्टी के समय धक्कामुक्की न करना शिष्ट बच्चों की निशानी है। ऐसे बच्चों को सभी पसंद करते हैं।

प्रश्न 1. शिष्टाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर— सभ्य आचरण और व्यवहार को शिष्टाचार कहते हैं ।

प्रश्न 2. शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई ग़लती हो जाती है तो वे क्या करते हैं ?

उत्तर— शिष्ट व्यक्ति ग़लती होने पर वे खेद प्रकट करते हैं और अपनी ग़लती मान लेते हैं।

प्रश्न 3. कैसे बच्चों को सभी पसंद करते हैं ?

उत्तर— शिष्टाचार का पालन करने वाले बच्चों को सभी पसंद करते हैं।

प्रश्न 4. 'सभ्य' और 'खेद' शब्दों के अर्थ लिखें।

उत्तर— **सभ्य** - अच्छा व्यवहार करने वाला, **खेद** - अफ़सोस।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्याश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर— शिष्टाचार का पालन।

II. आसमान बादल से घिरा ; धूप का नाम नहीं, ठंडी पुरवाई चल रही है। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है - यह कौन है! यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे

को, पंक्तिबद्ध, खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर, स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर। बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं ; मेड़ पर खड़ी औरतों के होठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती हैं ; हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं ; रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं। बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू।

प्रश्न 1. कौन सी स्वर तरंग लोगों के कानों में झंकार उत्पन्न कर देती है ?

उत्तर— बादलों के घिरने व ठंडी पुरवाई के बीच जब बालगोबिन भगत गीत गाते हैं तो उनके गीतों की स्वर तरंग लोगों के कानों में झंकार उत्पन्न कर देती है।

प्रश्न 2. गीत गाते समय बालगोबिन भगत क्या कर रहे हैं ?

उत्तर— गीत गाते समय बालगोबिन भगत अपने खेत में धान की रोपनी कर रहे हैं।

प्रश्न 3. बालगोबिन भगत के संगीत का वहाँ उपस्थित लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर— बालगोबिन भगत के गीत को सुनकर बच्चे खेलते हुए झूमने लगते हैं ; मेड़ पर खड़ी औरतें गुनगुनाने लगती हैं ; हलवाहों के पैर गीत की ताल के अनुसार उठने लगते हैं; धान की रोपाई करने वालों की अगुंलियाँ एक विचित्र क्रम से चलने लगती हैं।

प्रश्न 4. 'हलवाहे' तथा 'मेड़' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर— **हलवाहे :** दूसरे के खेतों में हल जोतने का काम करने वाले।
मेड़ : खेत की हदबंदी, खेत के इर्द-गिर्द मिट्टी का बनाया हुआ घेरा।

प्रश्न 5. इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर— बाल गोबिन भगत।

III. पहले खेल कूद को लोग पढ़ाई में बाधा मानते थे। ऐसी मानसिकता सचमुच ग़लत थी। अब लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आया है। लोग जान चुके हैं कि पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी जीवन में विशेष महत्त्व है। खेलों से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। उसमें चुस्ती और फुर्ती आती है। पसीना बह जाने

से शरीर की गंदगी बाहर निकलती है और रक्त का संचार बढ़ जाता है। शरीर के साथ-साथ खेलों का बुद्धि पर भी प्रभाव पड़ता है। कहा भी गया है, ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।'' शिक्षा का उद्देश्य है— विद्यार्थी की बहुमुखी प्रतिभा का विकास करना। खेलें शिक्षा के इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक बनती हैं। खेल के मैदान में विद्यार्थी अनुशासन, समय का पालन, सहयोग, सहनशीलता, नेतृत्व, दृढ़ता, दल—भावना आदि गुणों को सहज ही सीख जाता है। इन सब बातों को देखते हुए ही सरकारें भी खिलाड़ियों को अधिकाधिक सुविधाएँ देने में प्रयासरत हैं।

प्रश्न 1. खेलों के बारे में लोगों की पहले क्या मानसिकता थी ?

उत्तर— लोग खेलों को पढ़ाई में बाधक मानते थे।

प्रश्न 2. खेलों से हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर— खेलों से शरीर स्वस्थ रहता है। उसमें चुस्ती और फुर्ती आती है।

प्रश्न 3. सरकारें खिलाड़ियों के लिए क्या कर रही हैं ?

उत्तर— सरकारें खिलाड़ियों को अधिक से अधिक सुविधाएँ देने का प्रयास कर रही हैं।

प्रश्न 4. 'बाधा' और 'नेतृत्व' शब्दों का अर्थ लिखिए।

उत्तर— **बाधा** - रुकावट, **नेतृत्व** - अगुआई।

प्रश्न 5. इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर— खेलों का महत्त्व।

IV. हिमराशि और हिमपात बड़े सौन्दर्य की वस्तु हैं, पर इनके दर्शन करने का आनंद सभी नहीं ले सकते। हरिद्वार, ऋषिकेश और देहरादून से मसूरी जैसी हिमपात की भूमि दूर नहीं है, पर हमारे लोगों को प्रायः उसके सौन्दर्य को नेत्रों द्वारा पान करने की लालसा नहीं होती। आज यातायात सुलभ है। रेडियो वाले शाम को ही लोगों को सूचित कर देते है कि मसूरी में बर्फ फुट-दो-फुट पड़ी हुई है, कल बड़ा सुंदर समाँ होगा, तो कितने ही लोग यहाँ आ सकते हैं। दिल्ली से कार द्वारा आने से पाँच घंटे से ज़्यादा नहीं लगेंगे। सहारनपुर से दो घंटे भी नहीं, और देहरादून से तो पौन घंटा ही। अब लोगों में कुछ रुचि जगने लगी है और हिमपात देखने के लिये वे सैंकड़ों की तादाद में आते हैं। ग्रीष्म में आनंद लूटने के लिए अधिक लोग यहाँ आते हैं। वही बात हिमदर्शन के लिये

भी लोगों में आ सकती है, पर हिम का दर्शन साधारण आदमी के बस की बात नहीं है। नीचे का आपका ओवरकोट यहाँ की सर्दी को रोक नहीं सकता। यहाँ और मोटा गरम स्वैटर चाहिए। चमड़े की जर्सी या फतुई अधिक सहायक हो सकती है। मोटे कोट-पैण्ट के अतिरिक्त मोटा ओवरकोट, पैरों में मोटा ऊनी मोज़ा और फूल बूट चाहिए। कान और सर ढकने के लिये चमड़े या ऊन की टोपी और हाथों में चमड़े के दस्ताने भी चाहिए।

प्रश्न 1. 'नेत्रों द्वारा पान करना' का क्या अर्थ है ?

उत्तर— 'नेत्रों द्वारा पान करना' का अर्थ है- जी भर कर देखना/निहारना।

प्रश्न 2. मसूरी में बर्फ पड़ने की सूचना कौन दे देता है ?

उत्तर— मसूरी में बर्फ पड़ने की सूचना रेडियो द्वारा दे दी जाती है।

प्रश्न 3. मसूरी में किस ऋतु में अधिक लोग आनन्द लूटने जाते हैं ?

उत्तर— ग्रीष्म ऋतु में आनंद लूटने के लिए अधिक लोग मसूरी जाते हैं।

प्रश्न 4. 'हिमपात' और 'मोज़ा' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर— **हिमपात** - बर्फ गिरना, **मोज़ा** - जुराब।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर— मसूरी में हिमपात।

अभ्यास

I. जगदीश चंद्र बसु जीव-विज्ञान के साथ-साथ अन्य विषयों गणित, संस्कृत, लैटिन आदि में भी असाधारण थे। इसी कारण उन्हें कॉलेज में छात्रवृत्ति भी मिली। उन्हें सन् 1884 में कैम्ब्रिज से प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक की उपाधि मिली। इसके बाद वे स्वदेश लौट आए। यहाँ आकर कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुए। इस कॉलेज में भारतीय अध्यापकों को अंग्रेज़ी अध्यापकों की अपेक्षा कम वेतना मिलता है। जगदीश चंद्र बसु बड़े स्वाभिमानी थे। उन्होंने इस बात का विरोध किया। वे तीन साल तक इस कॉलेज में अध्यापन व अनुसंधान कार्य करते तो रहे परन्तु बिना वेतन के। अन्त में उनकी काम के प्रति निष्ठा और उत्साह देखकर कॉलेज के संचालकों को उनके प्रति अपनी राय बदलनी पड़ी और पूरा वेतन दिया जाने लगा। अत: भारतीय अध्यापकों के प्रति इस कॉलेज में जो ग़लत रवैया था, उसको उन्होंने सर्वथा बदल दिया।

प्रश्न 1. जगदीश चंद्र बसु को कॉलेज से छात्रवृत्ति क्यों मिली ?

प्रश्न 2. जगदीश चंद्र बसु किस विषय के प्रोफेसर नियुक्त हुए ?

प्रश्न 3. जगदीश चंद्र को पूरा वेतन क्यों दिया जाने लगा ?

प्रश्न 4. 'असाधारण' तथा 'अनुसंधान' शब्दों के अर्थ लिखिए।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

II. संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़ चित्त मनुष्य हो गए हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चंद्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आईं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही रही —

"चंद्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार।
पै दृढ़ श्री हरिश्चंद्र को, टरै न सत्य विचार।"

महाराणा प्रतापसिंह जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परंतु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा की चिन्ता जितनी अपने को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं। एक बार एक रोमन राजनीतिक बलवाइयों के हाथ में पड़ गया। बलवाइयों ने उससे व्यंग्यपूर्वक पूछा, "अब तेरा किला कहाँ है ?" उसने हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दिया, "यहाँ।" ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए यही बड़ा भारी गढ़ है।

प्रश्न 1. संसार में किन लोगों ने मरते दम तक सत्य का साथ नहीं छोड़ा ?

प्रश्न 2. महाराणा प्रताप सिंह ने अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखकर भी लोगों की बात क्यों नहीं मानी ?

प्रश्न 3. राजा हरिश्चंद्र की क्या प्रतिज्ञा थी ?

प्रश्न 4. 'सम्मति' तथा 'मर्यादा' शब्दों के अर्थ लिखिए।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

III. वल्लभभाई की विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने की इच्छा आरंभ से ही थी। वे अपनी प्रैक्टिस में से कुछ रुपया भी इसके निमित्त बचाकर रखने लगे और इस संबंध में उन्होंने एक विदेशी कंपनी से पत्र-व्यवहार भी जारी रखा। जब विदेशी कंपनी ने उनकी विदेश-यात्रा की स्वीकृति का पत्र उन्हें भेजा तो वह पत्र उनके बड़े भाई के हाथ पड़ गया। अंग्रेज़ी में दोनों का

नाम वी. जे. पटेल होने के कारण यह गड़बड़ी हो गई। विट्ठलभाई ने जब वल्लभभाई से कहा कि मैं तुमसे बड़ा हूँ, मुझे पहले विदेश जाने दो, तो वल्लभभाई ने न केवल उन्हें जाने की अनुमति दी, बल्कि उनके ख़र्च का उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर ले लिया। इस घटना के तीन वर्ष बाद जब सन् 1908 में बड़े भाई विलायत से वापस लौट आए, तभी वल्लभभाई सन् 1910 में विलायत जा सके। बड़े भाई के लिए इतना त्याग करना उनके व्यक्तित्व की विशालता का परिचायक है।

प्रश्न 1. वल्लभभाई की विलायत जाकर कौन-सी परीक्षा पास करने की इच्छा थी ?

प्रश्न 2. विदेशी कम्पनी द्वारा विदेश यात्रा की स्वीकृति का पत्र भेज देने पर भी वल्लभभाई विदेश क्यों नहीं गये ?

प्रश्न 3. वल्लभभाई विदेश कब गये ?

प्रश्न 4. 'निमित्त' तथा 'अनुमति' शब्दों के अर्थ लिखिए।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

IV. यह संसार क्षण-भंगुर है। इसमें दुःख क्या और सुख क्या ? जो जिससे बनता है, वह उसी में लय हो जाता है-इसमें शोक और उद्वेग की क्या बात है ? यह संसार जल का बुद्‌बुदा है, फूटकर किसी रोज़ जल में ही मिल जायेगा, फूट जाने में ही बुद्‌बुदे की सार्थकता है। जो यह नहीं समझते, वे दया के पात्र हैं। रे मूर्ख लड़की, तू समझ। सब ब्रह्माण्ड ब्रह्मा का है और उसी में लीन हो जायेगा। इससे तू किसलिए व्यर्थ व्यथा सह रही है ? रेत का तेरा भाड़ क्षणिक था, क्षण में लुप्त हो गया, रेत में मिल गया। इस पर खेद मत कर, इससे शिक्षा ले। जिसने लात मारकर उसे तोड़ा है, वह तो परमात्मा का केवल साधन मात्र है। परमात्मा तुझे नवीन शिक्षा देना चाहते हैं। लड़की, तू मूर्ख क्यों बनती है ? परमात्मा की इस शिक्षा को समझ और परमात्मा तक पहुँचने का प्रयास कर।

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार यह संसार क्या है ?

प्रश्न 2. लड़की को किस बात पर खेद था ?

प्रश्न 3. लेखक ने किसे परमात्मा का केवल साधन मात्र कहा है ?

प्रश्न 4. 'क्षणिक' तथा 'नवीन' शब्दों के अर्थ लिखिए।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

V. सन् 1908 ई. की बात है। दिसंबर का आखिर या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो-चार दिन पूर्व कुछ बूँदा-बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ मैं झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने ज़ोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कौन-सा कसूर बन पड़ा। डरते-डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भय दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा- ''इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेज़ी से जाना, जिससे शाम की डाक में चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी जरूरी हैं।''

प्रश्न 1. शीत की भयंकरता और क्यों बढ़ गयी थी ?

प्रश्न 2. लेखक को घर किसने बुलाया था ?

प्रश्न 3. लेखक को घर जाने में किस का डर सता रहा था ?

प्रश्न 4. 'आशंका' तथा 'भय' शब्दों के अर्थ लिखिए।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

पाठ –11

अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद-लेखन गद्य की एक विधा है। **जब किसी सूक्ति, विचार, घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किन्तु सुसंगठित एवं सारगर्भित ढंग से लिखा जाता है, उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं।** निबन्ध और अनुच्छेद में वहीं अंतर है जो नाटक और एकांकी तथा उपन्यास और कहानी में है। निबंध में जहाँ विषय से सम्बन्धित विचारों को समग्र रूप से बाँधा जाता है, वहीं अनुच्छेद में विषय को संतुलित एवं सटीक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। छोटे-छोटे वाक्य एवं कसी हुई रचना-अनुच्छेद लेखन की मुख्य विशेषताएँ हैं।

अनुच्छेद-लेखन में निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिएँ –

1. अनुच्छेद-लेखन में शुरू से अंत तक एक ही अनुच्छेद होना चाहिए।
2. अनुच्छेद-लेखन में भूमिका या उपसंहार की आवश्यकता नहीं होती। अत: सीधे विषय से ही शुरू करना चाहिए।
3. अनुच्छेद में यदि शब्दों की सीमा निर्धारित की गई है तो अनुच्छेद उसी के आस-पास होना चाहिए।
4. अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
5. अनुच्छेद-लेखन में एक वाक्य का दूसरे से सम्बन्ध होना चाहिए। इससे बड़ी सरलता से विषय स्पष्ट हो जाता है।
6. भाषा विषय के अनुरूप होनी चाहिए। यदि विषय विचार प्रधान है तो उसमें तर्क अधिक होना चाहिए। यदि अनुच्छेद भावात्मक है तो उसमें अनुभूति की प्रधानता होनी चाहिए।
7. अनुच्छेद के विषय सरल, रुचिपूर्ण तथा आसपास की घटनाओं से संबंधित होने चाहिए।
8. अनुच्छेद की हर बात व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध होनी चाहिए।

यहाँ कुछ अनुच्छेदों को उदाहरण स्वरूप दिया जा रहा है।

नए स्कूल में मेरा पहला दिन

मैं नौवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैंने इसी साल नए स्कूल में प्रवेश लिया है। इस स्कूल में पढ़ते हुए मुझे चार महीने हो गये हैं किन्तु मुझे आज भी इस स्कूल में मेरा पहला दिन अच्छी तरह याद है। मेरे लिये यह दिन बड़ा ही यादगार व रोमांचकारी था। मेरे पिता जी ने मुझे नयी किताबें, कॉपियाँ और बैग खरीदकर दिया। मैं बस में बैठकर स्कूल पहुँच गया। मैं पहली बार बस से स्कूल में गया। मुझे बहुत अच्छा लगा। स्कूल पहुँचते ही हम कक्षा अध्यापक के साथ सुबह की प्रार्थना सभा में आ गए। वहाँ प्रिंसिपल ने नये विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणादायक बातें बतायीं। इसके बाद स्कूल के पुराने विद्यार्थियों ने नौवीं कक्षा में नए प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों का एक-एक पेन देकर स्वागत किया। उन्होंने हमें प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, कम्प्यूटर का कमरा, स्टाफ रूम, कैंटीन, मेडीकल रूम आदि भी दिखाए। अर्धावकाश के समय मेरे कुछ नए मित्र बन गये। हम सभी ने मिलकर भोजन किया। खेल के पीरियड में मैंने फुटबॉल खेली। समय होने पर जब पूरी छुट्टी हुई तो हम पंक्तियों में बस में जा बैठे और हँसते-हँसते बातें करते घर आ गये। सचमुच, मैं आज भी वह दिन याद करके भाव विभोर हो जाता हूँ।

मोबाइल फोन और विद्यार्थी

आज मोबाइल फोन सभी की ज़िंदगी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। मोबाइल ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अपने विभिन्न इस्तेमालों के कारण मोबाइल फोन काफी प्रचलित हो चुका है। समाज का हर वर्ग अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार इससे लाभ उठा रहा है। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय- हर स्तर के विद्यार्थी की पहली पसंद मोबाइल बन चुका है। आज विद्यार्थी मोबाइल पर इंटरनेट की मदद से कहीं भी बैठे वांछित सामग्री को डाउनलोड करके और उसका प्रिंट लेकर अपनी पढ़ाई को गति प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त देश-विदेश के विभिन्न कॉलेजों में प्रवेश, प्रतियोगिताओं, परीक्षा-परिणामों, नौकरी आदि से संबंधित भरपूर जानकारी वह इसी से एकत्रित करता है किंतु विद्यार्थियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो इसका दुरुपयोग करता है। ऐसे विद्यार्थी आपस में घंटों बेकार में गप्पे हाँकने, ज़रूरत से ज़्यादा मैसेज भेजने, वीडियो गेम्ज़ खेलने, चित्र खींचने और नये-नये मोबाइल खरीदने और उनकी ही

बातें करते रहने में अपना समय बर्बाद करते हैं। अतः ऐसे विद्यार्थियों को इसकी उपादेयता समझनी चाहिए और इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

पुस्तकालय के लाभ

पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है जहाँ हम विभिन्न महापुरुषों, विद्वानों, आलोचकों, साहित्यकारों, लेखकों, समाज सुधारकों आदि के अनुभवों और विचारों को पढ़कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। निस्संदेह जिस प्रकार जीवित रहने के लिये शुद्ध हवा, पानी, भोजन की आवश्यकता होती है, उसी तरह ज्ञान-पिपासा को शांत करने का उत्तम आहार पुस्तकें हैं। इनकी उपयोगिता को समझते हुए ही आज विद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थानों, गाँवों, कालोनियों आदि में पुस्तकालय खोले जाते हैं। पुस्तकालयों में पुस्तकों के अलावा विभिन्न विषयों की मैग़ज़ीनें, समाचार पत्र, एनसाइक्लोपीडिया आदि भी उपलब्ध रहते हैं। हमें पुस्तकों के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। जिस पुस्तक को जहाँ से लें, उसे पढ़कर वहीं रख देना चाहिए। आज अनेक पुस्तकालयों में इंटरनेट की भी सुविधा है जिससे विद्यार्थी अपनी आवश्यकतानुसार कोई भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। समाज में एक ऐसा भी वर्ग होता है जो महँगी पुस्तकें नहीं खरीद सकता, उनके लिए तो पुस्तकालय किसी वरदान से कम नहीं है। अतः यदि पुस्तकालय की इतनी उपयोगिता है तो हमें वहाँ बिना शोरगुल किए, चुपचाप शांतिपूर्वक बैठकर इससे अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

स्वास्थ्य और व्यायाम

बुज़ुर्गों ने ठीक ही कहा है कि स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी संपत्ति है। कई लोग ज़मीन-जायदाद, रुपये और पैसे को ही सम्पत्ति मानते हैं। ऐसे लोग इन्हें कमाने में ही सारा जीवन भागदौड़ करते रहते हैं। यह सत्य है कि धन के बिना ज़िंदगी में कोई भी कार्य संभव नहीं किंतु अपने शरीर को दाँव पर लगाकर धन कमाने का कोई औचित्य नज़र नहीं आता। सेहत का भी तो ख्याल रखना चाहिए। जवानी में तो शरीर साथ दे देता है किंतु उम्र ढलने पर कई बीमारियाँ घेर लेती हैं, तब हम स्वास्थ्य की चिंता करते हैं। योग गुरुओं के पास जाकर व्यायाम के आसन सीखते हैं। किंतु यह बात जीवन में शुरू से ही याद रखनी चाहिए कि स्वस्थ शरीर के लिए सबसे ज़रूरी है - व्यायाम। व्यायाम करने से हमारा शरीर सुंदर और मज़बूत बनता है। शरीर में आलस्य नहीं आता अपितु चुस्ती-फुर्ती बनी रहती है। व्यायाम का सबसे

सरल व सशक्त साधन है- रोज़ाना सुबह-शाम की सैर व दो या तीन किलोमीटर दौड़ना। इसे जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ और स्वस्थ शरीर पाएँ।

रामलीला देखने का अनुभव

मैंने पहले कभी रामलीला नहीं देखी थी। इस बार मैंने अपने मित्रों के साथ रामलीला देखने का कार्यक्रम मनाया। हमारे घर से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर ही रामलीला का आयोजन होता था। रामलीला 9:30 बजे शुरू होती थी किन्तु हम रोज़ाना 9 बजे ही जाकर बैठ जाते थे। पहले दिन श्रवण कुमार व राम जन्म से संबंधित दृश्य दिखाए गए जो मुझे बहुत अच्छे लगे। दूसरी रात सीता स्वयंवर, लक्ष्मण-परशुराम संवाद दिखाया गया। तीसरी रात्रि में राम वनवास तथा चौथी रात्रि में भरत का राम से मिलन आदि के बड़े ही मार्मिक दृश्य दिखाए गए। पाँचवीं रात्रि में सीता हरण, छठी रात्रि में राम का सुग्रीव और हनुमान से मिलन, राम द्वारा बाली का वध, हनुमान का लंका में जाकर रावण से संवाद व लंका दहन के दृश्यों को बखूबी पेश किया गया। सातवीं रात्रि रामलीला की अंतिम रात्रि थी। इस रात्रि को रावण-अंगद संवाद में जहाँ अंगद की वीरता को दिखाया गया वहीं लक्ष्मण-मूर्छा में राम की कारुणिक दशा का सुंदर मंचन किया गया। सारी रामलीला में सभी पात्रों का अभिनय सजीव व स्वाभाविक लगता था। अंतिम रात्रि राम ने रावण को युद्ध में ललकारा और लड़ाई के इसी दृश्य के साथ रामलीला समाप्त हो गई। उसी समय यह घोषणा की गयी कि रामचंद्र द्वारा रावण-वध दशहरा ग्राऊंड में किया जाएगा। मुझे पता ही नहीं चला कि ये सात दिन रामलीला में कैसे बीत गए। मुझे अगले साल फिर रामलीला का इंतज़ार रहेगा।

मधुर वाणी

कबीरदास जी ने कहा है- ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय।। कबीर आगे लिखते हैं-कागा काको धन हरै, कोयल काको देत। मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनी करि लेत। अर्थात् कौआ किसका धन चुराता है? और कोयल किसे कुछ देती है? कौए की कर्कश आवाज़ सुनकर उसे सब उड़ा देते हैं और कोयल भी किसी को कुछ देती नहीं किंतु उसकी मधुर वाणी सबका मन मोह लेती है। अत: हमें हमेशा मधुर वचन बोलने चाहिए। कभी भी मुँह से किसी के प्रति अपशब्द नहीं निकालने चाहिए। जो कड़वा बोलता है उसे कोई भी पसंद नहीं करता है जबकि मधुर वाणी इनसान को सर्वप्रिय बना

देती है। संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भतृहरि ने भी मधुर वाणी को ही सच्चा आभूषण कहा है। अत: सभी मनुष्यों के लिए उचित है कि अपनी वाणी में मधुरता लाएँ।

हिंदी भाषा की उपयोगिता

आज जन साधारण की यह मानसिकता बन चुकी है कि केवल अंग्रेज़ी सीखकर ही हम उन्नति कर सकते हैं। जबकि सच यह है कि हिंदी भाषा के बल पर भी हम जीवन में तरक्की कर सकते हैं। इसके लिए हिंदी भाषा का समुचित ज्ञान अपेक्षित है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी विषय व हिंदी माध्यम के आधार पर उच्च शिक्षा ग्रहण की जा सकती है। आज देश में विभिन्न मंत्रालयों, आयोगों, बैंकों, संस्थाओं द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में हिंदी माध्यम से परीक्षा देने का विकल्प उपलब्ध है। हिंदी के माध्यम से शिक्षा, जनसंचार, मीडिया, दूरदर्शन, सिनेमा आदि क्षेत्रों से भी जुड़ा जा सकता है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में अपने पाँव पसार चुकी हैं जो अपने उत्पादों को बेचने व बढ़ावा देने के लिए हिंदी का सहारा ले रही हैं क्योंकि हिंदी भारत में सम्पर्क भाषा का काम करती है। वैश्वीकरण के कारण आज हिंदी अनुवादकों की भी माँग बढ़ गई है। बढ़ती नेटवर्किंग के कारण भी आज हिंदी की उपयोगिता है।

जब मेरी माँ बीमार पड़ गयीं

जब भी मैं प्रात:काल सोकर उठता तो हमेशा माँ को रसोई घर में काम करते हुए देखता। एक दिन प्रात: मुझे पिता जी ने उठाया और माँ के बुखार के बारे में बताया। मैंने माँ का हाल पूछा तो माँ ने मुझे बिना चिंता किए स्कूल जाने के लिए कहा। मैंने देखा कि बीमारी के बावजूद भी माँ मेरे स्कूल बैग में टिफिन तैयार करके रख चुकी थीं। स्कूल पहुँचा तो देखा कि मैं पानी की बोतल और रूमाल तो घर पर ही भूल गया था क्योंकि माँ मुझे हमेशा जाते समय सभी चीजों की याद करवातीं। स्कूल से घर आया तो पिताजी ने बाज़ार से लाया खाना खिलाया जो केवल मिर्च मसालों से भरा था। मुझे ध्यान आया कि मैं रोज़ माँ के हाथ का खाना खाने में नख़रे दिखाता किन्तु अब मुझे माँ के हाथ के बने खाने का स्वाद सताने लगा। संध्या के समय पिताजी ने दूध गरम करके दिया तो उसमें वे चीनी डालना ही भूल गये थे। मुझे आज सारा घर अस्त-व्यस्त लग रहा था। मुझे आज माँ की मदद लिये बिना ही होमवर्क करना पड़ा। रात को मैंने माँ के बताए अनुसार खिचड़ी बनायी। दवा असर दिखाने लगी और माँ का बुखार कुछ कम हो चुका था। मैंने भगवान से माँ के शीघ्र

स्वस्थ होने की कामना की और संकल्प किया कि मैं और घर के बाकी सदस्य भी घर के कामों को सीखकर माँ की मदद किया करेंगे। अगले दिन सोकर उठा तो माँ को पहले की ही तरह रसोई-घर में पाया। घर फिर से माँ के खाने की खुशबू से महक उठा। भगवान करे ! माँ हमेशा स्वस्थ रहे।

मैंने गर्मियों की छुट्टियाँ कैसे बितायीं

हमें हर साल अक्सर जून के महीने में गर्मियों की छुट्टियाँ होती हैं। छुट्टियों से एक दिन पहले हर कोई कहता है, 'स्कूल बंद, छुट्टियों का लो आनन्द।' इस बार की इन छुट्टियों में मैं अपनी मम्मी के साथ शिमला गया। वहाँ मेरे नाना-नानी और मामा-मामी रहते हैं। मैं छुट्टियों का काम अपने साथ ले गया। मेरे मामा जी सुबह मुझे और मेरे ममेरे भाई को छुट्टियों का काम कराते और रोज़ शाम को कहीं न कहीं घुमाने ले जाते। शिमला शहर के मध्य एक बड़ा और खुला स्थान 'रिज' है जहाँ से ऊँची-ऊँची चोटियों के दृश्यों ने मेरा मन मोह लिया। रिज के समीप ही 'लक्कड़ बाज़ार' है। जहाँ से मैंने लकड़ी की बनी चीजें और स्मृति चिह्न खरीदे। वहाँ मैंने इंस्टीच्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़ सेंटर भी देखा जोकि एक प्रतिष्ठित शोध संस्थान है। इसके अतिरिक्त वहाँ के काली बाड़ी मंदिर, जाखू मंदिर आदि भी बहुत मनमोहक हैं। जाखू मंदिर तो शिमला की सबसे ऊँची चोटी पर है जहाँ से शहर का सुंदर नज़ारा देखा जा सकता है। सचमुच, मैंने पहले इस तरह की प्राकृतिक सुंदरता के दर्शन कभी नहीं किये थे। छुट्टियाँ समाप्त होने से तीन दिन पहले हम लोग अपने घर वापिस आ गये किंतु गर्मियों की छुट्टियों में शिमला में बिताए दिन मेरी यादों के अभिन्न अंग बन गये हैं।

जब मैं मॉल में शॉपिंग करने गयी

कुछ दिन पहले मुझे अपनी सखी से शहर में नये खुले शॉपिंग मॉल के बारे में पता चला। मेरी वहाँ जाने की उत्सुकता देखकर मेरे माता-पिता ने मुझे वहाँ शॉपिंग करवाने का प्रोग्राम बनाया। ज्यों ही हम मॉल पहुँचे तो हम उस भव्य इमारत को देखकर दंग रह गये। हमने अंदर प्रवेश करके देखा तो वहाँ कपड़े, जूते, खिलौने, आभूषण, कॉस्मैटिक्स, इलैक्ट्रॉनिक्स आदि उत्पादों के भारतीय व विदेशी ब्राँड एक ही छत के नीचे उपलब्ध थे। मुझे एक पार्टी ड्रैस खरीदनी थी तो वहाँ अलग-अलग ब्राँड की इतनी विभिन्नता थी कि मुझे चुनाव करना ही मुश्किल लग रहा था। फिर भी मैंने एक ड्रैस और सैंडिल खरीदे और मेरे पापा ने भी अपने लिए कपड़े खरीदे।

स्वचालित सीढ़ियों के द्वारा एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल तक जाने का आनन्द ही कुछ और था। जब हम वहाँ घूम-घूम कर थक गये तो वहाँ 'फूड कोर्ट' में गये और पसंदीदा खाना खाया। फिर मेरे भाई ने फिल्म देखने के लिए कहा और मॉल की ही ऊपरी मंज़िल में बने थियेटर में हमने फिल्म देखी और घर आ गये। सचमुच, मॉल की शॉपिंग करना रोमांचकारी था।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' सूक्ति का अभिप्राय है कि इस दुनिया में दूसरों को उपदेश देने वाले बहुत हैं। अपने दोषों को लोग नज़रअंदाज़ कर देते हैं। इस तरह नज़रअंदाज़ करने से उनके दोष पक जाते हैं जबकि वे दूसरों के सामने इस तरह व्यवहार करते हैं मानो वे दूध के धुले हों। ऐसे लोग बात-बात में लम्बे चौड़े भाषण देने लग जाते हैं। ऐसा वे अपनी कमियों को छिपाने के लिए करते हैं। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि उनके इस दिखावे को भी दूसरे लोगों द्वारा कहीं न कहीं नोट किया जाता है। जब ऐसे लोगों का पर्दाफाश होता है और सच्चाई सामने आती है तो पश्चात्ताप के सिवाय उनके पास कोई चारा नहीं रह जाता। ऐसे लोगों की बातों पर लोगों का विश्वास उठ जाता है। जिसने भी अपना आचरण सुधारा या जो आचरणवान सत्यनिष्ठ व्यक्ति हुए हैं, उनकी बातों पर दुनिया विश्वास करती है। महात्मा बुद्ध ने भी अपने शिष्यों से कहा था कि अपने दीपक स्वयं बनो अर्थात् सच्चे मन से अपने दोषों को दूर करके प्रकाशदीप बना जा सकता है।

परीक्षा से एक दिन पूर्व

परीक्षा का नाम सुनते ही भला किस विद्यार्थी के हाथ पाँव नहीं फूल जाते ? मेरा भी कुछ ऐसा ही अनुभव रहा है। यद्यपि मैंने आठवीं कक्षा की परीक्षा की तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी किन्तु न जाने क्यूँ परीक्षा से एक दिन पूर्व मुझे अजीब सी घबराहट महसूस होने लगी। ऐसा लग रहा था कि मुझे कुछ भी याद नहीं है। मेरी माता जी मेरे लिए खाना लेकर आयीं तो मेरे आँसू बहने लगे। माथे पर पसीना आ रहा था। जब माता जी ने इसका कारण पूछा तो मैं और भी ज़ोर से रोने लगा। मेरे माता-पिता को यह समझते देर न लगी कि हमेशा की तरह मेरी ऐसी हालत पेपर के एक दिन पहले की है। उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा कि मैंने स्कूल में सभी टेस्टों में अच्छे अंक लिए हैं और वे रोज़ मुझसे कुछ भी सुनते हैं तो मैं बिल्कुल सही जवाब देता हूँ। अत: मुझे घबराने की आवश्यकता नहीं है। इससे मुझे

सांत्वना मिली और मेरे पिता जी ने मेरी दोहराई करवाई। तत्काल ही मेरी घबराहट दूर हो गई। मैंने खाना खाया और निश्चिन्त होकर रोल नंबर पर्ची, पेनॅ, पेंसिल आदि कवर में संभालकर सो गया।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

दु:ख-सुख सब कहूँ परत है, पौरुष तजहु न मीत। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। अर्थात् दु:ख और सुख तो सभी पर आते हैं किंतु हमें पौरुष नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि हार और जीत तो केवल मन के मानने या न मानने पर ही निर्भर करती है। जो जीवन में मुसीबतों से हार मान लेता है, उसे मुसीबतें और भी जकड़ लेती हैं और जो मुसीबतों से विकट परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं छोड़ता, उसके आगे तो मुसीबतें भी घुटने टेक देती हैं। अत: मन ही परम शक्ति है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन की अपार शक्ति को समझना चाहिए। मन में नकारात्मक सोच की अपेक्षा सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। ज़रा सोचो, पतझड़ के समय जब वृक्ष के सारे पत्ते झड़ जाते हैं तो बसंत आने पर क्या पेड़ फिर से हरा नहीं होता? रात के बाद क्या सुबह नहीं होती? अत: मन की लगाम कस कर पकड़ कर उसे लक्ष्य की ओर बार-बार लगाना चाहिए और नकारात्मक विचारों से मन को पूरी तरह हटाना चाहिए। जब मन काबू में हो गया, फिर देखिए, ज़िंदगी कैसे सरपट भागती है!

दहेज प्रथा : एक सामाजिक कलंक

दहेज का अर्थ है ऐसी सम्पत्ति जो कि विवाह के अवसर पर वधू पक्ष की ओर से वर पक्ष को दी जाती है। दहेज की यह प्रथा दुनिया के अनेक देशों में है किंतु भारत में यह अधिकांशत: कुरीति के रूप में विद्यमान है। प्राचीन समय में लड़की के माता-पिता अपनी खुशी, श्रद्धा व सामर्थ्य अनुसार अपनी बेटी को उपहार स्वरूप ज़रूरत की चीज़ें देते थे किन्तु आज दहेज की परम्परा इतना विकृत रूप धारण कर चुकी है कि यह समाज पर कलंक बन गयी है। वर पक्ष वाले वधू पक्ष वालों से मुँह माँगी चीज़ें माँगते हैं। यदि वधू पक्ष वाले उनकी माँगों को पूरा न करें तो उनको प्रताड़ित किया जाता है, यातनाएँ दी जाती हैं। कुछ लोग तो इतने क्रूर होते हैं कि वे दहेज की माँग पूरी न होने पर लड़की की हत्या तक करने से नहीं चूकते। कुछ वर पक्ष वाले बिना दहेज के भी लड़की को स्वीकार करते हैं किन्तु ऐसे लोग नाममात्र ही हैं। अत: आज के युवाओं को अपनी सोच बदलनी होगी। लड़की की भावनाओं को समझना होगा। लड़की का सम्मान करना होगा और लड़की वालों को भी

अपनी लड़की को अधिकाधिक पढ़ाकर अपने पाँव पर खड़ा करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को दहेज़ न लेने और न देने की कसम खानी होगी।

जल के प्रयोग में व्यावहारिकता

पानी प्रकृति की अनुपम सौगात है। इसका कोई विकल्प नहीं है। जीवन-रक्षा के लिए हवा के बाद पानी ही सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व है। किन्तु फिर भी हम पानी की बर्बादी दिल खोलकर करते हैं। नहाते समय नल से सीधे तौर पर न नहाकर बाल्टी में पानी भरकर मग से ज़रूरत के अनुसार जल लेकर नहाएँ। हाथ-पैर, मुँह साफ करते समय, कपड़े धोते समय, दाढ़ी बनाते समय, कार आदि धोते समय नल को लगातार खुला न छोड़ें। बाग़ बगीचे में लम्बी पाइप लगाकर पानी देने की अपेक्षा फव्वारे से पौधों को पानी दें। रसोई घर में सब्जियाँ, दालें आदि धोते समय पानी किफायत से बरतें। इसमें लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। जहाँ कहीं भी पानी की सप्लाई निश्चित समय के लिए की जाती है, वहाँ नल को खुला न छोड़ें। यदि पानी न भी आ रहा हो तो भी नल बंद ही रखें क्योंकि जब पानी की सप्लाई होगी और हम घर पर नहीं होंगे तो पानी व्यर्थ ही बह जाएगा। जहाँ कहीं सार्वजनिक स्थान पर पानी बह रहा हो तो उसकी फौरन नज़दीकी जल विभाग में शिकायत दर्ज़ करवाना अपना फर्ज़ समझें। नल खराब होने पर तत्काल प्लंबर को बुलाकर ठीक करवायें। अत: हमें जल का सदुपयोग करना चाहिए। जल के सम्बन्ध में केवल बातें करके, नारे लगाकर, सेमिनार आयोजित करके, सभाएँ करके ही नहीं, अपितु जल बचाने में स्वयं ही व्यावहारिक बन कर समझदारी दिखायें।

अभ्यास

1. **करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान**

   संकेत बिंदु : (*i*) जन्म से कोई मूर्ख या विद्वान नहीं (*ii*) अभ्यास से विशेष योग्यता व कुशलता की प्राप्ति (*iii*) कोई उदाहरण (*iv*) अभ्यास से असाध्य कार्य को भी साध्य बनाना।

2. **पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं**

   संकेत बिंदु : (*i*) पराधीनता एक अभिशाप (*ii*) पराधीनता प्रगति में बाधक (*iii*) स्वाधीनता जन्म सिद्ध अधिकार (*iv*) स्वाभिमान व आत्मविश्वास से स्वाधीनता प्राप्त होती है।

3. **नारी-शिक्षा का महत्व**

संकेत बिंदु : (*i*) सभी का शिक्षित होना आवश्यक (*ii*) स्त्री शिक्षित तो समाज शिक्षित (*iii*) संकीर्णता को छोड़कर व्यापक दृष्टिकोण अपनाना (*iv*) लड़कियों के लिए विशेष सहूलतें होना।

4. **व्यायाम का महत्त्व**

संकेत बिंदु : (*i*) व्यायाम की ज़रूरत (*ii*) व्यायाम का स्वरूप (*iii*) व्यायाम के लाभ (*iv*) व्यायाम करने में नियमितता।

5. **यदि मैं अध्यापक होता**

संकेत बिंदु : (*i*) मन की इच्छा कि अध्यापक होता (*ii*) स्कूल में विद्यमान कमियों को दूर करने की तरफ ध्यान (*iii*) पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशालाओं, खेल तथा सम्पूर्ण शिक्षा-स्तर के उत्थान पर बल।

6. **आँखों देखी रेल दुर्घटना**

संकेत बिंदु : (*i*) घर के पास से रोज़ ट्रेन का गुज़रना (*ii*) खेल-कूद में मस्त (*iii*) अचानक ट्रेन का पटरी से उतरना (*iv*) भयानक दृश्य : अनेक यात्रियों का मौत के मुँह में जाना (*v*) स्थानीय लोगों द्वारा मौके पर मदद (*vi*) सदमा पहुँचाने वाली दुर्घटना।

7. **जैसा करोगे वैसा भरोगे**

संकेत बिंदु : (*i*) कर्म करना बीज बोने के समान (*ii*) कोई कहावत जैसे-बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाए (*iii*) अच्छे काम का अच्छा फल (*iv*) बुरे काम का बुरा फल (*v*) अच्छे कर्म करने पर बल।

8. **सच्चा मित्र**

संकेत बिंदु : (*i*) सच्चा मित्र : एक खज़ाना (*ii*) सुख-दु:ख का साथी (*iii*) मार्गदर्शक व प्रेरक (*iv*) परख और सही चुनाव।

9. **जब मैं स्टेज पर बोलने के लिए पहली बार चढ़ा**

संकेत बिंदु : (*i*) अध्यापक द्वारा पंद्रह अगस्त पर बोलने की ज़िम्मेदारी (*ii*) स्टेज पर बोलने में झिझक और तनाव (*iii*) अध्यापक व माता-पिता की प्रेरणा से झिझक व तनाव दूर (*iv*) बोलने की तैयारी (*v*) अभ्यास करने से अच्छी तरह बोला गया (*vi*) आत्मविश्वास बढ़ा ।

10. जब मैं पुस्तक-मेला देखने गयी

संकेत बिंदु : (*i*) अपने शहर में पुस्तक-मेला (*ii*) 100 से अधिक प्रकाशकों की भागीदारी (*iii*) खरीददारी में छूट व लुभावनी योजनाएँ (*iv*) मनपसंद पुस्तकें खरीदना (*v*) यादगार पुस्तक-मेला

पाठ -12

पत्र-लेखन

प्राचीन समय से संचार के माध्यम के रूप में पत्र की बहुत उपयोगिता रही है। आज टेलीफ़ोन, फैक्स, मोबाइल व इंटरनेट ने संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। जिस किसी से भी हमने अपने मन की बात कहनी हो, उसे टेलीफ़ोन या मोबाइल फोन के माध्यम से बिना विलम्ब किये कह सकते हैं या फिर मोबाइल से एस.एम.एस. भेज सकते हैं किन्तु इसमें भी कुछ लोग सकुचाते रहते हैं कि कहीं टेलीफ़ोन/मोबाइल फ़ोन का बिल न ज़्यादा आ जाए। इसी हड़बड़ाहट में वे कई बातें कहना भूल जाते हैं। इंटरनेट की मदद से ई-मेल भेजकर भी हम अपना संदेश भेज सकते हैं। एस. एम. एस. या ई-मेल पत्र के ही रूप हैं। इनमें मूल भावना वही है पर माध्यम नया है। किन्तु पत्र-लेखन एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मन के उद्‌गारों को सशक्त ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि जिन बातों को हमें बोलने में संकोच होता है, उन बातों को पत्र में आसानी से लिख सकते हैं। रिश्तों की मधुरता व निकटता बनाए रखने में पत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके अतिरिक्त सरकारी, ग़ैर-सरकारी, निजी संस्थानों आदि में भी यद्‌यपि ई-मेल द्‌वारा पत्र भेजे जाते हैं किन्तु डाक द्वारा पत्र भेजने की परम्परा भी साथ-साथ चल रही है। कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि में खराबी या किसी अन्य तकनीकी गड़बड़ी के समय डाक द्‌वारा पत्र भेजने का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। डाक द्‌वारा भेजे गए पत्रों का रिकॉर्ड कार्यालय के डायरी रजिस्टर में रहता है। अत: पत्र-लेखन अत्यंत उपयोगी व महत्त्वपूर्ण कला है।

आमतौर पर पत्र दो प्रकार के होते हैं :

1. औपचारिक पत्र   2. अनौपचारिक पत्र

1. **औपचारिक पत्र :** ऐसे पत्र जो सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों, स्कूल, कॉलेज के प्रधानाचार्यों, अख़बार के संपादकों, व्यावसायिक संस्थाओं, कंपनियों, फैक्ट्रियों, दुकानदारों आदि को लिखे जाते हैं, उन्हें औपचारिक पत्र कहा जाता है।
2. **अनौपचारिक पत्र :** ऐसे पत्र जो माता-पिता, भाई-बहन अथवा सगे-सम्बन्धियों या मित्रों आदि को लिखे जाते हैं, उन्हें अनौपचारिक पत्र कहा जाता है।

नौवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में अनौपचारिक पत्रों को शामिल किया गया है, अतः उनके बारे में यहाँ बताया जा रहा है।

अनौपचारिक पत्रों को लिखने में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

1. पत्र स्वाभाविक रूप से लिखे जाएँ। उनमें कहीं भी बनावटीपन न झलकता हो।
2. पत्रों में शिष्टाचार का पालन किया जाना चाहिए। पत्र लिखने वाला पत्र में नाराज़गी या क्रोध प्रकट करना चाहता है तो भी संबोधन, अभिवादन लिखते समय संयम व धैर्य से काम लेते हुए शिष्टाचार को निभायें।
3. पत्र में अपशब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे जहाँ रिश्तों में कटुता आती है, वहीं बाद में पश्चात्ताप करना पड़ता है।
4. पत्र में अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।

अनौपचारिक पत्र के अंग

I. भेजने वाले का पता और दिनांक : पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय लिफ़ाफ़े अथवा सादे कागज़ के बायीं ओर शीर्ष पर पत्र लिखने वाले का पता और पते के नीचे पत्र भेजने की तिथि लिखी जानी चाहिए।

नोट :

(*i*) यदि पत्र पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय लिफ़ाफ़े पर लिखा जाता है तो उसे लिखने के बाद उस पर पता (जिसे पत्र भेजा जा रहा है) लिखकर डाकघर में पोस्ट किया जाता है। यदि सादे कागज़ पर पत्र लिखा जाता है तो उसे सामान्य छोटे लिफ़ाफ़े में डालकर उस पर नियमानुसार डाक टिकट लगाकर पोस्ट किया जाता है।

(*ii*) पोस्टकार्ड पर लिखने का नुकसान यह रहता है कि जब आप घर पर नहीं होते तो डाकिया पत्र आपके घर के बाहर फेंक जाता है। उसे कोई भी पढ़ सकता है। इससे बचने का एक तरीका यह हो सकता है कि अपने घर के बाहर लैटरबॉक्स ज़रूर बनवायें।

(*iii*) परीक्षा भवन में पत्र लिखते समय यदि प्रश्न-पत्र में पता दिया गया हो तो वही पता लिखें अन्यथा निम्नलिखित ढंग से लिखना चाहिए :

परीक्षा भवन,

क, ख, ग केंद्र,

.... दिनांक।

(परीक्षा वाले दिन की दिनांक लिखें)

(iv) तिथि निम्नलिखित अनुसार लिखी जा सकती है। जैसे–

14 सितम्बर, 2014

या

सितम्बर 14, 2014

या

14.09.2014

II. सम्बोधन तथा अभिवादन शब्द : बायीं ओर सम्बोधन लिखा जाता है और उसके बाद अल्प विराम (,) लगाया जाता है। अगली पंक्ति में (अल्पविराम की निचली पंक्ति में थोड़ा बायीं ओर) अभिवादन सूचक शब्द लिखा जाता है और उसके बाद पूर्ण विराम (।) लगाया जाता है। जैसे–

पूज्य माता जी,

सादर प्रणाम।

III. पत्र का कलेवर (मुख्य विषय) : पत्र में अभिवादन के ठीक नीचे अगली पंक्ति से मुख्य विषय शुरू हो जाता है। इसे विषय की आवश्यकतानुसार एक या एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जा सकता है। जो बात पत्र में कही जानी है, यदि वह लिख दी जाती है तो पत्र लेखन का उद्देश्य पूरा हो जाता है।

IV. समाप्ति : मुख्य विषय की समाप्ति पर अगली पंक्ति में 'पत्र का उत्तर देना' 'तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में' आदि समापन सूचक वाक्यों का प्रयोग होता है। उससे अगली पंक्ति में बिल्कुल बायीं ओर नीचे 'आपका आज्ञाकारी पुत्र', 'आपकी भतीजी' आदि समापन सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। समापन सूचक शब्द के नीचे पत्र लिखने वाले का नाम लिखा जाता है।

जैसे–

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

लोकेश पुरी

सम्बन्ध	सम्बोधन शब्द	अभिवादन शब्द	समापन शब्द
1. पिता जी	पूज्य/पूजनीय पिता जी,	सादर प्रणाम। चरण स्पर्श।	आपका आज्ञाकारी पुत्र,
2. माता जी	पूज्या/पूजनीया माता जी,	सादर प्रणाम।	आपकी आज्ञाकारी पुत्री,
3. पुत्र, पुत्री	प्रिय विजय/प्रिय पिंकी,	खुश रहो/ सदा सुखी रहो/ चिरंजीवी रहो।	तुम्हारा पिता, तुम्हारी माता, तुम्हारी स्नेहमयी माता,
4. गुरु	श्रद्धेय गुरुवर,	सादर नमन।	आपकाशिष्य/आपकीशिष्या
5. मित्र	प्रिय सुदर्शन,	नमस्ते।	तुम्हारा मित्र, तुम्हारा अभिन्न मित्र
6. सखी	प्रिय कविता,	नमस्ते।	तुम्हारी सखी/सहेली, तुम्हारी स्नेहमयी सखी,
7. बड़ी बहन	स्नेहमयी दीदी,	सादर नमन।	आपकाअनुज/आपकीअनुजा,
8. छोटी बहन	प्रिय निम्मी,	खुश रहो।	तुम्हारी बड़ी बहन /तुम्हारा बड़ा भाई,
9. बड़ा भाई	आदरणीय भाई साहब,	सादर नमन।	आपकाअनुज/आपकीअनुजा,
10. छोटा भाई	प्रिय अनुज/प्रिय रोहित,	खुश रहो।	तुम्हारी बड़ी बहन/ तुम्हारा बड़ा भाई।

V. पत्र पाने वाले का पता : पत्र लिखने के बाद पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय या स्टैंप लगे लिफ़ाफे पर यथास्थान पत्र पाने वाले का पूरा पता पिन कोड सहित लिखना चाहिए।

जैसे -

अंजलि कुमारी,
2542, सेक्टर 48-सी,
चंडीगढ़ - 160047

अपनी माता जी को वार्षिक परिणाम का विवरण देते हुए पत्र लिखें।

छात्रावास,

सरस्वती पब्लिक स्कूल,

सेक्टर - 19, करनाल।

31 मार्च, 2014

आदरणीय माता जी,

प्रणाम ।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और आशा करती हूँ कि आप भी सकुशल होंगे। वार्षिक परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद दस दिन के लिए हमारा एन.एस.एस. का कैंप लग गया था। कल ही कैंप खत्म हुआ और आज सुबह ही मेरी वार्षिक परीक्षा का नतीजा आ गया। आपको यह जानकर खुशी होगी कि हर बार की तरह मैं इस बार भी पूरे स्कूल में आठवीं कक्षा में प्रथम आयी हूँ। गणित, विज्ञान और संस्कृत विषयों में तो मेरे शत प्रतिशत अंक आये हैं। यह सब आपके और पिता जी के स्नेह और आशीर्वाद का फल है।

चूँकि अब मैं नौवीं कक्षा में हो गयी हूँ, मुझे नयी किताबें, कॉपियाँ इत्यादि खरीदनी हैं। मेरे मित्र मुझसे स्कूल में प्रथम आने की पार्टी भी माँग रहे हैं। अत: आप मुझे 2000/- रुपये का मनीऑर्डर भेजने का कष्ट करें।

पिता जी को प्रणाम व रिदम को ढेर सारा प्यार देना।

आपकी लाडली,

चार्वी

अपने पुराने स्कूल के अध्यापक को पत्र लिखिए जिसमें उन्हें अच्छा पढ़ाने के लिए साधुवाद प्रकट किया गया हो तथा भविष्य में मार्गदर्शन की अपेक्षा की गयी हो।

1370, मॉडल टाऊन,

कपूरथला।

8 मई, 2014

आदरणीय गुरु जी,

चरण वन्दना।

मैं आपका एक पुराना छात्र हूँ। मैं आपसे सरस्वती पब्लिक स्कूल, रामगढ़ में आठवीं कक्षा में पढ़ता था। मेरा नाम सुशील कुमार है। उस समय मेरा कक्षा का रोल नंबर

पाँच था। आप हमें गणित पढ़ाते थे। आपके द्वारा हमें बड़ी लगन और मेहनत से पढ़ाया जाता था। आप हमें बहुत ही सरल व व्यावहारिक ढंग से पढ़ाते थे। इसके अतिरिक्त आप हमें बहुत ही ज्ञानवर्धक बातें भी बताते थे। आज मैं गौतम पब्लिक स्कूल, लखनऊ में पढ़ रहा हूँ। मेरे आज भी गणित में शत-प्रतिशत नम्बर आते हैं। मेरी गणित की अध्यापिका भी मुझसे बहुत खुश हैं। मैंने उन्हें आपके तथा आपके पढ़ाने के ढंग के बारे में बताया तो वह भी बहुत प्रभावित हुईं। मैं और मेरा परिवार यही मानता है कि यह सब आप ही के द्वारा उचित रूप में दी जाने वाली शिक्षा का परिणाम है।

मैं भविष्य में भी आपसे उचित मार्गदर्शन की अपेक्षा रखता हूँ।

धन्यवाद।

आपका शिष्य,

सुशील कुमार

आपको आपके पुराने मित्र का चार साल बाद पत्र मिला। उसके पत्र का जवाब देते हुए पत्र लिखें।

1151, सेक्टर-22,

पटियाला।

15 जुलाई, 2014

प्रिय मयंक गुप्ता,

नमस्ते।

मुझे आज ही तुम्हारा पत्र मिला। मुझे पत्र पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। आखिर इतने वर्षों बाद तुम्हें मेरी याद तो आयी। नौकरी के कारण तुम्हारे पिता जी की बदली दिल्ली में हो गयी थी और तुम स्कूल बदलकर दिल्ली चले गये थे। तुमने जो दिल्ली का पता दिया था, मैंने वहाँ दो-तीन पत्र डाले किन्तु तुम्हारा कोई जवाब नहीं आया। फिर एक दिन हमारा साँझा मित्र प्रवीण मिला जिसने मुझे बस इतना बताया कि आजकल तुम नोएडा में हो परन्तु उसके पास तुम्हारा पता नहीं था। इसलिए तुमसे कोई संपर्क स्थापित न हो सका।

चलो अच्छा हुआ, तुम्हें मेरी याद तो आयी। तुम्हारे पत्र से पता चला कि तुम अब स्थायी रूप से फिर अपने पुराने शहर में आ रहे हो। जल्दी से आ जाओ। तुम मेरे स्कूल में प्रवेश ले लो। अभी नौवीं कक्षा में दाखिला चल रहा है। फिर से इकट्ठे

पढ़ने में बहुत मज़ा आएगा।

अपने मम्मी व डैडी को मेरी तरफ से प्रणाम कहना। शेष बातें मिलने पर होंगी।

तुम्हारी प्रतीक्षा में।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

ऋत्विक शर्मा

अपने फुफेरे भाई को राखी भेजते हुए पत्र लिखें।

455, विवेक नगर,

पानीपत।

5 अगस्त, 2014

प्रिय अनुज,

सदा खुश रहो।

मैं यहाँ पर सकुशल हूँ और आशा करती हूँ कि तुम भी सकुशल होंगे। आज से पंद्रह दिन बाद रक्षा बंधन का त्योहार है। मैं उन दिनों स्कूल की ओर से शैक्षिक भ्रमण के तहत आगरा जा रही हूँ। तुम्हें राखी बाँधने के लिए नहीं आ सकती। इसका मुझे भी खेद है। मैं सस्नेह तुम्हें राखी भेज रही हूँ। इसे स्वीकार करना और निश्चित समयानुसार मेरी ओर से छोटी बहन आकृति से बँधवा लेना। मैं वायदा करती हूँ कि आगरा से आने के बाद मैं तुम्हें मिलने ज़रूर आऊँगी और तुम्हारे लिए कोई न कोई उपहार भी लेकर आऊँगी।

मेरी ओर से बुआ जी व फूफा जी को प्रणाम कहना व आकृति को प्यार देना।

तुम्हारी बहन,

डॉली

अपनी सखी को अपने जन्मदिन पर निमंत्रण देते हुए पत्र लिखें

मकान नम्बर बी-254,
सेक्टर-14,
चंडीगढ़।
12 अगस्त, 2014

प्रिय सखी कमलप्रीत,

सप्रेम नमस्कार।

जैसा कि तुम्हें विदित ही है कि आज से ठीक 10 दिन बाद मेरा सोलहवाँ जन्मदिन है। इस उपलक्ष्य में मेरे माता-पिता ने एक दावत का आयोजन किया है। इस अवसर पर सबसे पहले मैं तुम्हें ही आमंत्रित कर रही हूँ। पिछली बार तुम मेरे जन्मदिन पर नहीं आई थीं। परन्तु याद रखना, इस बार तुम्हारा कोई भी बहाना नहीं चलेगा।

जन्मदिन की दावत 'निमंत्रण' नामक रेस्तरां में आयोजित की गई है जो कि शहर का एक नामी रेस्तरां है। दावत शाम छः बजे आरम्भ होगी। इस अवसर पर हमारी अन्य सखियाँ- नव्या, दिव्या, शुभांगी, ओमिका और नम्रता भी आएँगी। हम सब मिलकर मौज-मस्ती करेंगे। इस दावत में मेरे पापा ने गीत-संगीत की भी व्यवस्था करवायी है। मेरे सभी रिश्तेदार, ममेरी बहन, चचेरे भाई भी आएँगे। मेरी मम्मी ने मुझे एक नयी पोशाक ले कर दी है। हाँ, एक मज़ेदार बात यह है कि मेरी मम्मी हम सब बच्चों को वहीं रेस्तरां में कुछ गेम्स भी खिलाएँगी। हर गेम में जीतने वाले को इनाम भी मिलेगा। मुझे यकीन है कि तुम ही सबसे ज़्यादा इनाम जीतोगी। तुम मेरे घर पर कुछ समय पहले ही आ जाना। मैं तुम्हारा बेसब्री से इंतज़ार करूँगी।

आँटी व अंकल को मेरी ओर से नमस्ते कहना। छोटी बहन को प्यार देना।

तुम्हारी सखी,
ऋद्धि

बड़ी बहन की ओर से छोटे भाई को पढ़ाई में ध्यान देने व कुसंगति से बचने के लिए पत्र लिखें।

752, सुंदर नगर,

फरीदाबाद।

14 सितम्बर, 2014

प्रिय अनुज विवेक,

सदा खुश रहो।

मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि तुम आजकल पढ़ाई में बिल्कुल ध्यान नहीं देते। सारा दिन आवारागर्दी करते रहते हो। तम अपना होमवर्क भी पूरा नहीं करते और बाज़ार में वीडियो गेम्स खेलते रहते हो। यह भी पता चला है कि तम कई बार स्कूल से भागकर सिनेमा देखने चले जाते हो। जब से तुम्हारे बारे में ये बाते पता चली हैं, मैं बहुत दु:खी हो गयी हूँ। मैंने अभी तक ये बातें मम्मी और पापा को नहीं बतायीं।

प्रिय अनुज, तुम बहुत ही होनहार हो। तुम प्रवेश-परीक्षा पास करके घर से दूर इतने अच्छे विद्यालय के छात्रावास में रहकर शिक्षा ग्रहण करने गये हो। दसवीं की परीक्षा का आधार नौवीं कक्षा है इसलिए नौवीं कक्षा में तुम मन लगाकर पढ़ो। अब जो हो गया, उसे भूल जाओ और मन लगाकर पढ़ो।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरी बात ज़रूर मानोगे। अगले महीने तुम्हारी घरेलू परीक्षा है। इसमें अच्छे अंक लेकर दिखाओ और कुसंगति से दूर रहो। अन्यथा फिर मुझे माता-पिता को तुम्हारी हरकतों के बारे में बताने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाएगा।

पत्र मिलते ही मुझे पत्र लिखकर अपनी स्थिति स्पष्ट करो। मम्मी व पापा की तरफ से ढेर सारा प्यार।

तुम्हारी शुभाकांक्षी बहन,

गरिमा

अपनी सहेली को प्रतियोगी-परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र लिखें।

1274, वार्ड नम्बर-2,
जगाधरी।
22 सितम्बर, 2014
प्रिय राधिका,

आशा करती हूँ कि तुम सपरिवार सकुशल होंगे। आज जब मैं स्कूल की लाइब्रेरी में अखबार पढ़ रही थी तो अखबार के दूसरे पन्ने पर तुम्हारी फोटो देखी। पढ़ने पर पता चला कि तुमने एन. टी. एस. ई. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी इस सफलता पर मैं फूली नहीं समा रही। तुम्हें इस उपलब्धि पर बहुत-बहुत बधाई।

प्रिय राधिका, जिस लगन व परिश्रम से तुमने इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए दिन-रात एक कर दिया था, उससे हमें पूर्ण विश्वास था कि तुम सफलता की पीढ़ी के शीर्ष तक पहुँच कर माँ-बाप का नाम रोशन करोगी। मेरी ओर से अंकल व आंटी जी को भी बधाई देना।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी तुम इसी प्रकार प्रत्येक परीक्षा में परिवार का नाम रोशन करोगी।

तुम्हारी सहेली,
अनीता

अपने जन्म दिवस पर भेजे गये उपहार के लिए अपने ताया जी को धन्यवाद देते हुए पत्र लिखें।

525, आस्था कॉलोनी,
रोपड़।
14 अक्टूबर, 2014
आदरणीय ताया जी,
चरण वन्दना।

मुझे कल ही आपके द्वारा भेजा गया पार्सल तथा बधाई कार्ड मिला। कार्ड पर आशीर्वाद देते हुए आपने जो सुंदर पंक्तियाँ लिखी हुई थीं, वे सचमुच सराहनीय थीं। जब मैंने पार्सल खोलकर देखा तो उसमें ऑक्सफोर्ड का शब्दकोश तथा तीन अन्य किताबों का

सेट देखकर मैं गद्‌गद्‌ हो गया। विद्‌यार्थी को अच्छी व नयी किताबें मिल जायें, उसे भला फिर और क्या चाहिए! मुझे अन्य मित्रों ने भी उपहार दिये। उनके उपहार भी बढ़िया थे किन्तु ज्ञानवर्धक पुस्तकें आपके सिवाय किसी ने नहीं दीं।

इस बहुमूल्य उपहार के लिए मैं आपको अनेकानेक धन्यवाद देता हूँ। मैं इनका सदुपयोग करूँगा और संभाल कर रखूँगा।

तायी जी को मेरा प्रणाम कहना। सोनू व टीना को मेरा प्यार देना।

आपका भतीजा,

राहुल

आपके चाचा जी के शहर में क्रिकेट मैच हो रहा है। आप उसे स्टेडियम में देखना चाहते हैं। आप अपने चाचा जी से आग्रह कीजिए कि वे आपको ये मैच दिखाएँ।

1151, सेक्टर-5

फरीदाबाद।

20 अक्टूबर, 2014

आदरणीय चाचा जी,

सादर प्रणाम।

आपको तो पता ही है कि आपके शहर मोहाली में भारत और आस्ट्रेलिया के बीच एक दिवसीय क्रिकेट मैच दिनांक 01.11.2014 को होना तय हुआ है। मुझे क्रिकेट मैच देखने का बहुत शौक है। मैं जानता हूँ कि आप भी यह मैच ज़रूर देखेंगे। मैंने पहले कभी भी स्टेडियम में बैठकर क्रिकेट मैच नहीं देखा। पिछली बार जब आप आए थे तो आपने कहा था कि जब अगली बार कभी मोहाली में क्रिकेट मैच हुआ तो तुम्हें मैच ज़रूर दिखाएंगे। जब आप इस मैच की टिकटें लेने जाएँ तो मेरे लिए भी एक टिकट ज़रूर ले लेना। मैंने मम्मी और पापा से इसकी आज्ञा ले ली है।

सच, मैं तो अभी से स्टेडियम में बैठकर क्रिकेट मैच देखने के लिये उतावला हो रहा हूँ।

मैं मैच से एक दिन पहले ही आपके पास पहुँच जाऊँगा। मैं, अभिषेक, रीना और आप इकट्‌ठे मैच देखने जाएंगे।

चाची जी को मेरा प्रणाम कहना। अभिषेक और रीना को प्यार।

आपका भतीजा,

शंकर

परीक्षा न दे सकने के कारण आपका मित्र परेशान है। उसे हौसला देते हुए जीवन में सकारात्मक रवैया अपनाने के लिए कहते हुए पत्र लिखें।

252, आज़ाद नगर,
गुरदासपुर।
25 अक्टूबर, 2014
प्रिय रवि,
हैलो।

तुम्हारी माता जी के पत्र से मालूम हुआ कि वार्षिक परीक्षा न दे पाने के कारण तुम्हारा एक साल खराब हो गया है। तुमने इस बात को मन में बिठा लिया है और अपना स्वास्थ्य खराब कर रहे हो। किन्तु हम सब जानते हैं कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। परीक्षा से एक महीने पहले ट्रक के साथ तुम्हारा इतना भयंकर एक्सीडेंट हो गया था। उसके बाद दो महीने तक तो तुम अस्पताल में रहे। पन्द्रह दिन तो तुम्हें होश ही नहीं आया था। शुक्र है कि तुम आज बिल्कुल स्वस्थ हो गये हो।

मित्र! जीवन में सुख-दु:ख आते रहते हैं। तुम सब कुछ भूलकर सकारात्मक होकर अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान दो। मुझे पता है कि तुम पढ़ाई में बहुत ही होशियार हो। अगले साल परीक्षा में तुम कक्षा में ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल में प्रथम आओगे।

अपने मम्मी-पापा को मेरी ओर से नमस्ते कहना। छोटे भाई को प्यार देना।

तुम्हारा मित्र,
अमनदीप

आप अपनी वॉलीबाल टीम व कोच के साथ ट्रेनिंग कैंप गये हैं। अपनी कुशलता का समाचार अपनी माता जी को देते हुए पत्र लिखें।

सरकारी मॉडल सीनियर सेकंडरी स्कूल
फेज़-3 बी-1 मोहाली,
5 नवम्बर, 2014
आदरणीय माता जी,
सादर प्रणाम।

मैं अपनी सारी टीम व कोच के साथ वॉलीबाल ट्रेनिंग कैम्प में कुशलतापूर्वक पहुँच गयी हूँ। यहाँ सरकार की तरफ से हमारे रहन-सहन की उचित व्यवस्था की गयी

है। हमारी सारी टीम को एक बड़ा हॉल कमरा दिया गया है जिसमें हम सभी इकट्ठे ही रहते हैं। हमारी कोच श्रीमती सुखविंद्र कौर जी भी हर समय हमारे साथ ही रहती हैं। वे हमें किसी तरह की परेशानी नहीं होने देतीं।

सुबह-शाम हम अपनी कोच के साथ अभ्यास करते हैं। सरकार द्वारा हमारे नाश्ते, दोपहर के भोजन व रात के खाने का भी बढ़िया इंतज़ाम है। हमें बिल्कुल घर जैसा खाना उपलब्ध करवाया जाता है।

हम जिस तरह अभ्यास कर रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि राष्ट्रीय स्तर पर अगले महीने जो हमारे मैच होने हैं, उनमें हमारे पंजाब प्रदेश की टीम ही जीतेगी। मेरी तनिक भी चिंता न करना।

पूज्य पिता जी को मेरा प्रणाम व सुमित को मेरा प्यार देना।

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री,

प्रियाशा

अपनी सहेली को सर्दियों की छुट्टियों में अपने घर बुलाने का निमंत्रण पत्र लिखें।

269, सेक्टर-14,

चंडीगढ़।

5 दिसम्बर, 2014

प्रिय सहेली अंजु ,

मुझे कल ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पत्र को पढ़कर खुशी हुई कि तुम मुझे याद करती हो। मैं भी तुम्हें बहुत याद करती हूँ। मुझे आज भी याद है कि जब मैं दिल्ली अपने मामा-मामी के पास एक शादी में गयी थी तो वहीं तुमसे मेरी मित्रता हुई थी। तुम्हारे पापा ने हमें लाल किला, कुतुबमीनार तथा चाँदनी चौक की सैर करवायी थी।

सखी, मैं चाहती हूँ कि तुम इस बार सर्दियों की छुट्टियों में मेरे पास चंडीगढ़ आ जाओ। तुम्हारा साथ पाकर तो छुट्टियों का आनन्द और भी बढ़ जाएगा। मेरे पापा की भी उन दिनों छुट्टियाँ होती हैं इसलिए वे हमें रोज़गार्डन, आर्टगैलरी, सुखना झील, रॉकगार्डन, पंजाब विश्वविद्यालय आदि चंडीगढ़ के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की सैर करवायेंगे।

देखो, मना मत करना। मेरी अच्छी सहेली, तुम ज़रूर आना।
तुम्हारी प्रतीक्षा में।
तुम्हारी प्यारी सहेली,
सर्वजीत

अभ्यास

1. आपका नाम चेष्टा है। आप 235, सेक्टर-16, करनाल में रहती हैं। आप अपनी सखी अदिति की बहन की शादी में व्यस्तता के कारण नहीं जा सकीं। अदिति को एक बधाई पत्र लिखिए।
2. आपका नाम सुधीर वर्मा है। आप 2561, सेक्टर-22, नोएडा में रहते हैं। आपको सूचना मिली है कि आपके मित्र के पिता जी की अचानक मृत्यु हो गयी है। इस सम्बन्ध में उसे सान्त्वना देते हुए पत्र लिखिए।
3. आप का नाम मयंक गुप्ता है। आप मेरठ पब्लिक स्कूल, मेरठ में नौवीं कक्षा में पढ़ते हो और छात्रावास में रहते हो। आप अपनी माता जी को छात्रावास के जीवन के बारे में बताते हुए पत्र लिखें।
4. आपका नाम रिदम है। आप 525, मयूर विहार, दिल्ली में रहतीं हैं। आपकी दादी आपके पास पंद्रह दिन के लिए आने वाली हैं। उन्हें अपनी मनपसंद वस्तुओं की फरमाइश करते हुए पत्र लिखें।
5. आपका नाम सौम्या है। आप ए-40, शांति नगर, पटियाला में रहती हैं। अपने बड़े भाई, जो मुम्बई में रहते हैं, को अपने जीवन की भावी योजनाओं के विषय में पत्र लिखिए।
6. आपका नाम प्रवीण शर्मा है। आप 256, आशियाना सोसाइटी, नंगल में रहते हैं। आपका खोया हुआ बैग लौटाने वाले नीरज वर्मा को आभार व्यक्त करते हुए पत्र लिखें।

पाठ –13

अनुवाद

पंजाबी	हिंदी
1. ਭਾਰਤ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਦਿੱਲੀ ਹੈ।	1. भारत की राजधानी दिल्ली है।
2. ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਫ਼ੌਜ ਵਿੱਚ ਨੌਂਕਰੀ ਕਰਦੇ ਹਨ।	2. मेरे पिता जी फ़ौज में नौकरी करते हैं।
3. ਕਬੂਤਰ ਉੱਡ ਰਿਹਾ ਹੈ।	3. कबूतर उड़ रहा है।
4. ਇਹ ਦੁਪਹਿਰ ਦਾ ਸਮਾਂ ਹੈ।	4. यह दोपहर का समय है।

उपर्युक्त बायीं ओर लिखे गए पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद किया गया है। **अतः किसी भाषा में कही गई या लिखी गई बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है।** अनुवाद में दो भाषाओं का होना अति ज़रूरी है। जिस भाषा की सामग्री अनूदित होती है, वह स्रोत भाषा कहलाती है तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है, वह लक्ष्य भाषा कहलाती है। यहाँ पंजाबी स्रोत भाषा तथा हिंदी लक्ष्य भाषा है। जो अनुवाद करता है, उसे अनुवादक कहते हैं। अनुवाद साहित्यिक विधा है परन्तु वह मौलिक साहित्य रचना की श्रेणी में नहीं आती।

प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि, अपनी शब्दावली तथा अपना व्याकरण होता है। इसी कारण एक भाषा दूसरी भाषा से अलग दिखाई देती है। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं की लिपियों, शब्दावली, वाक्य संरचना तथा व्याकरण का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

(क) ध्वनिगत विश्लेषण

1. पंजाबी तथा हिंदी की स्वर ध्वनियाँ

यद्यपि पंजाबी में स्वरों के लिये केवल तीन अक्षर हैं – 'ੳ', 'ਅ', 'ੲ' किन्तु ध्वन्यात्मक स्तर पर इनकी गिनती दस है। हिंदी में भी ये स्वर ध्वनियाँ विद्यमान हैं। जैसे–

पंजाबी की स्वर ध्वनियाँ	हिंदी की स्वर ध्वनियाँ
ਅ	अ
ਆ	आ
ਇ	इ
ਈ	ई
ਉ	उ

ਊ	ऊ
ਏ	ए
ਐ	ऐ
ਓ	ओ
ਔ	औ

2. पंजाबी और हिंदी की व्यंजन ध्वनियाँ

पंजाबी की व्यंजन ध्वनियाँ	हिंदी की व्यंजन ध्वनियाँ	पंजाबी की व्यंजन ध्वनियाँ	हिंदी की व्यंजन ध्वनियाँ
ਸ	स	ਪ	प
ਹ	ह	ਫ	फ
ਕ	क	ਬ	ब
ਖ	ख	ਭ	भ
ਗ	ग	ਮ	म
ਘ	घ	ਯ	य
ਙ	ङ	ਰ	र
ਚ	च	ਲ	ल
ਛ	छ	ਵ	व
ਜ	ज	ੜ	ड़
ਝ	झ	ਸ਼	श
ਞ	ञ	ਖ਼	ख़
ਟ	ट	ਗ਼	ग़
ਠ	ठ	ਜ਼	ज़
ਡ	ड	ਫ਼	फ़
ਢ	ढ	ਲ਼	—
ਣ	ण		
ਤ	त		
ਥ	थ		
ਦ	द		
ਧ	ध		
ਨ	न		

3. स्वरों की मात्राएँ

पंजाबी रूप

स्वर	मात्रा	शब्द
ਅ	ਕੋਈ ਮਾਤਰਾ ਨਹੀਂ	ਘ + ਅ = ਘ (ਘਰ)
ਆ	(ਾ)	ਕ + ਆ = ਕਾ (ਕਾਲ)
ਇ	(ਿ)	ਸ + ਇ = ਸਿ (ਸਿਰ)
ਈ	(ੀ)	ਮ + ਈ = ਮੀ (ਮੀਲ)
ਉ	(ੁ)	ਗ + ਉ = ਗੁ (ਗੁਲਾਬ)
ਊ	(ੂ)	ਸ + ਊ = ਸੂ (ਸੂਰਜ)
ਏ	(ੇ)	ਸ + ਏ = ਸੇ (ਸੇਬ)
ਐ	(ੈ)	ਪ + ਐ = ਪੈ (ਪੈਰ)
ਓ	(ੋ)	ਰ + ਓ = ਰੋ (ਰੋਟੀ)
ਔ	(ੌ)	ਨ + ਔ = ਨੌ (ਨੌਕਰ)

हिन्दी रूप

स्वर	मात्रा	शब्द
अ	(कोई मात्रा नहीं)	घ् + अ = घ (घर)
आ	(ा)	क् + आ = का (काल)
इ	(ि)	स् + इ = सि (सिर)
ई	(ी)	म् + ई = मी (मील)
उ	(ु)	ग् + उ = गु (गुलाब)
ऊ	(ू)	स् + ऊ = सू (सूरज)
ए	(े)	स् + ए = से (सेब)
ऐ	(ै)	प् + ऐ = पै (पैर)
ओ	(ो)	र् + ओ = रो (रोटी)
औ	(ौ)	न् + औ = नौ (नौकर)

4. टिप्पी और बिंदी का प्रयोग : पंजाबी में बिंदी (ਂ) और टिप्पी (ੰ) दोनों नासिक्य ध्वनियाँ हैं। बिंदी (ਂ) और टिप्पी (ੰ) का प्रयोग मात्राओं के अनुसार होता है।

(i) पंजाबी में 'मुक्ता', 'सिहारी', 'ओंकड़', तथा 'दुलैंकड़' मात्राओं के साथ टिप्पी का प्रयोग होता है। जैसे–

• मुक्ता के साथ – **ਰੰਗ, ਮੰਚ**	रंग, मंच
• सिहारी के साथ – **ਬਿੰਦੀ, ਹਿੰਦੂ**	बिंदी, हिंदू
• ओंकड़ के साथ – **ਕੁੰਡਲ, ਸੁੰਦਰ**	कुंडल, सुंदर
• दुलैंकड़ के साथ – **ਜੂੰ, ਬੂੰਦ**	जूँ, बूँद

विशेष कथन :– हिंदी में पंजाबी के 'मुक्ता', 'सिहारी', 'ओंकड़' वाली मात्राओं के शब्दों के साथ प्राय: बिंदी का ही प्रयोग होता है किंतु बड़े 'ऊ' के साथ प्राय: बिंदी की अपेक्षा अनुनासिक अर्थात् चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग होता है। उपर्युक्त पंजाबी में दुलैंकड़ मात्राओं वाले शब्दों के साथ टिप्पी (**ਜੂੰ, ਬੂੰਦ**) का प्रयोग हुआ है किंतु हिंदी में दुलैंकड़ अर्थात् दीर्घ ऊ (ू) के साथ चंद्रबिंदु का प्रयोग होगा। जैसे – जूँ, बूँद।

अन्य शब्द : चूँ-चूँ, बूँदी आदि।

टिप्पी के सम्बन्ध में विशेष–

पंजाबी के टिप्पी वाले शब्दों का हिंदी में कुछ अलग तरह से प्रयोग भी मिलता है। जैसे–

पंजाबी रूप	हिंदी रूप	विशेष कथन
ਪਹੁੰਚ	पहुँच	टिप्पी की जगह चंद्रबिंदु
ਮੂੰਹ	मुँह	'ऊ' की जगह 'उ' (ु) का प्रयोग तथा टिप्पी की जगह चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग।
ਕੰਨ, ਚੰਮ, ਕੰਮ	कान, चाम, काम	आदि वृद्धि अर्थात् 'क' को 'का', 'च' को 'चा' तथा टिप्पी की जगह कुछ नहीं।
ਧੰਨ	धन	टिप्पी की जगह कुछ नहीं।
ਦੰਦ, ਪੰਜ	दाँत, पाँच	आदि वृद्धि अर्थात् 'द' को 'दा', 'प' को 'पा', टिप्पी की जगह चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग तथा

अंतिम अक्षर में परिवर्तन अर्थात् वर्ग के तीसरे अक्षर की जगह पहला। अक्षर ('द' की जगह 'त', 'ज' की जगह 'च')।

(ii) पंजाबी में कन्ना (ਾਂ), लां (ੇ), दुलावां (ੈ), होड़ा (ੋ) तथा कनौड़ा (ੌ) मात्राओं के साथ बिंदी का प्रयोग होता है।

'कन्ना' के साथ - **ਸ਼ਾਂਤੀ, ਪਾਂਡਵ**	शांति, पांडव
'लां' के साथ - **ਗੇਂਦ, ਗੇਂਦਾ**	गेंद, गेंदा
'दुलावां' के साथ - **ਸੈਂਕੜਾ, ਹੈਂਗਰ**	सैंकड़ा, हैंगर
'होड़ा' के साथ - **ਗੋਂਦ**	गोंद
'कनौड़ा' के साथ - **ਸੌਂਫ਼, ਧੌਂਸ**	सौंफ़, धौंस

विशेष : पंजाबी में जहाँ कन्ना (ਾ) मात्रा के साथ बिंदी (ਂ) का प्रयोग होता है। वहीं हिंदी में कई जगह बिंदी की अपेक्षा चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग होता है। जैसे-

ਮਾਂ	माँ
ਸਾਂਝਾ	साँझा
ਤਾਂਬਾ	ताँबा
ਚਾਂਦੀ	चाँदी

हिंदी में भी शिरोरेखा से ऊपर लगने वाली मात्राओं के साथ बिंदी का ही प्रयोग होता है। जैसे- नींद, बैंगन, गेंद आदि में अनुनासिक ध्वनि होते हुए भी अनुस्वार (.) ध्वनि का प्रयोग हुआ है क्योंकि इन शब्दों (नींद, बैंगन तथा गेंद) की मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर हैं।

5. हिंदी के शब्दों में जहाँ 'य' से पूर्व हलंत व्यंजन (आधा अक्षर) होता है, वहीं पंजाबी में वह प्राय: आधा अक्षर पूरा लिखा जाता है। उस पूरे अक्षर के साथ 'इ' की मात्रा (सिहारी) लग जाती है और 'य' की जगह 'ਅ' लिखा जाता है। जैसे-

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਮਾਧਿਅਮ	माध्यम	ਸੱਭਿਅਤਾ	सभ्यता
ਅਧਿਆਪਕ	अध्यापक	ਵਿਆਪਕ	व्यापक
ਅਭਿਆਸ	अभ्यास	ਵਿਅਰਥ	व्यर्थ
ਪਿਆਰ	प्यार		

विशेष : 1. कहीं-कहीं पंजाबी में बाकी सब कुछ उपर्युक्त अनुसार ही होता है किन्तु थोड़ा बहुत अन्य परिवर्तन हो जाता है। जैसे-

पंजाबी	हिंदी	विशेष कथन
ਵਿਅਕਤੀ	व्यक्ति	(पंजाबी में 'ਤ' में बिहारी तथा 'ਕ' पूरा है जबकि हिंदी में 'त' को छोटी 'इ' लगी है और आधे 'क्' का प्रयोग हुआ है।
ਅਧਿਆਤਮ	अध्यात्म	(पंजाबी में पूरे 'ਤ' तथा हिंदी में आधे 'त्' का प्रयोग)

विशेष 2. कहीं-कहीं ऐसी अवस्था में 'य' का लोप भी होता है। जैसे-

पंजाबी	हिंदी	विशेष कथन
ਵਿਵਸਥਾ	व्यवस्था	(पंजाबी में 'य' का लोप)

6. पंजाबी में कई बार धातु के अंतिम अक्षर को 'इ' की मात्रा (सिहारी) लगाकर साथ में 'ਆ' लगाकर सामान्य क्रिया बनती है किन्तु हिंदी में प्रायः 'आ' अथवा 'या' ही लगता है। जैसे-

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਭੇਜਿਆ	भेजा	ਪੜ੍ਹਿਆ	पढ़ा
ਲਿਖਿਆ	लिखा	ਮਾਪਿਆ	मापा
ਮਾਇਆ	माया	ਗਾਇਆ	गाया

विशेष : पंजाबी में कहीं-कहीं कुछ क्रियाओं में 'ਤਾ' अंत में लगा होता है किंतु हिंदी में वहाँ 'या' लगता है।

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਸੁੱਤਾ	सोया	ਕੀਤਾ	किया
ਦਿੱਤਾ	दिया		

7. हिंदी के शब्दों में जहाँ 'व' से पूर्व हलंत व्यंजन (आधा अक्षर) होता है, वहीं पंजाबी में वह प्रायः आधा अक्षर पूरा लिखा जाता है। उस पूरे अक्षर के साथ 'व' के स्थान पर 'ਉ' की मात्रा (ੁ) लग जाती है।

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਸੁਆਗਤ	स्वागत	ਦੁਆਰ	द्वार
ਦੁਆਰਾ	द्वारा	ਸੁਤੰਤਰ	स्वतंत्र

विशेष 1. कहीं-कहीं हिंदी की तरह पंजाबी में भी 'ਸ' और 'ਹ' को संयुक्त रूप में लिखा जाता है। संयुक्त रूप में लिखते समय 'ਸ' के पैरों में 'ਵ' लगाया जाता है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**
ਸ੍ਵਰ	स्वर

2. कहीं-कहीं पंजाबी में हिंदी से बिल्कुल भिन्न रूप से भी लिखा जाता है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**
ਸਵੈ ਰੋਜ਼ਗਾਰ	स्वरोज़गार

8. हिंदी में प्रयुक्त संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण में पंजाबी बोलने वालों को कठिनाई होती है। अपनी मातृभाषा पंजाबी की प्रकृति अथवा उच्चारण में सरलता के दृष्टिकोण से संयुक्त व्यंजनों में परिवर्तन हो जाता है।

(*i*) **संयुक्त व्यंजनों के बीच में स्वर का आगम :** कहीं-कहीं संयुक्त व्यंजनों के बीच स्वर का आगम हो जाता है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਇੰਦਰ	इन्द्र	ਰਾਸ਼ਟਰ	राष्ट्र
ਸਕੂਲ	स्कूल	ਕਲੇਸ਼	क्लेश
ਵਿਸ਼ਵਾਸ	विश्वास	ਕਿਰਪਾ	कृपा
ਪੁੱਤਰੀ	पुत्री	ਸ਼ਾਸਤਰ	शास्त्र
ਫ਼ਿਕਰ	फ़िक्र	ਸੰਗਰਾਮ	संग्राम

(*ii*) **स्वर का लोप :** कहीं-कहीं स्वर का लोप भी देखने को मिलता है। जैसे-

ਪੰਜਾਬੀ	**हिंदी**
ਪ੍ਰੰਤੂ	परंतु

9. पंजाबी में दो अक्षरों के मेल से बने अक्षरों को द्वित्व अक्षर (**ਦੁੱਤ ਅੱਖਰ**) या संयुक्त अक्षर कहते हैं। इनकी संख्या तीन है: **ਹ** (੍ਹ), **ਰ** (੍ਰ), **ਵ** (੍ਵ) ये तीनों जिस अक्षर के साथ मिलते हैं, उस अक्षर के पैरों के नीचे लिखे जाते हैं। उदाहरण :

पंजाबी में प्रयोग :

(*i*) ੜ + ਹ (੍ਹ) = ੜ੍ਹ (ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ, ਪੜ੍ਹ)

(*ii*) ਪ + ਰ (੍ਰ) = ਪ੍ਰ (ਪ੍ਰੇਮ, ਪ੍ਰਯੋਗ)

(*iii*) ਸ + ਵ (੍ਵ) = ਸ੍ਵ (ਸ੍ਵੈਧੀਨਤਾ)

हिंदी में पंजाबी के इन तीनों संयुक्त अक्षरों को इस प्रकार लिखा जाता है-

ੜ੍ਹ (ढ़) (चंडीगढ़, पढ़)

ਪ੍ਰ (प्र) (प्रेम, प्रयोग)

ਸ੍ਵ (स्व) (स्वाधीनता)

विशेष : जिन शब्दों के मूल रूप में संयुक्त व्यंजन हैं वे आधुनिक पंजाबी में अलग-अलग व्यंजनों के साथ लिखे जाते हैं किन्तु हिन्दी में ऐसे शब्द संयुक्त व्यंजनों के साथ लिखे जाते हैं। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**
ਕਿਰਪਾ	कृपा
ਭਰਮ	भ्रम
ਮਾਤਰਾ	मात्रा
ਵਿਸ਼ਰਾਮ	विश्राम

10. कहीं-कहीं यदि अंत में '**ਵ**' आ जाए तो उसकी जगह पंजाबी में '**ਅ**' लिख दिया जाता है। जबकि हिंदी में 'व' ही रहता है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**
ਸੁਭਾਅ	स्वभाव

विशेष :- किंतु जब इस (**ਸੁਭਾਅ**) संज्ञा शब्द का विशेषण बनाना हो तो वहाँ हिंदी की तरह पंजाबी में भी 'व' ही रहता है, वहाँ '**ਵ**' को '**ਅ**' नहीं होता। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**
ਸੁਭਾਵਿਕ	स्वाभाविक

11. पंजाबी में जिस शब्द में '**ਹਾਹੇ**' (ਹ) से पहले '**ਏ**' ध्वनि हो तो '**ਹਾਹੇ**' (ਹ) से पहले अक्षर को '**ਏ**' की मात्रा (ੇ) के स्थान पर सिहारी (छोटी 'इ' की मात्रा) लगायी जाती है किंतु हिंदी में ऐसी स्थिति में 'ए' की मात्रा (े) ही लगती है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਸਿਹਤ	सेहत	ਚਿਹਰਾ	चेहरा
ਮਿਹਰ	मेहर	ਮਿਹਰਬਾਨ	मेहरबान
ਮਿਹਨਤ	मेहतन		

नोट : पंजाबी में '**ਇਹ**' इसका अपवाद है।

12. पंजाबी में जिस शब्द में 'ਹਾਹੇ' से पहले ਐ (ੈ) ध्वनि हो तो वहाँ 'ਹਾਹੇ' से पहले अक्षर तो मुक्ता रहता है पर 'ਹਾਹੇ' को सिहारी (छोटी 'इ' की मात्रा) लगती है किंतु हिंदी में जिन शब्दों में 'अह' का क्रम होता है उनमें 'अह' का 'ऐह' उच्चारण मानक है किंतु लिखने में 'ऐह' मानक नहीं है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी (उच्चारित रूप)**	**हिंदी (लिखित रूप)**
ਨਹਿਰ	नैहर	नहर
ਸ਼ਹਿਰ	शैहर	शहर
ਮਹਿਲ	मैहल	महल
ਮਹਿੰਗਾ	मैहंगा	महंगा
ਸ਼ਹਿਦ	शैहद	शहद
ਵਹਿਮ	वैहम	वहम

13. पंजाबी में 'ਰ' के बाद यदि ध्वनि नासिक्य है तो 'न' आता है जबकि हिंदी में प्राय: 'ण' का प्रयोग होता है। जैसे-

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਸਧਾਰਨ	साधारण	ਕਾਰਨ	कारण
ਕਿਰਨ	किरण	ਸ਼ਰਨ	शरण

विशेष : किंतु कहीं-कहीं हिंदी में पंजाबी की भाँति 'र' के बाद 'न' का प्रयोग में देखने को मिलता है। जैसे-

पंजाबी	हिंदी
ਹਿਰਨ	हिरन
ਭਿਖਾਰਨ	भिखारिन

14. पंजाबी में कुछ शब्दों के मूल रूप में अंतिम अक्षर से पूर्व अक्षर के साथ सिहारी (छोटी 'इ' की मात्रा) या ओंकड़ (छोटे 'उ' की मात्रा) प्रयुक्त होती है किंतु आधुनिक पंजाबी में इनका प्रयोग नहीं होता। किंतु हिंदी में ऐसी स्थिति नहीं

है, वहाँ वह मूलरूप में ही लिखा जाता है। जैसे–

पंजाबी (मुल रूप)	पंजाबी (आधुनिक रूप)	हिंदी	पंजाबी (मुल रूप)	पंजाबी (आधुनिक रूप)	हिंदी
ਮਾਲਿਕ	ਮਾਲਕ	मालिक	ਕਠਿਨ	ਕਠਨ	कठिन
ਖਾਤਿਰ	ਖ਼ਾਤਰ	ख़ातिर	ਮੰਦਿਰ	ਮੰਦਰ	मंदिर
ਮਾਹਿਰ	ਮਾਹਰ	माहिर	ਕਾਤਿਲ	ਕਾਤਲ	क़ातिल
ਹਾਸਿਲ	ਹਾਸਲ	हासिल	ਸਾਬਿਤ	ਸਾਬਤ	साबित
ਸ਼ਾਮਿਲ	ਸ਼ਾਮਲ	शामिल	ਜ਼ਾਲਿਮ	ਜ਼ਾਲਮ	ज़ालिम

15. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके मूल रूप में अंतिम व्यंजन को सिहारी या ओंकड़ लगती है किंतु आधुनिक पंजाबी में इन शब्दों के अंत में इन मात्राओं का या तो लोप हो जाता है या इनके (सिहारी) के स्थान पर बिहारी या दुलैंकड़ प्रयुक्त होता है, किंतु हिंदी में ऐसा नहीं है।

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਉੱਨਤੀ	उन्नति	ਕ੍ਰਾਂਤੀ	क्रांति	ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ	सृष्टि
ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ	दृष्टि	ਸਾਧੂ	साधु	ਗੁਰੂ	गुरु

16. दो से अधिक अक्षरों वाले कुछ शब्दों के मूल रूप में पहले दो अक्षरों के साथ दीर्घ स्वर प्रयुक्त होते हैं किंतु आधुनिक पंजाबी में प्राय: दोनों में से एक दीर्घ स्वर का प्रयोग होता है। किंतु हिंदी में वह मूल रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे –

ਪੰਜਾਬੀ (ਮੁਲ ਰੂਪ)	ਪੰਜਾਬੀ (ਆਧੁਨਿਕ ਰੂਪ)	हिंदी
ਆਕਾਸ਼	ਅਕਾਸ਼	आकाश
ਨਾਰਾਜ਼	ਨਰਾਜ਼	नाराज़
ਆਜ਼ਾਦ	ਅਜ਼ਾਦ	आज़ाद
ਚਾਲਾਕ	ਚਲਾਕ	चालाक
ਆਹਾਰ	ਅਹਾਰ	आहार
ਬਾਦਾਮ	ਬਦਾਮ	बादाम
ਬਾਗੀਚਾ	ਬਗੀਚਾ	बागीचा
ਬਾਰੀਕ	ਬਰੀਕ	बारीक
ਰਾਸਤਾ	ਰਸਤਾ	रास्ता

ਦੀਵਾਲੀ	ਦਿਵਾਲ਼ੀ	दीवाली
ਪਾਤਾਲ	ਪਤਾਲ	पाताल

17. संस्कृत से पंजाबी में प्रयुक्त कुछ शब्दों में '**ਯ**' के स्थान पर '**ਜ**' का प्रयोग होता है। किंतु हिंदी में, ऐसे शब्दों में 'य' का ही उच्चारण होता है तथा 'य' ही लिखा जाता है। जैसे–

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਸੰਜਮ	संयम	ਜਤਨ	यत्न
ਕਾਰਜ	कार्य	ਜੋਧਾ	योद्धा
ਜੁਗ	युग	ਜੋਗੀ	योगी

18. संस्कृत 'य' ध्वनि पंजाबी के कई शब्दों में या तो खत्म हो गई है या अंत में '**ਯ**' आने पर इसकी जगह '**ਅ**' या '**ਆ**' आदि लग जाता है। जैसे–
किंतु हिंदी में 'य' ही प्रयुक्त होता है जैस–

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਰਾਸ਼ਟਰੀ	राष्ट्रीय	ਵਪਾਰ	व्यापार
ਭਾਰਤੀ	भारतीय	ਆਰੀਆ	आर्य
ਉਪਾਅ	उपाय		

19. जिन शब्दों के मूल रूप में संयुक्त व्यंजन हैं वे शब्द आधुनिक पंजाबी में अलग-अलग व्यंजनों के साथ लिखे जाते हैं किंतु हिंदी में वे संयुक्त रूप में लिखे जाते हैं और बोले जाते हैं। जैसे–

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਕਿਰਪਾ	कृपा	ਬਿਰਧ	वृद्ध
ਭਰਮ	भ्रम	ਮਾਤਰਾ	मात्रा
ਵਿਸ਼ਵਾਸ	विश्वास	ਵਿਸ਼ਰਾਮ	विश्राम
ਕੇਂਦਰ	केंद्र	ਮੰਤਰ	मंत्र

लिपिगत अंतर

(**1**) गुरुमुखी लिपि में 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' संयुक्त व्यंजन न होने के कारण हिंदी से पंजाबी में अनुवाद करते समय हिंदी ध्वनियों का रूप बदल जाता है। प्राय: 'क्ष' के स्थान पर '**ਖ**', 'त्र' के स्थान पर '**ਤਰ**' तथा 'ज्ञ' के स्थान पर '**ਗਿਆ**' का प्रयोग होता है। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਰੱਖਿਆ	रक्षा	ਰੱਖਿਅਕ	रक्षक
ਖੇਤਰ	क्षेत्र	ਮੰਤਰੀ	मंत्री
ਸ਼ਾਸਤਰ	शास्त्र	ਆਗਿਆ	आज्ञा
ਗਿਆਨ	ज्ञान	ਗਿਆਨੀ	ज्ञानी

(**2**) **गुरुमुखी लिपि में स्वर वर्णों के साथ मात्राओं का प्रयोग होता है जबकि हिंदी में स्वर वर्णों के साथ मात्राएँ नहीं लगतीं। जैसे–**

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਇਸ	इस	ਉਸ	उस
ਇਸ਼ਾਰਾ	इशारा	ਏਕਤਾ	एकता
ਦਵਾਈ	दवाई	ਈਸ਼ਵਰ	ईश्वर

(**3**) गुरुमुखी लिपि में 'ऋ' स्वर नहीं है। पंजाबी में 'ऋ' के लिए '**ਰਿ**' ध्वनि का प्रयोग किया जाता है और लिखने में भी '**ਰਿ**' ही प्रयुक्त होता है जबकि हिंदी में या तो 'ऋ' लिखा जाता है या व्यंजन के साथ इसकी मात्रा (ृ) लगती है परन्तु पंजाबी में जब हिंदी की 'ऋ' की मात्रा वाले शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है तो व्यंजन के पैरों में '**ਰ**' (੍ਰ) डालकर साथ में सिहारी ('इ' की मात्रा) लगा दी जाती है।

नोट : हिंदी में उच्चारण में 'रि' का ही प्रयोग होता है। जैसे –

ऋषि (लिखित रूप) रिषि (उच्चारित रुप)

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਰਿਸ਼ੀ	ऋषि	ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ	कृष्ण
ਪ੍ਰਿਥਵੀ	पृथ्वी	ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ	जागृति

(**4**) देवनागरी लिपि में हलंत 'र्' (आधा र्) का प्रयोग अगले स्वर या व्यंजन के ऊपर (र्) रूप में होता है किंतु पंजाबी हलंत 'र्' का कोई प्रयोग नहीं होता वहाँ पूरा '**ਰ**' ही लगता है। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਕਰਮ	कर्म	ਧਰਮ	धर्म
ਦਰਸ਼ਨ	दर्शन	ਕਰਕ	कर्क
ਮਾਰਗ	मार्ग	ਅਰਥ	अर्थ

(5) देवनागरी लिपि में उच्चारण के अनुरूप स्वरों/व्यंजनों के हलंत रूप प्रयुक्त होते हैं। जबकि पंजाबी में वे पूरे अक्षर के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਜਤਨ	यत्न	ਪਤਨੀ	पत्नी
ਲਗਨ	लग्न	ਮਗਨ	मग्न
ਚਮਤਕਾਰ	चमत्कार	ਹੱਤਿਆ	हत्या

व्याकरणिक अंतर

(1) देवनागरी लिपि में द्वित्व वर्णों का प्रयोग होता है। किंतु गुरुमुखी लिपि में द्वित्व शब्दों के हलंत वर्ण के स्थान पर अद्धक (ੱ) का प्रयोग किया जाता है। संयुक्त व्यंजनों में भी यह परिवर्तन आता है। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਬੱਚਾ	बच्चा	ਪੱਕਾ	पक्का
ਕੱਚਾ	कच्चा	ਖੱਟਾ	खट्टा
ਬੁੱਧ	बुद्ध	ਸ਼ੁੱਧ	शुद्ध

(2) हिंदी और पंजाबी में उच्चारण में भिन्नता होने के कारण शब्द जोड़ों में व्यंजन भेद के कारण भिन्नता आ जाती है। हिंदी के बहुत से शब्दों में प्रयोग होने वाले 'ब', 'ग', 'न' तथा 'ड़' क्रमश: पंजाबी में 'ਭ', 'ਕ', 'ਣ' तथा 'ਡ' में परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਲੋਕ	लोग	ਸਭ	सब
ਗੱਡੀ	गाड़ी	ਪਾਣੀ	पानी

(3) उच्चारण में भिन्नता होने के कारण कई बार पंजाबी शब्दों में हिंदी की अपेक्षा स्वर अथवा व्यंजन की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਆਪਣੀ	अपनी	ਸਕੂਲ	स्कूल
ਗੁਰੂ	गुरू	ਸਥਾਨ	स्थान

(4) उच्चारण में भिन्नता के कारण कई बार पंजाबी में देवनागरी के 'क्ष' तथा 'ष' का उच्चारण 'ਖ' तथा 'ਛ' जैसा होता है इसीलिए इन्हें इसी रूप में लिखा जाता है। जैसे–

पंजाबी	हिंदी	पंजाबी	हिंदी
ਲੱਛਮੀ	लक्ष्मी	ਖਤਰੀ	क्षत्रिय
ਪੰਛੀ	पक्षी	ਈਰਖਾ	ईर्ष्या
ਪੁਰਖ	पुरुष	ਸੰਤੋਖ	संतोष

(5) लिंग परिवर्तन करते समय पंजाबी और हिंदी में अंतर

(i) कुछ आकारांत पुल्लिग शब्दों के लिंग बदलते समय हिंदी में 'आ' को 'इया' हो जाता है। जबकि पंजाबी में 'ਆ' के स्थान पर ਈ (ੀ) हो जाता है।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग (पंजाबी)	स्त्रीलिंग (हिंदी)
डिब्बा	ਡੱਬੀ	डिबिया
बूढ़ा	ਬੁੱਢੀ	बुढ़िया
चूहा	ਚੂਹੀ	चुहिया

(ii) हिंदी में कुछ शब्दों के लिंग बदलते समय अंत में 'इन' प्रत्यय लगता है जबकि पंजाबी में 'ਨ' या 'ਣ' लगता है। जैसे-

पुल्लिग	स्त्रीलिंग (पंजाबी)	स्त्रीलिंग (हिंदी)
सपेरा	ਸਪੇਰਨ	सपेरिन
धोबी	ਧੋਬਨ	धोबिन
तेली	ਤੇਲਣ	तेलिन
नाई	ਨਾਇਣ	नाइन

विशेष : कहीं-कहीं पंजाबी में 'ई' प्रत्यय भी लगता है। जैसे-

कुम्हार	ਘੁਮਿਆਰੀ	कुम्हारिन

(iii) कुछ शब्दों के लिंग बदलते समय हिंदी में अंतिम स्वर के स्थान पर 'आनी' लगा दिया जाता है जबकि पंजाबी में अंत में 'कन्ना' (ਾ) तथा 'ਣੀ' लगा दिया जाता है।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग (पंजाबी)	स्त्रीलिंग (हिंदी)
सेठ	ਸਿਠਾਣੀ	सेठानी
जेठ	ਜਿਠਾਣੀ	जेठानी
नौकर	ਨੌਕਰਾਣੀ	नौकरानी

विशेष : कहीं-कहीं हिंदी में 'आइन' लगा कर भी स्त्रीलिंग बनता है परन्तु पंजाबी में वहाँ भी अंत में 'कन्ना' (ਾ) तथा 'ਣੀ' ही लगता है। जैसे-

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग (पंजाबी)**	**स्त्रीलिंग (हिंदी)**
पंडित	ਪੰਡਤਾਣੀ	पंडिताइन
बनिया	ਬਣਿਆਣੀ	बनियाइन

(**iv**) पंजाबी में 'अक' अंत वाले पुल्लिग शब्दों में 'कन्ना' लगा दिया जाता है जबकि हिंदी में 'अक' अंत वाले पुल्लिग शब्दों में अंत में 'इका' लगाकर स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं। जैसे-

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग (पंजाबी)**	**स्त्रीलिंग (हिंदी)**
अध्यापक	ਅਧਿਆਪਕਾ	अध्यापिका
सेवक	ਸੇਵਕਾ	सेविका
नायक	ਨਾਇਕਾ	नायिका

(**v**) पंजाबी और हिंदी में लिंग परिवर्तन में कहीं-कहीं समानता भी हैं। जैसे-

- दोनों में 'अ' या 'आ' को 'ई' होता है। जैसे-

पुल्लिग	**पंजाबी**	**हिंदी**	**पुल्लिग**	**पंजाबी**	**हिंदी**
पुत्र	ਪੁੱਤਰੀ	पुत्री	चाचा	ਚਾਚੀ	चाची
दादा	ਦਾਦੀ	दादी	नाना	ਨਾਨੀ	नानी

- दोनों में 'अंत' में 'नी' लगाकर

पुल्लिग	**पंजाबी**	**हिंदी**	**पुल्लिग**	**पंजाबी**	**हिंदी**
सरदार	ਸਰਦਾਰਨੀ	सरदारनी	शेर	ਸ਼ੇਰਨੀ	शेरनी
मोर	ਮੋਰਨੀ	मोरनी	फकीर	ਫਕੀਰਨੀ	फकीरनी

- कुछ अन्य शब्द जिनमें समानता है-

पंजाबी	**हिंदी**	**पंजाबी**	**हिंदी**
ਮਾਤਾ	माता	ਭਤੀਜੀ	भतीजी

(**6**) **पंजाबी और हिंदी के शब्दों में बहुवचन बनाने में भी कुछ अंतर है। जैसे-**

(*i*) जिन एक वचन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में मुक्ता अक्षर हो, उनका पंजाबी में बहुवचन रूप बनाते समय 'कन्ने' के ऊपर बिंदी लगा दी जाती है किंतु हिंदी में मुक्ता (अकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'अ') को 'एँ' हो जाता है। जैसे-

एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)	एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)
किताब	ਕਿਤਾਬਾਂ	किताबें	मशीन	ਮਸ਼ੀਨਾਂ	मशीनें
सड़क	ਸੜਕਾਂ	सड़कें	कमीज़	ਕਮੀਜ਼ਾਂ	कमीज़ें
किरण	ਕਿਰਨਾਂ	किरणें	रात	ਰਾਤਾਂ	रातें

(*ii*) जिन एकवचन स्त्रीलिंग शब्द के अंत में कन्ना (ਾ) अर्थात् शब्द आकारांत हो, उन का बहुवचन 'ਵਾਂ' लगाकर बनाया जाता है। जबकि हिंदी में 'आकारांत' एकवचन शब्दों के अंत में 'एँ' जुड़कर बहुवचन बनता है। जैसे–

एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)	एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)
सभा	ਸਭਾਵਾਂ	सभाएँ	हवा	ਹਵਾਵਾਂ	हवाएँ
कविता	ਕਵਿਤਾਵਾਂ	कविताएँ	माता	ਮਾਤਾਵਾਂ	माताएँ
दुर्घटना	ਦੁਰਘਟਨਾਵਾਂ	दुर्घटनाएँ	अध्यापिका	ਅਧਿਆਪਕਾਵਾਂ	अध्यापिकाएँ

(*iii*) पंजाबी में जिन एकवचन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में ओंकड़ (ੁ), दुलैंकड़ (ੂ) होते हैं, उनका बहुवचन रूप अंत में 'ਆਂ लगाकर बनाया जाता है। किन्तु हिंदी में उकारांत तथा ऊकारांत शब्दों में बहुवचन रूप में अंत में 'एँ' जुड़ता है।

एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)	एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)
वस्तु	ਵਸਤੂਆਂ	वस्तुएँ	धातु	ਧਾਤੂਆਂ	धातुएँ

(*iv*) पंजाबी में जिन एकवचन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में बिहारी (ੀ) अर्थात् बड़ी 'ई' की मात्रा लगी होती है, उनका बहुवचन अंत में 'ਆਂ' लगाकर बनाया जाता है जबकि हिंदी में इकारांत या ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' लगता है। यह ध्यान रखें कि हिंदी में ईकारांत शब्दों में अंतिम दीर्घ 'ई' को बहुवचन बनाते समय ह्रस्व 'इ' में बदल दिया जाता है। जैसे–

एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)	एकवचन	बहुवचन (पंजाबी)	बहुवचन (हिंदी)
टोपी	ਟੋਪੀਆਂ	टोपियाँ	कली	ਕਲੀਆਂ	कलियाँ
लड़की	ਲੜਕੀਆਂ	लड़कियाँ	नदी	ਨਦੀਆਂ	नदियाँ
बोली	ਬੋਲੀਆਂ	बोलियाँ	पुत्री	ਪੁੱਤਰੀਆਂ	पुत्रियाँ

(*v*) कहीं-कहीं आकारांत पुल्लिग शब्दों से बहुवचन बनाने में पंजाबी तथा हिंदी में समानता भी है। दोनों में 'आ' को 'ए' करके बहुवचन बना दिया जाता है।

पुल्लिग	पंजाबी	हिंदी	पुल्लिग	पंजाबी	हिंदी
कपड़ा	ਕੱਪੜੇ	कपड़े	घोड़ा	ਘੋੜੇ	घोड़े
पत्ता	ਪੱਤੇ	पत्ते	मामा	ਮਾਮੇ	मामे
रुपया	ਰੁਪਏ	रुपये	संतरा	ਸੰਤਰੇ	संतरे

हिंदी और पंजाबी की वाक्य-संरचना

1. हिंदी तथा पंजाबी के बहुत से वर्णों के उच्चारण में समानता है। बहुत सी शब्दावली एक जैसी है। वाक्य रचना भी प्राय: मिलती जुलती है। जैसे-

पंजाबी वाक्य : ਰਾਮ ਨੇ ਰਾਵਣ ਨੂੰ ਤੀਰ ਨਾਲ਼ ਮਾਰਿਆ।

हिंदी वाक्य : राम ने रावण को बाण से मारा।

उपर्युक्त वाक्यों को देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों भाषाओं अर्थात् पंजाबी और हिंदी की वाक्य-रचना समान है। इसी कारण कर्ता, कर्म, करण और क्रिया का एक जैसे प्रयोग हुआ है।

2. लिंग के अनुसार क्रिया रूप : पंजाबी और हिंदी में क्रिया रूप, लिंग के अनुसार बदल जाता है।

(क) कर्तृवाच्य में क्रिया का लिंग मुख्यतः कर्त्ता के अनुसार होता है। जैसे -

(*i*) ਨੀਰਜ ਦਸਵੀਂ ਜਮਾਤ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ।

(*ii*) ਮੁੰਡਾ ਹਾਕੀ ਖੇਡਦਾ ਹੈ।

(*iii*) ਅੰਜੂ ਦਸਵੀਂ ਜਮਾਤ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਦੀ ਹੈ।

(*iv*) ਕੁੜੀ ਹਾਕੀ ਖੇਡਦੀ ਹੈ।

उपर्युक्त कर्तृवाच्य के उदाहरणों में पहले दो वाक्यों में क्रिया करने वाले (कर्त्ता) पुल्लिग (ਨੀਰਜ, ਮੁੰਡਾ) हैं, अत: क्रिया भी पुल्लिग (**ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ, ਖੇਡਦਾ**

ਹੈ) है। तीसरे तथा चौथे वाक्य में क्रिया करने वाले (कर्त्ता) स्त्रीलिंग (**ਅੰਜੂ, ਕੁੜੀ**) हैं, अत: क्रिया भी स्त्रीलिंग (**ਪੜ੍ਹਦੀ ਹੈ, ਖੇਡਦੀ ਹੈ**) हैं।

हिंदी में भी पंजाबी की ही तरह कर्तृवाच्य में क्रिया का लिंग मुख्यत: 'कर्त्ता' के अनुसार ही होता है। अत: उपर्युक्त पंजाबी के वाक्यों का अनुवाद इस तरह होगा –

(*i*) नीरज दसवीं कक्षा में पढ़ता है।

(*ii*) लड़का हॉकी खेलता है।

(*iii*) अंजु दसवीं कक्षा में पढ़ती है।

(*iv*) लड़की हॉकी खेलती है।

(ख) पंजाबी और हिंदी में कर्मवाच्य में क्रिया का लिंग मुख्यत: 'कर्म' के अनुसार होता है। जैसे–

(*i*) **ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਦੁੱਧ ਡੁੱਲ੍ਹ ਗਿਆ।**

(*ii*) **ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਚਾਹ ਡੁੱਲ੍ਹ ਗਈ।**

उपर्युक्त कर्मवाच्य के उदाहरणों में पहले वाक्य में क्रिया का कर्म (**ਦੁੱਧ**) पुल्लिंग है। अत: क्रिया भी पुल्लिंग (**ਡੁੱਲ੍ਹ ਗਿਆ**) है। जबकि दूसरे वाक्य में क्रिया का कर्म (**ਚਾਹ**) स्त्रीलिंग है। अत: क्रिया भी स्त्रीलिंग (**ਡੁੱਲ੍ਹ ਗਈ**) है।

इन वाक्यों का हिंदी में भी इसी तरह का रूप मिलेगा। जैसे–

(*i*) मुझसे दूध गिर गया।

(*ii*) मुझसे चाय गिर गयी।

(ग) पंजाबी और हिंदी में भाववाच्य में क्रिया सदैव पुल्लिंग में रहती है। जैसे –

(*i*) **ਮੁੰਡੇ ਤੋਂ ਖੇਡਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ।**

(*ii*) **ਕੁੜੀ ਤੋਂ ਖੇਡਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ।**

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया का लिंग कर्त्ता के लिंग के अनुसार नहीं है। कर्त्ता पुल्लिंग (**ਮੁੰਡਾ**) होने पर भी क्रिया पुल्लिंग (**ਖੇਡਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ**) में प्रयुक्त हुई है तथा कर्त्ता स्त्रीलिंग (**ਕੁੜੀ**) होने पर भी क्रिया पुल्लिंग (**ਖੇਡਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ**) में प्रयुक्त हुई है। इन वाक्यों का हिंदी में भी इसी तरह का रूप मिलेगा। जैसे –

(*i*) लड़के से खेला नहीं जाता।

(*ii*) लड़की से खेला नहीं जाता।

3. **वचन के अनुसार क्रिया रूप :** पंजाबी और हिंदी में क्रिया के दो वचन होते हैं – एकवचन तथा बहुवचन। इनमें एक के लिए एकवचन की क्रिया तथा अनेक के लिए बहुवचन की क्रिया प्रयुक्त होती है। जैसे–

पंजाबी में : (*i*) ਬੱਚਾ ਹੱਸਦਾ ਹੈ।

(*ii*) ਬੱਚੇ ਹੱਸਦੇ ਹਨ।

उपर्युक्त पहले वाक्य में कर्त्ता एकवचन (**ਬੱਚਾ**) है, अतः क्रिया भी एकवचन (**ਹੱਸਦਾ ਹੈ**) में प्रयुक्त हुई है जबकि दूसरे वाक्य में कर्त्ता बहुवचन (**ਬੱਚੇ**) है, अतः क्रिया भी बहुवचन (**ਹੱਸਦੇ ਹਨ**) में प्रयुक्त हुई है। इन वाक्यों का हिंदी में भी इसी तरह का रूप मिलेगा। जैसे–

हिंदी में : (*i*) बच्चा हँसता है।

(*ii*) बच्चे हँसते हैं।

4. **विशेषण के प्रयोग में वाक्य की स्थिति**

पंजाबी तथा हिंदी दोनों में संज्ञा, वचन तथा लिंग के अनुसार विशेषण बोधक शब्द का रूप बदल जाता है। जैसे—

पंजाबी रूप	हिंदी रूप
(*i*) ਚੰਗਾ ਲੜਕਾ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ।	(*i*) अच्छा लड़का पढ़ता है।
(*ii*) ਚੰਗੇ ਲੜਕੇ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।	(*ii*) अच्छे लड़के पढ़ते हैं।
(*iii*) ਚੰਗੀ ਲੜਕੀ ਪੜ੍ਹਦੀ ਹੈ।	(*iii*) अच्छी लड़की पढ़ती है।
(*iv*) ਚੰਗੀਆਂ ਲੜਕੀਆਂ ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ ਹਨ।	(*iv*) अच्छी लड़कियाँ पढ़ती हैं।

उपर्युक्त पंजाबी तथा हिंदी में पहले तीन वाक्यों में समानता है। पहले वाक्य में संज्ञा एकवचन (**ਲੜਕਾ**, लड़का) होने से विशेषण भी एकवचन (**ਚੰਗਾ**, अच्छा) है। दूसरे वाक्य में संज्ञा बहुवचन (**ਲੜਕੇ**, लड़के) होने से विशेषण भी बहुवचन (**ਚੰਗੇ**, अच्छे) है। तीसरे वाक्य में संज्ञा स्त्रीलिंग व एकवचन (**ਲੜਕੀ**, लड़की) होने से विशेषण भी स्त्रीलिंग व एकवचन (**ਚੰਗੀ**, अच्छी) है।

किन्तु चौथे वाक्य में असमानता है। पंजाबी में चौथे वाक्य में संज्ञा स्त्रीलिंग होने के साथ-साथ बहुवचन रूप (**ਲੜਕੀਆਂ**) में प्रयुक्त होने से विशेषण शब्द भी स्त्रीलिंग बहुवचन (**ਚੰਗੀਆਂ**) रूप में प्रयुक्त हुआ है।

परन्तु हिंदी में चौथे वाक्य में भले ही संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग होने के साथ बहुवचन (लड़कियाँ) है किंतु विशेषण शब्द में कोई परिवर्तन नहीं आया। वहाँ

विशेषण स्त्रीलिंग एकवचन (अच्छी) रूप में ही प्रयुक्त हुआ है। **यह पंजाबी तथा हिंदी भाषाओं की प्रकृति में भिन्नता का सूचक है।**

यह वास्तव में विशेषण रूपों के अंत में आने वाले 'आ' के कारण हुआ है। जैसे–

पंजाबी रूप	हिंदी रूप
अन्य उदाहरण :	
ਚੰਗਾ, ਚੰਗੇ, ਚੰਗੀ, ਚੰਗੀਆਂ	अच्छा,अच्छे, अच्छी
ਕਾਲ਼ਾ, ਕਾਲ਼ੇ, ਕਾਲ਼ੀ, ਕਾਲ਼ੀਆਂ	काला, काले, काली
ਗੋਰਾ, ਗੋਰੇ, ਗੋਰੀ, ਗੋਰੀਆਂ	गोरा, गोरे, गोरी
ਹਰਾ, ਹਰੇ, ਹਰੀ, ਹਰੀਆਂ	हरा, हरे, हरी
ਨੀਲਾ, ਨੀਲੇ, ਨੀਲੀ, ਨੀਲੀਆਂ	नीले, नीले, नीली
ਪੀਲ਼ਾ, ਪੀਲ਼ੇ, ਪੀਲ਼ੀ, ਪੀਲ਼ੀਆਂ	पीला, पीले, पीली

5. **पुरुष के अनुसार क्रिया रूप :** पंजाबी और हिंदी में क्रियाओं के तीन पुरुष होते हैं – उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष। क्रिया के तीनों पुरुषों में प्रयोग होते हैं। पंजाबी और हिंदी में इनके प्रयोग इस तरह होते हैं–

पंजाबी			**हिंदी**	
पुरुष	**एकवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	ਮੈਂ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹਾਂ।	ਅਸੀਂ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਾਂ।	मैं पढ़ता हूँ।	हम पढ़ते हैं।
मध्यम पुरुष	ਤੂੰ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈਂ।	ਤੁਸੀਂ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹੋ।	तू पढ़ता है।	तुम पढ़ते हो।
अन्य पुरुष	ਉਹ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ।	ਉਹ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।	वह पढ़ता है।	वे पढ़ते हैं।

6. **काल के अनुसार क्रिया रूप :** पंजाबी और हिंदी में काल के अनुसार भी क्रिया में प्राय: एक जैसे ही परिवर्तन होता है।

	पंजाबी	**हिंदी**
वर्तमान काल	ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ।	अनिल पुस्तक पढ़ता है।
	ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹ ਰਿਹਾ ਹੈ।	अनिल पुस्तक पढ़ रहा है।
	ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹ ਰਿਹਾ ਹੋਵੇਗਾ।	अनिल पुस्तक पढ़ रहा होगा।
भूतकाल	ਅਨਿਲ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੀ।	अनिल ने पुस्तक पढ़ी।
	ਅਨਿਲ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੀ ਸੀ।	अनिल ने पुस्तक पढ़ी थी।

	ਅਨਿਲ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੀ ਹੈ।	अनिल ने पुस्तक पढ़ी है।
	ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹਦਾ ਸੀ।	अनिल पुस्तक पढ़ता था।
	ਅਨਿਲ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੀ ਹੋਵੇਗੀ।	अनिल ने पुस्तक पढ़ी होगी।
	ਸ਼ਾਇਦ ਅਨਿਲ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੀ ਹੋਵੇ।	शायद अनिल ने पुस्तक पढ़ी हो।
	ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹਦਾ ਤਾਂ ਪਾਸ ਹੋ ਜਾਂਦਾ।	अनिल पुस्तक पढ़ता तो पास हो जाता।
भविष्यत काल	ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੇਗਾ।	अनिल पुस्तक पढ़ेगा।
	ਸ਼ਾਇਦ ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੇ।	शायद अनिल पुस्तक पढ़े।
	ਜੇ ਅਨਿਲ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੇਗਾ ਤਾਂ ਪਾਸ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ।	यदि अनिल पुस्तक पढ़ेगा तो पास हो जाएगा।

अत: पंजाबी और हिंदी में अपनी-अपनी प्रकृति के कारण शब्दों में यद्यपि अंतर है। तथापि दोनों भाषाओं में क्रिया रूप में होने वाला परिवर्तन एक समान है।

नीचे कुछ पंजाबी वाक्यों के हिंदी स्वरूप को देखिए :

	पंजाबी वाक्य	हिंदी वाक्य
1.	ਸੱਚੇ ਬਹਾਦਰ ਕਦੇ ਵੀ ਯੁੱਧ ਵਿੱਚ ਪਿੱਠ ਨਹੀਂ ਦਿਖਾਉਂਦੇ।	सच्चे बहादुर कभी भी युद्ध में पीठ नहीं दिखाते।
2.	ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।	माता-पिता को अपने बच्चों का ध्यान रखना चाहिए।
3.	ਮਿਹਨਤੀ ਆਦਮੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਫ਼ਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।	परिश्रमी आदमी सदैव सफल होता है।
4.	ਹਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਰਜਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਖੇਡਦਾ ਹੈ।	हरपाल सिंह पढ़ता है और राजेंद्र कुमार खेलता है।
5.	ਮੇਰੇ ਵੱਡੇ ਭਰਾ ਦਾ ਵਿਹਾਰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਨਰਮ ਹੈ।	मेरे बड़े भाई का व्यवहार बहुत ही नरम है।
6.	ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ 'ਖ਼ਾਲਸ ਪੰਥ' ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕੀਤੀ ਸੀ।	गुरु गोबिंद सिंह जी ने 'खालसा पंथ' का निर्माण किया।
7.	ਸਾਨੂੰ ਕਦੇ ਵੀ ਕਿਸੇ ਦਾ ਬੁਰਾ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ।	हमें कभी भी किसी का बुरा नहीं करना चाहिए।

8.	ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਇੱਕ ਉੱਚੀ-ਸੁੱਚੀ ਤੇ ਬਹੁਮੁਖੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਦੇ ਮਾਲਕ ਸਨ।	गुरु नानक देव जी एक ऊँचे-सच्चे और बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे।
9.	ਉਹੀ ਵਿਅਕਤੀ ਸਭ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾ ਸਵਾਰਥ ਤੋਂ ਰਹਿਤ ਹੋਵੇ।	वही व्यक्ति सब की सेवा कर सकता है जो पूरी तरह स्वार्थ रहित हो।
10.	ਸਾਨੂੰ ਪ੍ਰਭੂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।	हमें ईश्वर पर विश्वास करना चाहिए।
11.	ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ, ਪੰਜਾਬ ਅਤੇ ਹਰਿਆਣਾ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਹੈ।	चंडीगढ़ पंजाब तथा हरियाणा की राजधानी है।
12.	ਸ਼ਹੀਦ ਸੁਖਦੇਵ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਦ੍ਰਿੜ ਸੁਭਾਅ ਦੇ ਸਨ।	शहीद सुखदेव बचनप से ही दृढ़ स्वभाव के थे।
13.	ਅੱਜ ਵਿਗਿਆਪਨ ਕਲਾ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ਼ ਉੱਨਤੀ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ।	आज विज्ञापन कला तेज़ी से उन्नति कर रही है।
14.	ਇਹ ਉਹੀ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਕੱਲ ਇਨਾਮ ਮਿਲ਼ਿਆ ਸੀ।	यह वही विद्यार्थी है जिसे कल इनाम मिला था।
15.	ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਸੋਨੇ ਦੀ ਚਿੜੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।	भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था।
16.	ਕੁੱਝ ਪਾਉਣ ਲਈ ਕੁੱਝ ਗਵਾਉਣਾ ਵੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।	कुछ पाने के लिए कुछ गँवाना भी पड़ता है।
17.	ਵੱਡਾ ਉਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਆਪਣੇ ਕੋਲ਼ ਬੈਠੇ ਨੂੰ ਛੋਟਾ ਮਹਿਸੂਸ ਨਾ ਹੋਣ ਦੇਵੇ।	बड़ा वह होता है जो अपने पास बैठे हुए को छोटा महसूस न होने दे।
18.	ਮੇਰਾ ਵੱਡਾ ਮੁੰਡਾ ਦਸਵੀਂ ਦੀ ਪਰੀਖਿਆ ਵਿੱਚੋਂ ਰਾਜ ਭਰ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲੇ ਨੰਬਰ 'ਤੇ ਆਇਆ ਹੈ।	मेरा बड़ा लड़का दसवीं की परीक्षा में से राज्य भर में से प्रथम स्थान पर आया है।
19.	ਸੁਹਾਗ ਕੁੜੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਵੇਲ਼ੇ ਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।	सुहाग लड़की के विवाह के अवसर पर गाये जाते हैं।
20.	ਆਮਦਨ ਤੋਂ ਵੱਧ ਖ਼ਰਚ ਕਰਨਾ ਚੰਗੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ।	आय से अधिक व्यय करना अच्छी बात नहीं।

21. ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨਾ ਸਾਡਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਧਰਮ ਹੈ।	माता-पिता की सेवा करना हमारा सबसे बड़ा धर्म है।
22. ਹਰ ਰੋਜ਼ ਸਵੇਰੇ ਦੰਦਾਂ ਨੂੰ ਸਾਫ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।	हर रोज़ दाँतों को साफ करना चाहिए।
23. ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਮੇਰੀ ਆਨ, ਬਾਨ ਅਤੇ ਸ਼ਾਨ ਹੈ।	भारत देश मेरी आन, बान और शान है।
24. ਮਿਹਨਤੀ ਕਦੇ ਕੰਮ ਤੋਂ ਜੀ ਨਹੀਂ ਚੁਰਾਉਂਦਾ।	मेहनती कभी काम से जी नहीं चुराता।
25. ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਨੂੰ ਰਾਸ਼ਟਰ ਪਿਤਾ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।	महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता कहा जाता है।
26. ਨਫ਼ਰਤ ਉੱਤੇ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ਼ ਜਿੱਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ।	नफ़रत पर प्रेम के साथ जीत प्राप्त करो।
27. ਵਿਹਲੇ ਬੈਠ ਕੇ ਕੀਮਤੀ ਸਮਾਂ ਨਹੀਂ ਗੁਆਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।	व्यर्थ बैठकर बहुमूल्य समय नहीं गँवाना चाहिए।
28. ਮਾਂ ਆਪ ਹਰ ਦੁੱਖ ਸਹਾਰ ਕੇ ਆਪਣੇ ਲਾਡਲੇ ਨੂੰ ਹਰ ਸੁੱਖ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।	माँ स्वयं हर दु:ख सहकर अपने लाडले को हर सुख देती है।
29. ਪੰਚਾਇਤ ਦੇ ਮੁਖੀ ਨੂੰ ਸਰਪੰਚ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।	पंचायत के मुखिया को सरपंच कहते हैं।
30. ਰਾਜ ਘਾਟ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਦੀ ਸਮਾਧ ਹੈ।	राज घाट महात्मा गाँधी की समाधि है।
31. ਪੰਜਾਬ ਸਕੂਲ ਸਿੱਖਿਆ ਬੋਰਡ ਦਾ ਦਫ਼ਤਰ ਮੁਹਾਲੀ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਹੈ।	पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड का कार्यालय मोहाली शहर में है।
32. ਛੁੱਟੀ ਉਪਰੰਤ ਮੈਂ ਸਿੱਧਾ ਘਰ ਚਲਾ ਗਿਆ ਸੀ।	छुट्टी के उपरान्त मैं सीधा घर चला गया था।
33. ਸ੍ਰੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਨਾਂ ਦੇਵਕੀ ਸੀ।	श्री कृष्ण की माता का नाम देवकी था।
34. ਬੁੱਢੀ ਦਾ ਗੁੱਸਾ ਜਲਦੀ ਹੀ ਪਿਆਰ ਵਿੱਚ ਬਦਲ ਗਿਆ।	बुढ़िया का गुस्सा जल्दी ही प्यार में बदल गया।
35. ਸੰਤੋਖ ਦਾ ਫ਼ਲ ਮਿੱਠਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।	संतोष का फल मीठा होता है।
36. ਮੁੰਨੀ ਝਾਂਜਰ ਪਾ ਕੇ ਬਹੁਤ ਖ਼ੁਸ਼ ਸੀ।	मुन्नी पाजेब डालकर बहुत खुश थी।

37. ਸਾਡੀ ਅਧਿਆਪਕਾ ਸਾਨੂੰ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰ ਨਾਲ਼ ਪੜ੍ਹਾਉਂਦੀ ਹੈ।	अध्यापिका हमें बहुत ही प्यार के साथ पढ़ाती है।
38. ਪਰੀਖਿਆ ਖ਼ਤਮ ਹੋਣ ਨੂੰ ਦਸ ਮਿੰਟ ਬਾਕੀ ਹਨ।	परीक्षा समाप्त होने को दस मिनट शेष हैं।
39. ਪੰਛੀ ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਆਲ੍ਹਣਿਆਂ ਵਿੱਚ ਚਲੇ ਗਏ।	पक्षी शाम को अपने-अपने घोंसले में चले गये।
40. ਉਸਦਾ ਦੁੱਖ ਸੁਣ ਕੇ ਮੇਰੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਹੰਝੂ ਆ ਗਏ।	उसका दु:ख सुनकर मेरी आँखों में से आँसू आ गये।

निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

1. ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਵਿੱਚ ਹੈ।
2. ਦਿਵਾਲ਼ੀ ਕੱਤਕ ਦੀ ਮੱਸਿਆ ਦੀ ਰਾਤ ਨੂੰ ਮਨਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।
3. ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਸਥਾਨਾਂ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਨਾਲ਼ ਸਾਡੇ ਗਿਆਨ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
4. ਛੱਬੀ ਜਨਵਰੀ ਅਤੇ ਪੰਦਰਾਂ ਅਗਸਤ ਸਾਡੇ ਕੌਮੀ ਤਿਉਹਾਰ ਹਨ।
5. ਸਾਡੇ ਹਿਰਦੇ ਵਿੱਚ ਆਪਣੀ ਮਾਂ-ਬੋਲੀ ਲਈ ਪਿਆਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।
6. ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਰਾਭਾ ਨੇ ਉੱਨੀ ਸਾਲ ਦੀ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਵਿੱਚ ਦੇਸ਼ ਲਈ ਸ਼ਹੀਦੀ ਪਾਈ।
7. ਮਿਠਾਸ ਅਤੇ ਨਿਮਰਤਾ ਸਾਰੇ ਗੁਣਾਂ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਹੈ।
8. ਵਿਗਿਆਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਲਗਾਤਾਰ ਵਾਧਾ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।
9. ਅਖ਼ਬਾਰ ਦਾ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਸਥਾਨ ਹੈ।
10. ਜਨਸੰਖਿਆ ਦੇ ਵੱਧਣ ਨਾਲ਼ ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰੀ ਵੀ ਵੱਧ ਰਹੀ ਹੈ।
11. ਸਾਨੂੰ ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਬੱਚਤ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
12. ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣਾ ਅੱਜ ਖ਼ਰਾਬ ਕਰੋਗੇ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡਾ ਕਲ੍ਹ ਵੀ ਖ਼ਰਾਬ ਹੋ ਜਾਏਗਾ।
13. ਜਨਤਕ ਸੰਪਤੀ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰੋ ਅਤੇ ਹਿੰਸਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹੋ।
14. ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ ਨਾਲ਼ੇ ਨੌਕਰੀ ਕਰਦਾ ਹੈ।
15. ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਕਿਰਤ ਕਰਕੇ ਖਾਣ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਹੈ
16. ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ਼ ਕਦੇ ਵੀ ਹੇਰਾਫੇਰੀ ਨਹੀਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ।
17. ਜੇਕਰ ਨੌਕਰੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲ਼ ਰਹੀ ਤਾਂ ਸ੍ਵੈ-ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਦਾ ਰਸਤਾ ਅਪਨਾਓ।
18. ਢੋਲ ਦੀ ਅਵਾਜ਼ ਸੁਣ ਕੇ ਅਸੀਂ ਘਰੋਂ ਬਾਹਰ ਆ ਗਏ।
19. ਸਿਆਣਾ ਇਨਸਾਨ ਖ਼ਾਲੀ ਸਮੇਂ ਦਾ ਵੀ ਸਦਉਪਯੋਗ ਕਰਦਾ ਹੈ।
20. ਘਰ ਵਾਂਗ ਸਕੂਲ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਫ਼ਾਈ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

पाठ–14

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

भाग – क	भाग – ख
1. प्रदीप ने कक्षा में प्रथम आने के लिये लिए बहुत मेहनत की।	1. प्रदीप ने कक्षा में प्रथम आने के आकाश–पाताल एक कर दिया।
2. परीक्षा खत्म होने के बाद वह निश्ंचित होकर सो रहा है।	2. परीक्षा खत्म होने के बाद वह घोड़े बेचकर सो रहा है।
3. नौ साल के बच्चे को दसवीं के सवाल हल करते देखकर मैं हैरान रह गया।	3. नौ साल के बच्चे को दसवीं के सवाल हल करते देखकर मैंने दाँतों तले उँगली दबा ली।

उपर्युक्त उदाहारणों में 'भाग–क' के वाक्य साधारण तरीके से तथा 'भाग–ख' के वाक्य विशेष तरीके से कहे गये हैं। इसी कारण 'भाग–ख' के वाक्य 'भाग–क' के वाक्यों की अपेक्षा अधिक सशक्त व प्रभावशाली हैं।

अतएव ऐसे वाक्यांश जो विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

'मुहावरा' शब्द मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है– 'रूढ़ वाक्यांश'। अत: मुहावरे शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा अपने रूढ़ अर्थ को प्रकट करते हैं।

लोकोक्ति

निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए :

यह कैसे हो सकता है कि रमेश ने कुछ न किया हो और सुरेन्द्र ने उसकी पिटाई कर दी क्योंकि सब जानते हैं कि एक हाथ से ताली नहीं बजती।

उपर्युक्त वाक्य में वक्ता कहना चाहता है कि झगड़ा दोनों तरफ से हुआ होगा अर्थात् सुरेन्द्र ने रमेश की पिटाई यूं ही नहीं की। उसने इस बात को सिद्‌ध करने के लिये लोक में प्रचलित उक्ति 'एक हाथ से ताली नहीं बजती'' को आधार बनाया है अर्थात् जिस तरह एक हाथ से ताली नहीं बज सकती उसी प्रकार झगड़े का कारण एक व्यक्ति नहीं अपितु दोनों हैं।

अत: लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। इसमें किसी अप्रस्तुत कथन

के सहारे प्रस्तुत अर्थ को उजागर किया जाता है। लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है। इसके किसी भी शब्द को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

भाषा के प्रयोग में अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व रुचिकर बनाने के लिए मुहावरे तथा लोकोक्तियों की बहुत उपादेयता है। इनके प्रयोग से भाषा में सरसता, सहजता, गति व विलक्षणता आदि गुण स्वयं ही आ जाते हैं।

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर

मुहावरे और लोकोक्ति में निम्नलिखित अंतर हैं :

1. मुहावरे का प्रयोग वाक्यांश रूप में होता है। जैसे- **अकल मारी जाना** (उस समय मुझे कुछ सूझा ही नहीं, मेरी तो अकल ही मारी गयी थी) इस वाक्य में '**अकल मारी जाना**' मुहावरा पूरा वाक्य न होकर वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

   जबकि लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है। जैसे- बेटा! दोनों भाई मिलकर रहना क्योंकि **एक और एक ग्यारह होते हैं।** इस वाक्य में '**एक और एक ग्यारह होते हैं**' लोकोक्ति अपने आप में पूरी है तथा वाक्य में उसकी अलग सत्ता विद्यमान है।
2. मुहावरों में लिंग, वचन आदि के अनुसार परिवर्तन संभव है? जैसे- '**लड़का बगलें झाँकने लगा**', '**लड़की बगलें झाँकने लगी**', '**लड़के बगलें झाँकने लगे**', '**लड़कियाँ बगलें झाँकने लगीं**'। किंतु लोकोक्तियों में परिवर्तन संभव नहीं। इसके किसी भी शब्द को घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता और न ही किसी शब्द को आगे-पीछे किया जा सकता है। जैसे- '**एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है**' लोकोक्ति कैसे भी, कहीं भी प्रयुक्त हो, ऐसे ही रहेगी।
3. मुहावरे केवल भाषा में सजीवता व चमत्कार उत्पन्न करते हैं जबकि लोकोक्ति का प्रयोग वक्ता/लेखक अपनी बात के समर्थन के लिए करता है।
4. मुहावरे आमतौर पर 'ना' अंत वाले होते हैं। जैसे- **अपनी खिचड़ी अलग पकाना, अँगूठा दिखाना** आदि में अंत में 'ना' है किंतु लोकोक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं है।
5. मुहावरों में आमतौर पर क्रिया, दशा आदि की अभिव्यक्ति होती है जबकि लोकोक्ति में कोई न कोई सच्चाई अथवा अनुभव छिपा रहता है।

कुछ प्रचलित मुहावरे

1. **अंग-अंग मुसकाना** (बहुत प्रसन्न होना) - कक्षा में प्रथम आने पर उसका अंग-अंग मुसकरा रहा था।
2. **अंगारे उगलना** (कठोर बातें करना) - वह तो अपने मुँह से हमेशा अंगारे उगलता रहता है।
3. **अंधे की लकड़ी** (एकमात्र सहारा) - श्रवण अपने माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी था।
4. **अकल चकराना** (कुछ समझ में न आना) - गणित का प्रश्न-पत्र देखते ही सुमन की अकल चकरा गई।
5. **अकल के घोड़े दौड़ाना** (तरह-तरह के विचार करना) - ज़रा अकल के घोड़े दौड़ाओ तभी इस मुसीबत से पार हो सकते हो।
6. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा आप करना) - तुम्हें अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता।
7. **आँखें चुराना** (छिपना) - जबसे उसने मुझसे 5000/- रुपये उधार लिए हैं, वह मुझसे आँखें चुराता फिरता है।
8. **आँखों पर बिठाना** (सम्मान करना) - जब श्री रामचन्द्र जी 14 सालों का वनवास काटकर अयोध्या वापिस आये तो लोगों ने उन्हें आँखों पर बिठा लिया।
9. **आँख खुलना** (होश आना) - जब धीरे-धीरे रिश्तेदारों ने रमेश की सारी संपत्ति हथिया ली तब कहीं जाकर उसकी आँखें खुलीं।
10. **आँसू पीकर रह जाना** (घोर मुसीबत पड़ने पर भी शाँत रहना/आँखों में आँसू न आने देना) - भाई की घोर गरीबी को देखकर बहन आँसू पीकर रह गयी।
11. **आग-बबूला होना** (बहुत गुस्सा होना) - परशुराम शिव धनुष को टूटा हुआ देखकर आग-बबूला हो उठे।
12. **आग में पानी डालना** (क्रोध को शांत करना/झगड़ा मिटाना) तुमने महेन्द्र और नरेश की लड़ाई में बीच-बचाव करके आग में पानी डालने का काम किया है।
13. **आसमान टूट पड़ना** (भारी मुसीबत आना) - भयंकर बाढ़ में उसका घर बह गया मानो उस पर आसमान टूट पड़ा हो।

14. **आसमान सिर पर उठाना** (शोर करना) – अध्यापक जब कक्षा में नहीं थे तो बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
15. **ईमान बेचना** (बेईमानी करना) – हमें किसी भी कीमत पर अपना ईमान नहीं बेचना चाहिए।
16. **ईद का चाँद होना** (बहुत कम या बहुत समय बाद दिखाई देना) अरे भाई! तुम तो ईद का चाँद हो गये हो।
17. **कलेजा ठंडा होना** (संतोष हो जाना) – जब बेटे के हत्यारों को फाँसी की सज़ा सुनाई गयी तब माँ का कलेजा ठंडा हो गया।
18. **कलेजे पर साँप लोटना** (ईर्ष्या से जलना) – जब जगदीश सिंह दसवीं कक्षा में पूरे राज्य में प्रथम आया तो संदीप के कलेजे पर साँप लोटने लगा।
19. **कान का कच्चा** (सुनते ही किसी बात पर विश्वास करना) – अधिकारी को कान का कच्चा नहीं होना चाहिए।
20. **कान पर जूँ तक न रेंगना** (कुछ असर न होना) – मैंने अपने छोटे भाई को बहुत समझाया, किन्तु उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।
21. **खटाई में पड़ना** (अनिश्चय/अनिर्णय की स्थिति में) – इतने लम्बे समय से मेरी तरक्की का मामला खटाई में पड़ा हुआ है।
22. **ख्याली पुलाव बनाना** (कल्पना करते रहना) – बेटा! पढ़ते-लिखते तो हो नहीं, केवल ख्याली पुलाव बनाने से ही कक्षा में अव्वल नहीं आ सकोगे।
23. **गिरिगट की तरह रंग बदलना** (सिद्धांतहीन व्यक्ति) – मुझे गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले बिल्कुल पसंद नहीं है।
24. **गुड़ गोबर होना** (बना काम बिगड़ना) – आज भारत और इंग्लैंड के बीच क्रिकेट का फाइनल मैच था किंतु मूसलाधार बारिश ने सब गुड़ गोबर कर दिया।
25. **घड़ों पानी पड़ना** (शर्मिंदा होना) – चोरी के जुर्म में जब पुलिस पुत्र को पकड़कर ले जा रही थी तो उसके पिता पर घड़ों पानी पड़ गया।
26. **चादर देखकर पैर पसारना** (आमदनी के अनुसार खर्च करना) – मेरा बेटा बहुत सुखी है क्योंकि वह हमेशा चादर देखकर पैर पसारता है।
27. **चेहरे से हवाइयाँ उड़ना** (बुरी तरह से घबरा जाना) – जब उसकी चोरी पकड़ी गयी तो उसके चेहरे से हवाइयाँ उड़ने लगीं।

28. **छिपा रुस्तम** (साधारण दिखने वाला गुणी व्यक्ति) – हम तो उसे कमज़ोर समझते थे किंतु वह तो छिपा रुस्तम निकला जो 800 मीटर की दौड़ में सोने का तमगा जीत आया।
29. **छोटा मुँह बड़ी बात** (बढ़-चढ़कर बातें करना) – क्यों छोटे मुँह बड़ी बात करते हो? तुम्हें उस जैसे सज्जन पुरुष के बारे में ऐसी अनुचित बातें नहीं करनी चाहिएं।
30. **ज़मीन आसमान एक करना** (कोशिश करने में कोई भी कसर न छोड़ना) – रमिंदर सिंह ने यह दौड़ जीतने के लिए ज़मीन आसमान एक कर दिया था।
31. **जान पर खेलना** (जोखिम उठाना) – सीमा पर भारतीय सैनिक जान पर खेलकर हमारी सुरक्षा करते हैं।
32. **झख मारना** (बेकार समय खराब करना) – तुम यहाँ बैठे झख ही मारते रहोगे या कोई काम भी करोगे।
33. **टेढ़ी उँगली से घी निकालना** (बलपूर्वक काम करना) – अपने वायदे के अनुसार तुम मेरी रकम लौटा दो, नहीं तो मुझे टेढ़ी ऊँगली से घी निकालना आता है।
34. **ठगा-सा रह जाना** (हैरान होना) – कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता को देखकर मैं ठगा-सा रह गया।
35. **डूबती नैया पार लगाना** (मुसीबत से निकालना) – गणित विषय में मुझे मेरे अध्यापक ने अतिरिक्त समय में पढ़ाकर मेरी डूबती नैया पार लगा दी।
36. **ढोल की पोल** (बाहरी दिखावा) – उसकी बहादुरी तो ढोल की पोल है, देखना, एक दिन खुल ही जाएगी।
37. **तलवे चाटने** (खुशामद करना) – आखिर बाबू गोपाल प्रसाद ने अपने अफ़सर के तलवे चाटकर तरक्की पा ही ली।
38. **ताँता बँधना** (लगातार होना) – नौकरी पानी के लिये बेरोज़गारों का ताँता बँधा हुआ है।
39. **थाली का बैंगन** (अस्थिर विचारों वाला / सिद्धांतहीन व्यक्ति) – जो व्यक्ति थाली के बैंगन होते हैं, वे किसी के सच्चे मित्र नहीं होते।
40. **दाँत काटी रोटी** (घनिष्ठ मित्रता) – जय और वीरू में दाँत काटी रोटी है।
41. **दालभात में मूसलचंद** (दो लोगों के बीच दखल देना) – मैं और विकास

बातचीत करके मतभेद दूर कर लेंगे पर कृपा करके तुम दालभात में मूसलचंद न बनो।

42. **धज्जियाँ उड़ाना** (नष्ट-भ्रष्ट करना) - यदि कोई भी देश हमारी शांति भंग करेगा तो हम उसकी धज्जियाँ उड़ा देंगे।
43. **धुन का पक्का** (पक्के इरादे वाला) - अनिल अवश्य अपने काम में सफल हो जाएगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह धुन का पक्का है।
44. **नाक-भौ चढ़ना** (नखरे करना) - घर में तो तुम हर सब्ज़ी को देखकर नाक-भौं चढ़ाते हो पर अब देखूँगी, हॉस्टल में सब कुछ कैसे नहीं खाओगे।
45. **नाक कटना** (प्रतिष्ठा नष्ट होना) - बेटा, ऐसा काम मत करना जिससे मेरी नाक कट जाए।
46. **पत्थर पर लकीर** (पक्की बात) - लाला खेमराज ने जो कह दिया, उसे पत्थर पर लकीर समझना।
47. **फूँक-फूँक कर कदम रखना** (बहुत सोच-समझ कर काम करना) - भैया, तुमने अपना नया-नया कारोबार खोला है इसलिए तुम्हें फूँक-फूँककर कदम रखना चाहिए।
48. **फूला न समाना** (बहुत खुश होना) - कबड्डी का मैच जीतकर हमारे स्कूल की टीम फूली नहीं समा रही थी।
49. **बात का धनी** (वायदे का पक्का) - यदि भूपेंद्रपाल ने तुम्हें कह दिया है कि वह तुम्हारी मदद करेगा तो उसकी बात का यकीन करो क्योंकि वह बात का धनी है।
50. **बीड़ा उठाना** (संकल्प करना) - जब सभी मुख्य बल्लेबाज़ आउट हो गए तो कप्तान ने मैच को जीतने का बीड़ा उठाया।
51. **भरी थाली में लात मारना** (लगी लगाई रोज़ी छोड़ना) - अरे! जब तक और अच्छी नौकरी नहीं मिलती तब तक इसी नौकरी को करते रहो। भला कोई भरी थाल में लात मारता है!
52. **मिज़ाज ठीक करना** (अकड़ दूर करना) - अगर तुम्हारे पिता जी का लिहाज़ न होता तो मैं दो मिनट में तुम्हारे मिज़ाज ठीक कर देता।
53. **रुपया उड़ाना** (बेकार में धन खर्च करना) - यदि तुम्हें नहीं पढ़ना तो क्यों अपने माता-पिता के रुपये उड़ा रहे हो।

54. **लोहे के चने चबाना** (बहुत कठिनाई से सामना करना) – पाक सेना को भारतीय सेना के साथ टक्कर लेते समय लोहे के चने चबाने पड़े।
55. **वीरगति को प्राप्त होना** (मर जाना) – भारत को अंग्रेज़ों से स्वतंत्रता दिलाने में अनेक देशभक्त वीरगति को प्राप्त हुए।
56. **शेखी बघारना** (अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना) – इस तरह शेखी बघारना अच्छी बात नहीं।
57. **शैतान के कान कतरना** (बहुत चालाक होना) – शीशपाल तो शैतान के भी कान कतरने वाला है, बेचारे कुलवीर की उसके सामने बिसात ही क्या है ?
58. **सिर-धड़ की बाज़ी लगाना** (प्राणों की भी परवाह न करना) – भारतीय सैनिक देश की रक्षा के लिए सदैव सिर-धड़ की बाज़ी लगा देते हैं।
59. **हाथ धोकर पीछे पड़ना** (काम करने की धुन लगना) – लोकेश जिस काम के पीछे हाथ धोकर पड़ जाता है उसे वह पूरा करके ही दम लेता है।
60. **हाथ को हाथ न सूझना** (कुछ दिखाई न देना) यहाँ इतना अँधेरा है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता।

नीचे दिये गये मुहावरों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए

1. **अँगूठा दिखाना** (देने से साफ इन्कार कर देना)
2. **आड़े हाथों लेना** (अच्छी तरह काबू करना)
3. **ईमान बेचना** (बेईमानी करना)
4. **उड़ती चिड़िया पहचानना** (रहस्य की बात तत्काल जानना)
5. **ओखली में सिर देना** (जान बूझकर मुसीबत में फँसना)
6. **काया पलट होना** (बिल्कुल बदल जाना)
7. **कलई खुलना** (रहस्य प्रकट हो जाना)
8. **गले मढ़ना** (जबरदस्ती किसी को कोई काम सौंपना)
9. **घास खोदना** (फ़जूल समय बिताना)
10. **टका-सा जवाब देना** (कोरा उत्तर देना)
11. **दाँत खट्टे करना** (बुरी तरह हराना)
12. **दाल में काला होना** (गड़बड़ होना)
13. **नाव पार लगाना** (कोशिश सफल करना)

14. **पेट पर लात मारना** (रोज़गार से वंचित करना/रोज़ी-रोटी छीन लेना)
15. **फलना-फूलना** (सुखी और संपन्न होना)
16. **बाज़ी मारना** (सफल होना)
17. **भेड़ की खाल में भेड़िया** (देखने में सरल तथा भोला-भाला किंतु असल में खतरनाक)
18. **माथा ठनकना** (संदेह होना)
19. **रुपया ठीकरी कर देना** (बेकार में रुपये खर्च करना)
20. **हाथों के तोते उड़ना** (दुख से हैरान होना)

कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ

1. **अंत भले का भला** (भला करने वाले का भला होता है) : सबके सुख-दुःख में काम आने वाले देवेन्द्र सिंह को जब अचानक चार लाख रुपये की आवश्यकता पड़ी तो उसके दफ़्तर के सह-कर्मचारियों ने मिलकर चार लाख रुपये का प्रबंध कर दिया। सच है, अंत भले का भला।
2. **अधजल गगरी छलकत जाए** (कम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत करता है) : गोपाल बातें तो ऐसी करता है जैसे वह अंग्रेज़ी में बहुत माहिर है पर वास्तव में जब वह अंग्रेज़ी बोलता है तो अनेक गलतियाँ करता है। सच है, अधजल गगरी छलकत जाए।
3. **अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत** (समय निकल जाने पर पछताने से क्या लाभ) : सारा साल तुम पढ़े नहीं और फेल हो गए। अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।
4. **आँखों देखी मक्खी नहीं निगलते** (जान बूझकर कोई बुरा या हानिकारक काम नहीं करते) जब पता चल ही गया है कि तुम्हारा लड़का नशेड़ी है, तो अब यह शादी नहीं होगी क्योंकि आँखों देखी मक्खी नहीं निगलते।
5. **आँवले का खाया और बड़े का कहा बाद में सीख देता है** (आँवाला खाने में कसैला और बड़ों की शिक्षा सुनने में कड़वी ज़रूर लगती है पर दोनों का फायदा भविष्य में पता चलता है) अभी तो तुम्हें अपने माता-पिता की बातें कड़वी लगती हैं किन्तु भविष्य में जाकर इनकी बातों की कीमत पता चलेगी, क्योंकि आँवले का खाया और बड़े का कहा बाद में सीख देता है।

6. **आम के आम गुठलियों के दाम (दुगुना लाभ)** : सतिंद्र सिंह नौकरी के लिए इंटरव्यू देने आगरा गया था और साथ ही ताजमहल भी देख आया। इसे कहते हैं - आम के आम गुठलियों के दाम।
7. **आग लगने पर कुआँ खोदना** (मुसीबत पड़ने पर ही प्रयत्नशील होना): सारा साल आवारागर्दी करते रहे अब परीक्षा सिर पर आ गई तो पढ़ना शुरु कर दिया। किसी ने सच ही कहा है आग लगने पर कुआँ खोदना।
8. **ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया** (सभी एक समान नहीं होते) शीला का बड़ा बेटा तो दसवीं की परीक्षा में पूरे ज़िले में प्रथम आया है किंतु छोटा बेटा आठवीं में फेल हो गया। सच है ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।
9. **ऊँची दुकान फीका पकवान** (केवल ऊपरी दिखावा करना) : शहर के बीचों बीच एक दुकान बहुत बड़ी थी और उसके बाहर लिखा था - ''यहाँ बढ़िया कपड़े मिलते हैं''। पर सारी दुकान देख ली और देखा कि सारा घटिया दर्जे का माल था। सच है , ऊँची दुकान फीका पकवान।
10. **एक हाथ से ताली नहीं बजती** (अकेला व्यक्ति झगड़े का कारण नहीं होता) देखो, तुमने भी कुछ ज़रूर कहा होगा तभी तो रामपाल ने तुमसे झगड़ा किया है- एक हाथ से ताली नहीं बजती।
11. **एक बार भूले सो भूला कहाये, बार-बार भूले सो मूर्खानंद कहाये** (एक बार गलती पर सावधान हो जाना चाहिए किंतु फिर वही गलती करना मूर्खता कहलाती है) देखो बेटा! बार-बार तुम गणित के पेपर में वहीं गलतियाँ करते हो, यह कोई अच्छी बात नहीं, तुम्हें समझना होगा कि एक बार भूले सो भूला कहाये, बार-बार भूले सो मूर्खानंद कहाये।
12. **कमली ओढ़ने से फकीर नहीं होता** (ऊपरी दिखावा या ढोंग व्यर्थ है, उससे वास्तविकता नहीं आती) अतुल ऊपर-ऊपर से मीठा बोलता है किंत मोहल्ले में सबसे मेरी चुगलियाँ करता है- सच है, कमली ओढ़ने से फकीर नहीं होता।
13. **करे कोई भरे कोई** (अपराध की सज़ा दूसरे को मिलना) दुकान में चोरी तो प्रीतम ने की किंतु सज़ा महेश को भुगतनी पड़ी, करे कोई भरे कोई।
14. **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** (अपमान का बदला दूसरों से लेना) : भैया को पिता जी ने डाँटा था, अब वह अपना गुस्सा मुझ पर निकालने लगा। किसी ने ठीक ही कहा है- खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

15. **घर की मुर्गी दाल बराबर** (सरलता से उपलब्ध का आदर नहीं होता) : अमन के पास दूर-दूर से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं पर घर में उसका अपना बेटा गगनदीप उससे पढ़ता नहीं, सच ही है-घर की मुर्गी दाल बराबर।
16. **जान है तो जहान है** (जीवित रहने पर ही संसार है) : इतने ज्यादा बीमार हो, पहले तंदरुस्त हो जाओ फिर अपने कारोबार को भी देख लेना, भई यह जान लो कि जान है तो जहान है।
17. **जैसी करनी वैसी भरनी** (जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है) : रिश्वत लेने वाले मंगतराम को आज सी.बी.आई. ने रँगे हाथ पकड़ लिया। सच है, जैसी करनी वैसी भरनी।
18. **जाये की पीर माँ को होती है** (जो जिस वस्तु को पैदा करता है, उसके नुकसान पर उसे जितना दु:ख होता है, उतना किसी दूसरे को नहीं) : मैंने विज्ञान प्रदर्शनी के लिए मॉडल बनाया था किंत उसे लेकर जाते समय एक दम बारिश आई और वह खराब हो गया और तुम कहते हो कि चिंता न करो, तुम्हें नहीं पता कि जाये की पीर माँ को होती है।
19. **जिसके घर में माई उसकी राम बनाई** (जिसकी माँ जीवित है उसे किसी बात की दु:ख/चिंता नहीं) जब से मोहसिन की माँ का देहाँत हआ तब से सभी रिश्तेदारों ने भी उससे किनारा कर लिया, सच ही है जिसके घर में माई उसकी राम बनाई।
20. **न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी** (कारण के नष्ट होने पर कार्य न होना) : तुम सारा दिन सी.डी. लगाकर वीडियो गेम्स खेलते रहते हो, आज मैं इसे तुम्हारे दोस्त को वापिस कर आती हूँ। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।
21. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** (काम करना नहीं आना और बहाने बनाना) : चार्वी के जन्म दिन की पार्टी में सभी ने नेहा को कहा कि कोई गाना सुनाइए, तो वह बोली, 'आज मेरा गला खराब है'। फिर मेधावी के जन्म दिन पर उसे कहा तो कहने लगी कि मुझे गाना याद नहीं है। सच है, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
22. **पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती** (सब एक जैसे नहीं होते) : कुछ भ्रष्ट लोगों के कारण सभी को भ्रष्ट कहना ठीक नहीं है, क्योंकि पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं।

23. **बगल में छुरी मुँह में राम-राम** (भीतर से शत्रुता और ऊपर सी मीठी बातें): मोहनलाल वैसे तो बड़े अदब से बात करता है किंतु सारा दिन अफसर से मेरी चुगलियाँ करता रहता है। सच में, मोहनलाल पर बगल में छुरी मुँह में राम-राम वाली कहावत लागू होती है।
24. **बार-बार चोर की, एक बार शाह की** (कभी न कभी चालाकी पकड़ी ही जाती है) : कुलविंद्र सिंह की दुकान से हर रोज़ कोई न कोई चीज़ चोरी हो जाती पर चोर का पता ही न चलता था पर एक दिन कुलविंद्र सिंह ने महीना पहले ही रखे नये नौकर को रँगे हाथ पकड़ लिया- सच है, बार-बार चोर की, एक बार शाह की।
25. **बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख** (माँगे बिना अच्छी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है, माँगने पर साधारण भी नहीं मिलती) : बैंक कर्मचारियों ने अपनी माँगों के लिए कलमबद्ध हड़ताल कर दी, पर उन्हें क्या मिला ? इनसे तो बिजली कर्मचारी अच्छे रहे, उनका वेतन बढ़ा दिया गया। किसी ने सच ही कहा है कि बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।
26. **मन न मिले तो मिलना कैसा, मन मिला तो तजना कैसा** (जिससे मन न मिले उससे मिलने का क्या लाभ? और जिससे मन मिल जाए उसे छोड़ना क्यों): सुमित को मैं दो साल से जानता हूँ पर वह मेरा मित्र नहीं बन पाया और सुशील को इस स्कूल में आए दस दिन भी नहीं हुए और वह मेरा मित्र बन गया है, सच है, मन न मिले तो मिलना कैसा, मन मिला तो तजना कैसा।
27. **मान न मान मैं तेरा मेहमान** (ज़बरदस्ती किसी का मेहमान बनना) : सुरेश मुझे थोड़ा बहुत ही जानता था। एक दिन सुरेश शिमला घूमने आया तो मेरे घर सपरिवार आ गया और कहने लगा कि तीन-चार दिन अब तुम्हारे घर पर ही रहेंगे। मैंने मन ही मन कहा, अजब आदमी है, मान न मान मैं तेरा मेहमान।
28. **संभाल अपनी घोड़ी, मैंने नौकरी छोड़ी** (स्वाभिमानी व्यक्ति कभी किसी भी मूल्य पर अपना अपमान नहीं सहता) : सुनीता कल स्कूल नहीं आयी थी, इसलिए सुषमा की कॉपी से देखकर काम कर रही थी, अभी उसने काम पूरा भी नहीं किया था पर सुषमा बार-बार कॉपी देने की बात जता रही थी तो सुनीता ने बिना काम पूरा किए उसकी कॉपी वापिस करते हुए उससे कहा- संभाल अपनी घोड़ी, मैंने नौकरी छोड़ी।

29. **हाथों से नाखून कहाँ दूर हो सकते हैं** (जिनसे बहुत नज़दीकी रिश्ता हो उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता): अरे, बड़े भाई की बात का बुरा मानकर उससे बोलचाल बंद क्यों कर दी ? हाथों से नाखून कहाँ दूर हो सकते हैं।
30. **हाथी को गन्ने ही सूझते हैं** (स्वार्थी व्यक्ति को सदा अपने स्वार्थ सिद्ध करने से ही मतलब होता है) : मोहन तुम्हारा यह काम नहीं करेगा क्योंकि वह तो हर काम करने से पहले यह देखता है कि उसे इसमें लाभ होगा कि नहीं। सच है, हाथी को गन्ने ही सूझते हैं।

नीचे दी गई लोकोक्तियों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए

1. **अशर्फ़ियाँ लुटें और कोयलों पर मोहर** (एक ओर तो लापरवाही से खर्च किया जाए और दूसरी ओर पैसे-पैसे का हिसाब रखा जाए)
2. **आगे कुआँ पीछे खाई** (दोनों ओर संकट)
3. **उल्टे बाँस बरेली को** (विपरीत काम करना)
4. **एक और एक ग्यारह होते हैं** (एकता में बल है)
5. **एक अनार सौ बीमार** (वस्तु थोड़ी, माँग ज़्यादा)
6. **ओस चाटे प्यास नहीं बुझती** (कम वस्तु से तृप्ति नहीं होती)
7. **कंगाली में आटा गीला** (मुसीबत पर मुसीबत)
8. **कागज़ हो तो हर कोई बाँचे, भाग न बाँचा जाए** (कागज़ पर लिखा तो पढ़ा जा सकता है किंतु भाग्य नहीं)
9. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (बहुत मेहनत करने पर कम फल की प्राप्ति होना)
10. **गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास** (सिद्धांतहीन व्यक्ति)
11. **घमंडी का सिर नीचा** (अहंकारी को सदा मुँह की खानी पड़ती है)
12. **चोर के घर मोर** (चालाक का अधिक चालाक से सामना होना)
13. **जाको राखे साइयां मार सके न कोय** (जिसका परमात्मा रक्षक हो, उसे कोई नहीं मार सकता)
14. **डूबते को तिनके का सहारा** (मुसीबत में थोड़ी सी मदद भी मायने रखती है)
15. **दूर के ढोल सुहावने** (दूर से सब अच्छा लगता है)

16. **नीम हकीम खतरा जान** (अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है)
17. **प्यासा कुएँ के पास जाता है, कुआँ प्यासे के पास नहीं** (जिसे सहायता लेनी होती है, वह सहायता देने वाले के पास स्वयं जाता है)
18. **मन चंगा तो कठौती में गंगा** (मन पवित्र हो तो घर ही तीर्थ के समान)
19. **साँप मरे, लाठी न टूटे** (हानि भी न हो और काम भी बन जाए)
20. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** (महान व्यक्ति की महानता के लक्षण बचपन से ही दिखाई देने लग जाते हैं)

❖❖❖❖❖❖❖

हिंदी-व्याकरण और मानक रचना-विधि

(नौवीं श्रेणी के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड
साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2016......... 1,62,000 प्रतियाँ

All right including those of translation, reproduction
and annotation etc. are reserved by the
Punjab Government

लेखक एवं संपादक	:	डॉ. सुनील बहल
संशोधक	:	डॉ. नीरू कौड़ा
संयोजक	:	श्रीमती मनजीत कौर

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दसाज़ी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन, (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत ग़ैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मार्क' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 57.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित एवं मै. होलीफेथ इंटरनैशनल प्रा. लि. जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केन्द्रित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 तथा पंजाब पाठ्यचर्या की रूपरेखा (पी.सी.एफ.) 2013 सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी की माध्यमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण किया जा चुका है। इस सिलसिले में नौवीं कक्षा की हिंदी की पाठ्य-पुस्तक के साथ-साथ व्याकरण की भी नवीन पुस्तक तैयार की गयी है। एन.सी.एफ. 2005 तथा पी.सी.एफ. 2013 में नौवीं एवं दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों को व्याकरण का व्यावहारिक रूप से ज्ञान देने की बात कही गयी है। चूँकि विद्यार्थियों को पिछली कक्षाओं में पारिभाषिक व्याकरण का यथोचित ज्ञान दिया जा चुका है। इस दृष्टि को मध्यनज़र रखते हुए नौवीं श्रेणी में व्यावहारिक व्याकरण पर बल देते हुए नए पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। व्याकरण की यह पुस्तक पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप ही है।

हिंदीतर भाषियों को हिंदी के अध्ययन में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसीलिए इस पुस्तक में वर्ण, वर्तनी, लिंग, वचन, तत्सम-तद्भव, उपसर्ग-प्रत्यय जैसे शुष्क विषयों को अधिक सरल, रुचिकर एवं सुबोध रूप से प्रस्तुत किया गया है। ऐसा प्रयास किया गया है कि यह पुस्तक नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

विद्यार्थियों की मौलिक रचनात्मक व कल्पना शक्ति का विकास करने के लिए पुस्तक में अपठित गद्यांश, अनुच्छेद लेखन व पत्र लेखन का संकलन किया गया है। पंजाबी से हिंदी अनुवाद को भाषिक, साहित्यिक, व्यावसायिक व सांस्कृतिक दृष्टि से उपयोगी मानते हुए प्रस्तुत किया गया है। भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व रुचिकर बनाने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों की उपादेयता को ध्यान में रखकर उन्हें पुस्तक में शामिल किया गया है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक व्यावहारिक व्याकरण एवं रचना सम्बन्धी वाँछित ज्ञान देने में पूर्णतया सक्षम होगी। फिर भी पुस्तक को और उपयोगी बनाने के लिए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा साभार स्वीकार किए जाएंगे।

चेयरपर्सन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड